

शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री
(2017-2018)

कक्षा : बारहवीं

अर्थशास्त्र

मार्गदर्शनः

श्रीमती पुण्य सलिला श्रीवास्तव
सचिव (शिक्षा)

श्रीमती सौम्या गुप्ता
निदेशक (शिक्षा)

डॉ. सुनीता शुक्ला कौशिक
अतिरिक्त शिक्षा निदेशक (स्कूल एवं परीक्षा)

समन्वयकः

श्रीमती रजनी रावल
अधिकारी (परीक्षा)

श्रीमती शारदा तनेजा
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

डॉ. सतीश कुमार
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

उत्पादन मंडल

अनिल कुमार शर्मा

तकनीकी अधिकारी

दीपक तंवर

अधीक्षक

दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो में अनिल कौशल, सचिव, दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो, 25/2,
पंखा रोड, संस्थानीय क्षेत्र, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित तथा मैसर्स अरिहन्त ऑफसैट, नई दिल्ली
द्वारा मुद्रित।

Smt. Punya Salila Srivastava
IAS



सचिव (शिक्षा)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष : 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Secretary (Education)
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone : 23890187 Telefax : 23890119
e-mail : secyedu@nic.in

SUBJECTWISE SUPPORT MATERIAL

PREFACE

It is a matter of great pleasure for me to present the Support Material for various subjects prepared for the students of classes IX to XII by a team of dedicated and sincere teachers and subject experts from the Directorate of Education.

The subject wise Support Material is designed to enhance the academic performance of the students and improve their understanding of the subject. It is hoped that this comprehensive study material will be put to good use by both the students and the teachers in order to achieve academic excellence.

I commend the efforts of the team of respective subject teachers and their group leaders who worked sincerely and tirelessly under the able guidance of the officers of the Directorate of Education to complete this remarkable work in time.

Punya Salile
(Punya S. Srivastava)

Saumya Gupta, IAS



Director

Education & Sports, Govt. of NCT of Delhi
Old Secretariat, Delhi - 110054
Tel.: 23890172, Fax : 23890355
E-mail : diredu@nic.in
Website : www.edudel.nic.in

D.O. No. १५/८८/२०१७/३०४

Date : ३०/०८/२०१७

प्रिय विद्यार्थियों,

इस पुस्तक के माध्यम से आपके साथ सीधे संवाद का अवसर मिल रहा है। और अपने विद्यार्थियों के साथ जुड़ने के इस अवसर का मैं पूरा लाभ उठाना चाहती हूँ।

दिल्ली में आपके विद्यालय जैसे कोई १०३० राजकीय विद्यालय हैं, जिनका संचालन 'शिक्षा निदेशालय' करता है। शिक्षा निदेशालय वा मुख्यालय पुराना सविवालय (ओल्ड सेक्रेटरिएट), दिल्ली-५४ में स्थित है।

इस निदेशालय में सभी अधिकारी दिन रात कार्य करते हैं तांकि हमारे स्कूल और अच्छे बन सकें; हमारे शिक्षक आपको नए-नए व बेहतर तरीकों से पढ़ा सकें; परीक्षा में हमारे सभी विद्यार्थी और अच्छे अंक ला सकें तथा उनका भविष्य सुनिश्चित हो।

इसी क्रम में पिछले कुछ वर्षों से शिक्षा निदेशालय ने कक्षा नवीं से बारहवीं तक के अपने विद्यार्थियों के लिए विभिन्न विषयों में 'सहायक सामग्री' उपलब्ध करवाना प्रारंभ किया है।

प्यारे बच्चों, आपके हाथ में यह जो पुस्तक है, इसे कई उत्कृष्ट अध्यापकों ने मिलकर विशेष रूप से आप ही के लिए तैयार किया है। इसे तैयार करवाने में काफी मेहनत और धन खर्च हुआ है। इसलिए अपनी मुख्य पाठ्यपुस्तक के साथ-साथ यदि आप इस सहायक सामग्री का भी अच्छे से अभ्यास करेंगे तो परीक्षा में आपकी सफलता तो सुनिश्चित होगी ही, आपको बाजार में बिकने वाली महंगी सहायक पुस्तकें भी खरीदने की जरूरत नहीं पड़ेंगी। और हाँ, इस पुस्तक को हर साल हम CBSE के पाठ्यक्रम के अनुसार सर्वार्थीत और परिमार्जित भी करते हैं ताकि छात्र छात्राओं की परीक्षा-तैयारी अद्यतन रहे।

अंताः, एक बात और। अपने विद्यार्थी काल के जिस पड़ाव से आप आज गुजर रहे हैं, यह आपके शेष जीवन की नींव के निर्माण का समय है। मुझे आप पर पूरा विश्वास है कि आप इस समय का सदुपयोग करेंगे, खूब अध्ययन करेंगे तथा अपने एवं अपने देश के लिए एक सार्थक भविष्य की नींव डालेंगे।

मेरी द्वारा शुभकामनाएं।

सौम्या गुप्ता

आपकी
सौम्या गुप्ता

Dr. Sunita S. Kaushik
Addl. Director of Edn. (School)/Exam



Govt. of N. C. T. of Delhi
Directorate of Education
Old Secretariat, Delhi-54
Tel. : 23890283

D. O. No. १११/एड्यु. डि. [Sch] ३
Dated. १५/०९/२०१७

विषयवार सहायक सामग्री

प्रस्तावना

शिक्षा निदेशालय के अनुभवी एवं विषय शिक्षेज्ञ शिक्षकों द्वारा कक्षा 9वीं से 12वीं के छात्रों हेतु नवीनतम सहायक सामग्री को प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

गत वर्षों से विद्यार्थियों को उपलब्ध करायी जा रही सहायक सामग्री हमारे विद्यालयों के उन छात्रों के लिए वरदान सिद्ध हो रही है जो बाज़ार से गुणात्मक विषय सामग्री खरीदने में अक्षम हैं। निदेशालय द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली सामग्री ऐसे छात्रों को सार्वजनिक परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन करने का मौका प्रदान करती है। इस सहायक-सामग्री में निर्धारित शब्दों को स्पष्ट एवं व्यापक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

अध्यापकों से उम्मीद की जाती है कि वे विद्यार्थियों को इस सहायक-सामग्री का प्रयोग अभ्यास करायेंगे जिससे इन छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन में वृद्धि हो और साथ ही छात्रों से भी यह उम्मीद की जाती है कि वे इस सहायक सामग्री का अधिकतम उपयोग कर प्रत्येक विषय को ठीक ढंग से समझ सकें।

मैं, इस सहायक सामग्री को तैयार करने वाले सभी शिक्षकों का उनके बहुमूल्य योगदान के लिए अभार प्रकट करती हूँ।

सुनीता कौशिक

डॉ. सुनीता शुक्ला कौशिक
अतिरिक्त शिक्षा निदेशक (विद्यालय एवं परीक्षा)

शिक्षा निदेशालय
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री
(2017-2018)

अर्थशास्त्र
कक्षा : बारहवीं
(हिन्दी माध्यम)

निःशुल्क वितरण हेतु

दिल्ली पाठ्य-पुस्तक ब्यूरो द्वारा प्रकाशित

LIST OF MEMBERS WHO PREPARED SUPPORT MATERIAL FOR ECONOMICS

CLASS XII **GROUP LEADER**

Mr. Sanjeev Kumar
Vice Principal

SBV. Jafrabad, Delhi-32

Team Members

Mr. Ajay Kumar (EM)
Lect. (Eco)

RPVV, D-1, Nand Nagri,
Delhi-110093

Mr. Susheel Jain
Lect. (Eco)

GBSSS, Sabhapur, Delhi

Mr. Mandeep Kumar Dagar
Lect. (Eco)

RPVV B-1, Vasant Kunj,
New Delhi-110070

Mrs. Renu Verma
Lect. (Eco)

GGSSS B-1, Yamuna Vihar,
Delhi-110053

Mr. Serajuddin

Fatehpuri Muslim Sr. Sec. School
Delhi-110006

ECONOMICS

Class XII (2017-18)

Theory: 80 Marks

Project 20 Marks

Units		Marks	Periods
Part A	INTRODUCTORY MICROECONOMICS		
	Introduction	4	8
	Consumer's Equilibrium and Demand	13	32
	Producer Behaviour and Supply	13	32
	Forms of Market and Price Determination under Perfect competition with simple applications	10	28
		40	100
Part B	Introductory Macroeconomics		
	National Income and Related Aggregates	10	28
	Money and Banking	6	15
	Determination of Income and Employment	12	27
	Government Budget and the Economy	6	15
	Balance of Payments	6	15
		40	100
Part C	Project Work	20	20

Part A : INTRODUCTORY MICROECONOMICS**Unit 1 : Introduction 8 Periods**

Meaning of microeconomics and macroeconomics, Positive and Normative Economics.

What is an economy? Central Problems of an economy: what, how and for whom to produce; concepts of production possibility frontier and opportunity cost.

Unit 2 : Consumer's Equilibrium and Demand 32 Periods

Consumer's equilibrium - meaning of utility, marginal utility, law of diminishing marginal utility, conditions of consumer's equilibrium using marginal utility analysis.

Indifference curve analysis of consumer's equilibrium-the consumer's budget (budget set and budget line), preferences of the consumer (indifference curve, indifference map) and conditions of consumer's equilibrium.

Demand, market demand, determinants of demand, demand schedule, demand curve and its slope, movement along and shifts in the demand curve; price elasticity of demand - factors affecting price elasticity of demand; measurement of price elasticity of demand; (a) percentage-change method.

Unit 3 : Producer Behaviour and Supply 32 Periods

Meaning of production function - Short-Run and Long-Run

Total Product, Average Product and Marginal Product.

Returns to a Factor

Cost : Short run costs - total cost, total fixed cost, total variable cost; Average cost; Average fixed cost, average variable cost and marginal cost-meaning and their relationships.

Revenue - total, average and marginal revenue - meaning and their relationships.

Producer's equilibrium-meaning and its conditions in terms of marginal revenue-marginal cost. Supply, market supply,

determinants of supply, supply schedule, supply curve and its slope, movements along and shifts in supply curve, price elasticity of supply; measurement of price elasticity of supply (a) percentage-change method and (b) geometric method.

Unit 4 : Forms of Market and Price Determination under Perfect Competition with simple applications. 28 Periods

Perfect competition - Features; Determination of market equilibrium and effects of shifts in demand and supply.

Other Market Forms - monopoly, monopolistic competition, oligopoly - their meaning and features.

Simple Applications of Demand and Supply : Price ceiling, price floor.

Part B : Introductory Macroeconomics

Unit 5 : National Income and Related Aggregates 28 Periods

Some basic concepts : Consumption goods, capital goods, final goods, intermediate goods; stocks and flows; gross investment and depreciation.

Circular flow of income; Methods of calculating National Income - Value Added or Product method, Expenditure method, Income method.

Aggregates related to National Income :

Gross National Product (GNP), Net National Product (NNP), Gross and Net Domestic Product (GDP and NDP) - at market price, at factor cost;

GDP and Welfare

Unit 6 : Money and Banking 15 Periods

Money - meaning and supply of money - currency held by the public and net demand deposits held by commercial banks.

money creation by the commercial banking system.

Central Bank and its functions (example of the Reserve Bank of India). Bank of issue, Govt. Bank, Banker's Bank, Control of Credit through Bank Rate, CRR, SLR, Repo, Rate and

Reverse Repo Rate, Open Market Operations, Margin requirement.

Unit 7 : Determination of Income and Employment 27 Periods

Aggregate demand and its components.

Propensity to consume and propensity to save (average and marginal).

Short-Run equilibrium output; investment multiplier and its mechanism.

Meaning of full employment and involuntary unemployment.

Problems of excess demand and deficient demand; measures to correct them - changes in government spending, taxes and money supply.

Unit 8 : Government Budget and the Economy 18 Periods

Government budget - meaning, objectives and components.

Classification of receipts - revenue receipts and capital receipts; classification of expenditure - revenue expenditure and capital expenditure.

Measures of government deficit - revenue deficit, fiscal deficit, primary deficit-their meaning.

Unit 9 : Balance of Payments 15 Periods

Balance of payments account - meaning and components; balance of payments deficit-meaning.

Foreign exchange rate - meaning of fixed and flexible rates and managed floating.

Determination of exchange rate in a free market.

SUGGESTED QUESTION PAPER DESIGN

Economics (Code No. 030)

**Class-XII (2017-18)
March 2018 (Examination)**

Marks : 80		Duration : 3 hrs.					
S.No.	Typology of Questions	Very Short Answer MCQ 1 Mark	Short Answer II 3 Marks	Short Answer I 4 Marks	Long Answer 6 Marks	Total Marks	% age
1.	Remembering (Knowledge Based Simple recall questions, to know specific facts, terms, concepts, principles, or theories; identify, define, or recite, information)	2	.	2	2	22	27%
2.	Understanding (Comprehension to be familiar with meaning and to understand conceptually, interpret, compare, contrast, explain, paraphrase, or interpret information)	2	1	2	1	19	24%
3.	Application (Use abstract information in concrete situation, to apply knowledge to new situations; Use given content to interpret a situation provide an example, or solve a problem)	2	1	1	1	15	19%
4.	High Order Thinking Skills (Analysis & Synthesis - Classify compare, contrast, or differentiate between different pieces of information; Organize and/or integrate unique pieces of information from a variety of sources)	1	1	1	1	14	17%
5.	Evaluation : Appraise, judge and/or justify the values or worth of a decision or outcome, or to predict outcomes based on values).	1	1	-	1	10	13%
Total		$8 \times 1 = 8$			$4 \times 3 = 12$	$6 \times 4 = 24$	$6 \times 6 = 36$
					$80(24)$	100%	

Note :There will be Internal Choice in questions of 3 marks, 4 marks and 6 marks in both sections (A and B). Total 3 internal choices in section A and total 3 internal choices in section B.

Guidelines for Project Work in Economics (Class XII)

- Students are supposed to pick any ONE of the two suggested projects.
- Teachers should help the students to select the topic after detailed discussions and deliberations. Teacher should play the role of a facilitator and should supervise and monitor the project work of the student. The teacher must periodically discuss and review the progress of the project.
- The teacher must play a vital role of a guide in the research work for the relevant data, material and information regarding the project work. Also, the students must be guided to quote the source (in the Bibliography/ References section) of the information to ensure authenticity.
- The teacher must ensure that the students actually learn the concepts related to the project as he/ she would be required to face questions related to the project in viva-voce stage of the final presentation of the project.
- The teacher may arrange a presentation in the classroom of each and every student so that students may learn from each others' project work.
- The teacher must ensure that the students learn various aspects of the concept related to the topic of the project work.
- The teacher must ensure that the students learn various aspects of the concept related to the topic of the project work.

1. Project (Option One) : What's Going Around Us

The purpose of this project is to

- Enable the student to understand the scope and repercussions of various Economic events and happenings taking place around the country and the world. (eg. The Dynamics of the Goods & Services Tax and likely impacts on the Indian Economy or the Economics behind the Demonetisation of 500 and 1000 Rupee Notes and the Short Run and Long Run impact on the Indian Economy or the impact of BREXIT from the European Union etc.)
- Provide an opportunity to the learner to develop economic reasoning and acquire analytical skills to observe and understand the economic events.
- Make students aware about the different economic developments taking place in the country and across the world.
- Develop the understanding that there can be more than one view on any economic issue and to develop the skill to argue logically with reasoning.
- Compare the efficacy of economic policies and their respective implementations in real world situations and analyse the impact of Economic Policies on the lives of common people.
- Provide an opportunity to the learner to explore various economic issues both from his/her day to day life and also issues which are of broader perspective.

Scope of the project: Student may work upon the following lines:

- Introduction
- Details of the topic
- Pros and Cons of the economic event/ happening
- Major criticism related to the topic (if any)
- Students' own views/perception/ opinion and teaming from the work
- Any other valid idea as per the perceived notion of the student who is actually working and presenting the project-work.

Mode of presentation and submission of the project: At the end of the stipulated term, each student will present the work in the project File (with viva voce) to the external examiner.

Marking Scheme: marks are suggested to be given as.

S. No	Heading	Marks Allotted
1.	Relevance of the topic	3
2.	Knowledge content/Research Work	6
3.	Presentation Technique	3
4.	Viva	8
	Total	20 marks

The external examiner should value the efforts of the students on the criteria suggested.

Suggestive List

1. Micro and small scale industries
2. Food supply channel in India
3. Contemporary employment situation in India
4. Disinvestment policy
5. Health expenditure (of any state)
6. Goods and Services Tax Act
7. Inclusive growth strategy
8. Human Development Index
9. self help groups
10. Any other topic.

II. Project (Option Two): Analyse any concept from the syllabus

The purpose of this project is to

- Develop interest of the students in the concepts of Economic theory and application of the concept to the real life situations.
- Provide opportunity to the learners to develop economic reasoning vis-à-vis to the given concept from the syllabus.
- Enable the students to understand abstract ideas, exercise the power of thinking and to develop his/her own perception.
- To develop the understanding that there can be more than one view on any economic issue and to develop the skill to argue logically with reasoning.
- Compare the efficacy of economic policies in real world situations.
- To expose the student to the rigour of the discipline of economics in a systematic way.
- Impact of Economic Theory/ Principles and concepts on the lives of common people

Scope of the project:

Following essentials are required to be fulfilled in the project.

Explanation of the concept:

- Meaning and Definition
- Application of the concept
- Diagrammatic Explanation (if any)

Numerical Explanation related to the concept etc. (if any)

Students' own views/ perception/ opinion and learning from the topic.

Mode of presentation and submission of the project:

At the end of the stipulated term, each student(s) will present their work in the project File (with viva voce) to the external examiner.

Marking Scheme:

Marks are suggested to be given as -

S.No	Heading	Marks Allotted
1.	Relevance of the topic	3
2.	Knowledge Content/ Research Work	6
3.	Presentation Technique	3
4.	Viva	8
	Total	20 Marks

The external examiner should value the efforts of the students on the criteria suggested.

Suggested List

- Price Determination
- Opportunity Cost
- Demand and its determinants
- Production - Returns to a Factor
- Monopoly
- Monopolistic Competition
- Money Multiplier
- Government Budget & its Components
- Exchange Rate systems
- Balance of payments
- Price Discrimination
- Production Possibility Curve
- supply and its determinants
- Cost function and Cost Curves
- Oligopoly
- Credit Creation
- Central Bank and its functions
- Budget deficit
- Foreign Exchange Markets
- Any other topic

विषय सूची

क्र.सं.	विवरण	पृ.सं.
1.	I-परिचय	11
2.	II-उपभोक्ता व्यवहार तथा माँग	22
3.	III-उत्पादक का व्यवहार और पूर्ति	45
4.	IV-बाजार के प्रमुख रूप तथा पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत निर्धारण	70
5.	V-राष्ट्रीय आय एवं सम्बद्ध समाहार	86
6.	VI-मुद्रा और बैंकिंग	121
7.	VII-आय और रोजगार का निर्धारण	129
8.	VIII-सरकारी बजट तथा अर्थव्यवस्था	154
9.	IX-भुगतान शेष	168
	मॉडल प्रश्न पत्र-1	190
	मॉडल प्रश्न पत्र-1	192
	अर्थशास्त्र की बोर्ड परीक्षा में विद्यार्थियों द्वारा की गई कुछ मुख्य त्रुटियाँ	197

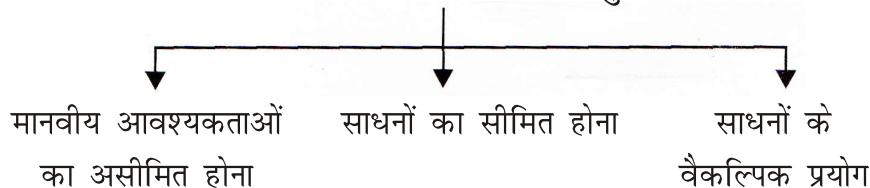
इकाई-1

परिचय

स्मरणीय बिन्दु

- व्यष्टि अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो व्यक्तिगत स्तर पर आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करती है।
उदाहरण: व्यक्तिगत माँग, एक फर्म का उत्पादन आदि।
- समष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था तथा उसके समुच्चयों का अध्ययन किया जाता है।
उदाहरण: समग्र माँग, राष्ट्रीय आय आदि।
- अर्थव्यवस्था वह प्रणाली है जो लोगों को जीविका अर्जित करने के साधन और जीविका प्रदान करती है।
- आर्थिक समस्या असीमित आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु वैकल्पिक उपयोग वाले सीमित संसाधनों के उपयोग के चयन की समस्या है।
- आर्थिक समस्या उत्पन्न होने के मुख्य कारण हैं-

आर्थिक समस्या उत्पन्न होने के मुख्य कारण



- एक अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएँ :
 - (1) क्या उत्पादन किया जाए? (वस्तुओं का चयन)
 - (2) कैसे उत्पादन किया जाए? (तकनीक का चयन)
 - (3) किसके लिए उत्पादन किया जाए? (वस्तुओं अथवा आय के वितरण की समस्या)

- एक अवसर का चयन करने पर दूसरे सर्वश्रेष्ठ अवसर का किया गया त्याग अवसर लागत कहलाता है। इसे सर्वश्रेष्ठ विकल्प की लागत भी कहा जाता है।
- उत्पादन संभावना सीमा (PPF) दो वस्तुओं के उन सभी संयोगों को दर्शाता है जिनका उत्पादन एक अर्थव्यवस्था अपने दिए हुए संसाधनों तथा तकनीकी स्तर का प्रयोग करके कर सकती है, यह मानते हुए कि सभी संसाधनों का पूर्ण एवं कुशलतम उपयोग हो रहा है।
- संसाधनों के मितव्ययी प्रयोग से अभिप्राय संसाधनों के सर्वश्रेष्ठ व कुशलतम प्रयोग से है।
- उत्पादन संभावना वक्र की मुख्य विशेषताएँ-
 - (अ) नीचे की ओर ढालू बायें से दायें होता है। इसका कारण यह है कि साधन सीमित होने के कारण यदि एक वस्तु का अधिक मात्रा में उत्पादन किया जाता है तो दूसरी वस्तु के उत्पादन की मात्रा में कमी करनी होती है।
 - (ब) मूल बिन्दु की ओर नतोदर होता है। इसका कारण बढ़ती हुई सीमांत अवसर लागत (MOC) है। अर्थात् एक वस्तु का उत्पादन बढ़ाने के लिए दूसरी वस्तु की इकाइयों का त्याग बढ़ती दर पर करना पड़ता है।
- उत्पादन संभावना वक्र का दायीं ओर खिसकाव संसाधनों में वृद्धि तथा तकनीकी प्रगति को दर्शाता है।
- उत्पादन संभावना वक्र का बायीं ओर खिसकाव संसाधनों में कमी तथा तकनीकी अवनति को दर्शाता है।
- उत्पादन संभावना वक्र उन सभी कारणों से दाईं ओर खिसकेगा जिनसे अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता व संसाधनों की मात्रा तथा कुशलता में सुधार होता है।

दाईं ओर खिसकाव के कारण	बाईं ओर खिसकाव के कारण	PPC में कोई परिवर्तन नहीं
1. संसाधनों में वृद्धि	1. संसाधनों में कमी	1. संसाधनों का स्थनांतरण
2. तकनीकी प्रगति	2. तकनीकी अवनति	2. बेरोजगारी उन्मूलन कार्यक्रम
3. कौशल भारत अभियान (प्रशिक्षण)	3. प्राकृतिक आपदा (बाढ़, भूकम्प सुनामी, सूखा आदि।	
4. सर्व शिक्षा अभियान (शिक्षा)	4. सामाजिक कुरीतियाँ	
5. स्वच्छ भारत अभियान (स्वास्थ्य)	5. प्रवास	
6. योगा प्रसार योजनाएँ (स्वास्थ्य)	6. युद्ध	

दार्दी ओर खिसकाव के कारण	बार्दी ओर खिसकाव के कारण	PPC में कोई परिवर्तन नहीं
7. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं (शिक्षा)	7. आतंकवाद	
8. भारत में बनाइए (निवेश)		
9. विदेशी पूँजी में वृद्धि (विदेशी निवेश)		

- सीमांत विस्थापन दर एक वस्तु की त्यागी जाने वाली इकाईयों तथा अन्य वस्तु की बढ़ाई गई एक अतिरिक्त इकाई का अनुपात है।

$$MRT = \frac{\Delta Y}{\Delta X}$$

सीमांत विस्थापन दर को सीमांत अवसर लागत भी कहते हैं क्योंकि वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई बढ़ाने के लिए दूसरी वस्तु की त्यागी गई इकाईयाँ ही अतिरिक्त लागत होती हैं।

- जब MOC बढ़ती है तो PPF मूल बिन्दु के नतोदर होता है। जब MOC घटती है तो PPF मूल बिन्दु के उन्नतोदर होता है। जब MOC स्थिर होती है तो PPF ऋणात्मक ढाल वाली एक सरल रेखा होती है।
- **सकारात्मक (वास्तविक) आर्थिक विश्लेषण :** इसके अन्तर्गत यथार्थ (वास्तविकता) का अध्ययन किया जाता है। इसमें क्या था? क्या है? जैसे वास्तविक कथनों का विश्लेषण सत्यता के आधार पर किया जाता है। उदाहरण के लिए भारत की जनसंख्या 1951 में कितनी थी? वर्तमान में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की संख्या कितनी है। इन कथनों की जाँच संभव होती है।
- **आदर्शात्मक आर्थिक विश्लेषण :** इसमें 'क्या होना चाहिए' से सम्बन्धित विश्लेषण किया जाता है। इसमें आदर्शात्मक परिस्थितियों का अध्ययन किया जाता है। इसकी प्रकृति सुझाव देने की है। उदाहरण के लिए भारत में आय व धन की असमानताओं को कम करने के लिए सरकार को अमीर लोगों पर अधिक कर लगाने चाहिए, गरीबों को आर्थिक सहायता देनी चाहिए। इन कथनों की जाँच संभव नहीं होती।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्न में से कौन सा व्यष्टि अर्थशास्त्र में अध्ययन किया जाता है।
 - (a) मुद्रा पूर्ति
 - (b) समग्र माँग
 - (c) एक वस्तु की बाजार माँग
 - (d) राष्ट्रीय आय।
2. निम्न में से कौन-सा विषय समष्टि अर्थशास्त्र में अध्ययन नहीं किया जाता—
 - (a) रोजगार स्तर
 - (b) समग्र पूर्ति
 - (c) राष्ट्रीय आय
 - (d) बाजार कीमत का निर्धारण
3. आर्थिक समस्या निम्न कारण से उत्पन्न होती है—
 - (a) एक राष्ट्र की उच्च जनसंख्या
 - (b) क्रेताओं के बीच प्रतियोगिता
 - (c) संसाधनों के वैकल्पिक उपयोग
 - (d) उत्पादक अधिकतम लाभ चाहता है।
4. निम्न में से कौन सी अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्या है?
 - (a) अल्प माँग
 - (b) एक अर्थव्यवस्था का संतुलन
 - (c) किसके लिए उत्पादन किया जाए
 - (d) साधन के घटते प्रतिफल
5. उत्पादन संभावना वक्र (PPF) के बाहर का कोई बिन्दू दर्शाता है:
 - (a) संसाधनों का निम्न उपयोग
 - (b) उत्पादन का अप्राप्य संयोग
 - (c) संसाधनों का कुशलतम उपयोग
 - (d) संसाधनों में कमी
6. किस स्थिति में उत्पादन संभावना वक्र (PPF) दाईं ओर खिसकता है—
 - (a) विदेशी पूँजी निवेश में वृद्धि
 - (b) संसाधनों में कमी
 - (c) संसाधनों का पूर्ण कुशलतम उपयोग
 - (d) रोजगार में वृद्धि।
7. उत्पादन संभावना वक्र एक सीधी रेखा हो सकता है, जब—

- (a) नहीं यह सीधी रेखा नहीं हो सकता है।
(b) दोनों वस्तुओं का अधिक उत्पादन किया जा सकता है।
(c) सभी संसाधन दोनों वस्तुओं के उत्पादन में समान रूप से कुशल हो।
(d) सभी संसाधन दोनों वस्तुओं के उत्पादन में समान रूप से कुशल न हो।
8. निम्न में से कौन सी उत्पादन संभावना वक्र की मान्यता है—
(a) सभी संसाधनों का पूर्ण तथा कुशलम उपयोग होता है।
(b) तकनीक समान रहती है।
(c) संसाधन दो वस्तुओं के उत्पादन में समान रूप से कुशल नहीं है।
(d) उपरोक्त सभी।
9. निम्न में से कौन सा कथन अवसर लागत के लिए सत्य है—
(a) अवसर लागत सदैव चयन की गई कीमत से अधिक होती है।
(b) अवसर लागत सदैव चयन की गई कीमत से कम होती है।
(c) अवसर लागत की गणना सदैव मुद्रा में की जाती है।
(d) अवसर लागत चयन की गई कीमत से कम, ज्यादा या बराबर हो सकती है।
10. निम्न में से कौन सा आदर्शात्मक अर्थशास्त्र का विषय है—
(a) भारत की 25 प्रतिशत जनसंख्या निर्धनता रेखा से नीचे है।
(b) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में वृद्धि से भारत की GDP में वृद्धि हुई है।
(c) आय का समान वितरण भारत को निर्धनता मुक्त बना देगा।
(d) सरकार द्वारा कल्याणकारी योजनाओं पर उच्च व्यय, समग्र माँग को बढ़ाता है।

उत्तर— 1. (c); 2. (d); 3. (c); 4. (c); 5. (b); 6. (a); 7. (c); 8. (d); 9 (d); 10 (c)

लघु उत्तर वाले प्रश्न (3/4 अंक)

- व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र में अंतर लिखिए। उदाहरण भी दीजिए।
- आर्थिक समस्या क्यों उत्पन्न होती है? 'कैसे उत्पादन किया जाए' समस्या की व्याख्या कीजिए।
- 'क्या उत्पादन किया जाए' समस्या का वर्णन कीजिए।
- 'किसके लिए' उत्पादन किया जाए की समस्या को उदाहरण सहित समझाइए।
- अवसर लागत को उदाहरण की सहायता से परिभाषित कीजिए। यह सीमांत अवसर लागत से किस प्रकार भिन्न है?
- रूपांतरण की सीमांत दर क्या है? एक संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से समझाइए।
- उत्पादन संभावना सीमा नतोदर (अवतल) क्यों होती है? समझाइए।
- उत्पादन संभावना सीमा क्या है? इसकी मान्यताओं का उल्लेख कीजिए।
- उत्पादन संभावना सीमा की सहायता से निम्न स्थितियों को दर्शाइए-
 - संसाधनों का पूर्ण उपयोग
 - संसाधनों का विकास
 - संसाधनों का अल्प प्रयोग
- उदाहरण की सहायता से वास्तविक तथा आदर्शात्मक कथनों के बीच अंतर कीजिए।
- एक भूकंप में बहुत से लोग मारे गए, अनेक कारखाने भी ध्वस्त हो गए। इसका अर्थव्यवस्था के उत्पादन संभावना वक्र पर क्या प्रभाव होगा?
- निम्नलिखित से सीमांत अवसर लागत की गणना कीजिए। उत्पादन संभावना वक्र की आकृति कैसी होगी तथा क्यों?

संयोग	हरी मिर्च (इकाई)	चीनी (इकाई)
A	100	0

B	95	1
C	85	2
D	70	3
E	50	4
F	25	5

13. यह मानकर कि कोई भी संसाधन सभी वस्तुओं के उत्पादन में एक समान दक्ष नहीं होता, उस वक्र का नाम बताइए जो अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता को दिखाता है। कारण बताते हुए इसकी विशेषताएँ बताइए।
14. यदि एक अर्थव्यवस्था अपने उपलब्ध संसाधनों का कुशलता पूर्वक उपयोग नहीं कर पा रही है तो उत्पादन संभावना वक्र पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा। इस परिस्थिति में आप आर्थिक विकास के लिए क्या सुझाव देंगे?
15. सरकार द्वारा रोजगार के अवसरों का सृजन करने के लिए प्रारंभ की गई योजना मनरेगा का PPF पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
16. ‘मेक इन इंडिया’ कार्यक्रम विदेशी निवेशकों को भारत में निवेश के लिए आकर्षित करने का सरकारी प्रयास है, इसका भारत के उत्पादन संभावना सीमा पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

परीक्षा उपयोगी प्रश्न

अति लघु उत्तर वाले प्रश्न (1 अंक)

Q. 1. अर्थव्यवस्था को परिभाषित कीजिए।

Ans. ‘अर्थव्यवस्था वह प्रणाली है जो लोगों को जीविका अर्जित करने के साधन और जीविका प्रदान करती है।’

Q. 2. संसाधनों की दुर्लभता का क्या अर्थ है?

Ans. संसाधनों की दुर्लभता से अभिप्राय उस स्थिति से है जिसमें किसी संसाधन की पूर्ति, उसकी माँग की तुलना में कम होती हैं।

Q. 3. आर्थिक समस्या का अर्थ लिखिए।

Ans. आर्थिक समस्या असीमित आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु, वैकल्पिक उपयोग वाले दुर्लभ संसाधनों के उपयोग के चयन की समस्या है।

Q. 4. MRT (सीमांत रूपान्तरण की दर) को परिभाषित कीजिए।

Ans. MRT एक वस्तु Y की इकाईयों का वह अनुपात है जिसे दूसरी वस्तु X की एक अतिरिक्त इकाई के लिए उत्पादन के लिये त्याग किया जाता है।

$$MRT = \frac{\Delta Y}{\Delta X}$$

Q. 5. अवसर लागत को परिभाषित कीजिए।

Ans. एक अवसर का चयन करने पर दूसरे सर्वश्रेष्ठ अवसर का किया गया त्याग अवसर लागत कहलाता है।

Q. 6. सरकार ने विदेशी पूँजी को प्रस्तावित करना शुरू कर दिया है। PPC के संदर्भ में इसका आर्थिक मूल्य क्या है?

Ans. विदेशी पूँजी निवेश में वृद्धि से देश का उत्पादन बढ़ेगा और PPC दायीं ओर खिसक जाएगा।

Q. 7. ‘संसाधनों की मितव्यिता’ का क्या अर्थ है?

Ans. संसाधनों की मितव्यिता का अर्थ उपलब्ध संसाधनों के सर्वश्रेष्ठ व कुशलतम उपयोग से है।

(3-4 अंक वाले प्रश्न)

Q. 1. उत्पादन सम्भावना वक्र अवतल (नतोदर) क्यों होता है? समझाइए।

Ans. उत्पादन सम्भावना वक्र के नतोदर होने का अर्थ है कि जैसे-जैसे हम वक्र पर नीचे की ओर आते हैं, सीमांत रूपान्तरण दर बढ़ती जाती है।

सीमांत रूपान्तरण दर इस मान्यता के आधार पर बढ़ती है कि कोई भी संसाधन सभी वस्तुओं के उत्पादन में समान रूप से सक्षम नहीं होता। जैसे-जैसे संसाधनों का एक वस्तु के उत्पादन से अन्य वस्तु के उत्पादन में हस्तान्तरण किया जाता है तो कम क्षमता वाले संसाधनों का प्रयोग करना पड़ता है। इससे लागत

बढ़ती है और सीमान्त रूपान्तरण दर बढ़ती जाती है।

Q. 2. एक उत्पादन सम्भावना वक्र की विशेषताएँ बताइए।

Ans. उत्पादन सम्भावना वक्र की दो मुख्य विशेषताएँ :

1. उत्पादन सम्भावना सीमा का ढलान नीचे की ओर होता है-इसका कारण है कि उपलब्ध संसाधनों के उपयोग की स्थिति में दोनों वस्तुओं के उत्पादन को एक साथ नहीं बढ़ाया जा सकता है। एक वस्तु का उत्पादन तभी अधिक किया जा सकता है जब दूसरी वस्तु का उत्पादन कम किया जाए।
2. मूल बिन्दु की ओर नतोदर होता है- इसका कारण यह है कि जैसे-जैसे हम एक वस्तु का अधिक उत्पादन करते हैं, सीमान्त रूपान्तरण दर बढ़ती जाती है।

Q. 3. 'क्या उत्पादन करें' की समस्या की व्याख्या कीजिए।

Ans. एक अर्थव्यवस्था अपने दिए हुए संसाधनों से वस्तुओं और सेवाओं के विभिन्न सम्भव सम्मिश्रणों का उत्पादन कर सकती है। समस्या यह है कि अर्थव्यवस्था इन सम्मिश्रणों में से किस सम्मिश्रण का चयन करे। यह वस्तुओं व सेवाओं के चयन की समस्या है। यदि एक वस्तु का उत्पादन अधिक किया जाता है तो अन्य वस्तुओं के उत्पादन के लिए कम संसाधन बचेंगे। अतः अर्थव्यवस्था के समक्ष यह समस्या होती है कि किन-किन वस्तुओं का उत्पादन कितनी-कितनी मात्रा में किया जाए।

Q. 4. 'रूपान्तरण की सीमान्त दर' क्या है? एक उदाहरण की सहायता से समझाइए।

Ans. दो वस्तुएँ उत्पादित करने वाली अर्थव्यवस्था में एक वस्तु की अतिरिक्त इकाई उत्पादित करने के लिए दूसरी वस्तु की जितनी इकाईयों का त्याग करना पड़ता है उसे रूपान्तरण की सीमान्त दर कहते हैं। माना एक अर्थव्यवस्था केवल दो वस्तुओं x तथा y का उत्पादन करती है। जब संसाधनों का पूर्ण तथा कुशलतम प्रयोग किया जाता है, तो अर्थव्यवस्था में $1x + 10y$ उत्पादन होता है। यदि अर्थव्यवस्था $2x$ वस्तुओं का उत्पादन करना चाहती है तो y वस्तु का उत्पादन 2 इकाई कम करना पड़ता है। दूसरे शब्दों में x वस्तु की अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिए $2y$ इकाई का त्याग करना पड़ेगा। रूपान्तरण की सीमान्त

$$\text{दर } 2y : 1x \text{ होगी। MRT} = \frac{\Delta Y}{\Delta X}$$

Q. 5. ‘किस प्रकार उत्पादन किया जाए?’ की समस्या की व्याख्या कीजिए।

Ans. यह समस्या वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में प्रयुक्त तकनीक के चयन की समस्या है। सामान्यतः तकनीकों को श्रम प्रधान तकनीक (अधिक श्रम और कम पूँजी) और पूँजी प्रधान तकनीक (अधिक पूँजी और कम श्रम) में वर्गीकृत किया जाता है। श्रम प्रधान तकनीक में अधिक लोगों को रोज़गार उपलब्ध होता है, परन्तु उत्पादन पूँजी प्रधान तकनीक की तुलना में कम होता है। इसी प्रकार पूँजी प्रधान तकनीक में उत्पादन अपेक्षाकृत अधिक होता है, लेकिन रोज़गार का स्तर अपेक्षाकृत कम होता है। अतः देश के समक्ष यह समस्या है कि वह उत्पादन के लिए किस तकनीक का चयन करें।

उदाहरण के लिए कपड़े का उत्पादन श्रम प्रधान तकनीक से भी हो सकता है, पूँजी प्रधान तकनीक से भी।

Q. 6. सरकार ने उन श्रमिकों के लिए जो MNREGA के अंतर्गत कार्य कर रहे हैं, एक वर्ष के दौरान न्यूनतम रोज़गार को 100 से बढ़ाकर 150 दिन कर दिया है। यह अर्थव्यवस्था के वास्तविक तथा संभावित उत्पादन स्तर को कैसे प्रभावित करेगा?

Ans. रोज़गार में वृद्धि के कारण उत्पादन का वास्तविक स्तर बढ़ जाएगा। उत्पादन के संभावित स्तर में वृद्धि नहीं होगी। (या PPC में खिसकाव नहीं होगा) क्योंकि PPC इस मान्यता पर आधारित है कि विद्यमान संसाधनों का पूर्ण प्रयोग किया जाता है।

Q. 7. ‘किसके लिए उत्पादन किया जाए’ केन्द्रीय समस्या समझाइए।

Ans. इस समस्या का सम्बन्ध उस वर्ग के लोगों के चयन से है जो अंततः वस्तुओं का उपभोग करेंगे। दूसरे शब्दों में इस समस्या का अर्थ है कि उत्पादन किस वर्ग को ध्यान में रखकर किया जाए—अमीर लोगों के लिए उत्पादन किया जाए या गरीब लोगों के लिए। स्पष्टतः वस्तुओं का उत्पादन उन लोगों के लिए किया जाता है जिनके पास क्रयशक्ति होती है। इस समस्या का सम्बन्ध उत्पादन के साधनों (भूमि, पूँजी, श्रम, साहस) के बीच आय के वितरण से भी है, जो कि उत्पादन प्रक्रिया में योगदान देते हैं।

Q. 8. कारण बताते हुए निम्नलिखित तालिका पर आधारित उत्पादन सम्भावना के आकार पर टिप्पणी कीजिए :

वस्तु X (इकाई)	0	1	2	3	4
वस्तु Y (इकाई)	10	9	7	4	0

Ans.

वस्तु X (इकाई)	वस्तु Y (इकाई)	MRT
0	10	—
1	9	1Y : 1X
2	7	2Y : 1X
3	4	3Y : 1X
4	0	4Y : 1X

क्योंकि रूपान्तरण की सीमान्त दर (MRT) बढ़ रही है, उत्पादन सम्भावना वक्र PPC ऋणात्मक ढाल वाला होगा और मूल बिन्दु के नतोंदर होगा।

Q. 9. जम्मू और कश्मीर में आई बाढ़ का उसकी उत्पादन सम्भावना सीमा (वक्र) पर प्रभाव की व्याख्या कीजिए।

Ans. जम्मू और कश्मीर में आई बाढ़ से उसके संसाधनों को नुकसान होगा, उसमें कमी आएगी। परिणाम स्वरूप उसकी उत्पादन क्षमता में कमी होगी और उसका उत्पादन सम्भाना वक्र बायीं ओर खिसक जाएगा।

इकाई-II

उपभोक्ता का व्यवहार और माँग

स्मरणीय बिन्दु

- **उपभोक्ता :** वह आर्थिक एजेंट है जो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अंतिम वस्तुओं व सेवाओं का उपभोग करता है।
- **उपयोगिता:** किसी वस्तु का वह गुण, जो किसी मानवीय आवश्यकता को संतुष्ट करता है, उपयोगिता कहलाती है।
- **कुल उपयोगिता :** एक निश्चित समय में वस्तु की सभी इकाइयों का उपयोग करने पर प्राप्त संतुष्टि का योग कुल उपयोगिता कहलाता है।
- **सीमांत उपयोगिता :** वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उपभोग करने पर कुल उपयोगिता में होने वाली निवल वृद्धि को सीमांत उपयोगिता कहते हैं।
- **हासमान सीमांत उपयोगिता नियम :** किसी वस्तु की इकाइयों का उत्तरोत्तर उपभोग करने पर प्रत्येक अगली इकाई से प्राप्त होने वाली सीमांत उपयोगिता क्रमशः घटती चली जाती है।
- **उपभोक्ता बंडल :** उपभोक्ता बंडल दो वस्तुओं की मात्राओं का ऐसा संयोजन अथवा समूह है जिन्हें उपभोक्ता वस्तुओं की कीमत तथा अपनी दी हुई आय के आधार पर खरीद सकता है।
- **उपभोक्ता बजट :** उपभोक्ता का बजट उसकी वास्तविक आय या क्रय शक्ति को बताता है जिसके द्वारा वह दी हुई कीमत वाली वस्तुओं की निश्चित मात्रा खरीद सकता है।
- **बजट सेट :** यह उपभोक्ता के समस्त संयोजनों का या बंडलों का सेट है, जो वह अपनी मौद्रिक आय के अन्तर्गत प्रचलित कीमतों पर खरीद सकता है।
बजट सेट का समीकरण:- $M \geq P_x \cdot X + P_y \cdot Y$
- **बजट रेखा :** वह रेखा, जो दो वस्तुओं के उन विभिन्न संयोजनों को दर्शाती है जिसे उपभोक्ता अपनी समस्त आय का व्यय करके वस्तुओं की दी गई कीमत पर खरीद सकता है।

- बजट रेखा का समीकरण : $M = P_x \cdot X + P_y \cdot Y$
- सीमांत प्रतिस्थापन दर : वह दर जिस पर उपभोक्ता वस्तु x की अतिरिक्त इकाई प्राप्त करने के लिए वस्तु y की मात्रा त्यागने के लिए तैयार है।

$$\text{सीमान्त प्रतिस्थापन दर} = \frac{\Delta Y}{\Delta X} \text{ या } \frac{Y \text{ वस्तु की हानि}}{X \text{ वस्तु का लाभ}}$$

- अनधिमान वक्र : अनधिमान वक्र दो वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों को दर्शाता है, जो उपभोक्ता को समान स्तर की उपयोगिता अथवा संतुष्टि प्रदान करता है।
- अनधिमान मानचित्र : तटस्था वक्रों (अनधिमान वक्रों) के समूह को अनधिमान मानचित्र कहते हैं।
- अनधिमान वक्रों की विशेषताएँ :

 1. अनधिमान वक्र ऋणात्मक ढलान वाले होते हैं—क्योंकि एक वस्तु की इकाईयों की अधिक मात्रा का उपभोग बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि दूसरी वस्तु की इकाईयों का त्याग किया जाए ताकि संतुष्टि स्तर समान रहे।
 2. अनधिमान वक्र मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर होता है—क्योंकि सीमान्त प्रतिस्थापन की दर घटती हुई होती है अर्थात् उपभोक्ता एक वस्तु की अधिक मात्रा का उपभोग बढ़ाने के लिए दूसरी वस्तु की इकाईयों का त्याग घटती दर पर करने के लिए तैयार होता है।
 3. अनधिमान वक्र न तो कभी एक-दूसरे को छूते हैं और न ही काटते हैं—क्योंकि दो अनधिमान वक्र संतुष्टि के दो अलग-अलग स्तरों को प्रदर्शित करते हैं। यदि ये एक दूसरे को काटे तो कटाव बिन्दु पर संतुष्टि का स्तर समान होगा जो कि सम्भव नहीं है।
 4. ऊँचा अनधिमान वक्र संतुष्टि के ऊँचे स्तर को प्रकट करता है—यह एक दिष्ट अधिमान के कारण होता है। ऊचे तटस्थता वक्र दो वस्तुओं के उन बंडलों को दिखाता है जिस पर निम्न तटस्थता वक्र की तुलना में एक वस्तु की मात्रा अधिक है तथा दूसरी की कम नहीं है।

- एक दिष्ट अधिमान : उपभोक्ता या अधिमान एक दिष्ट है यदि उपभोक्ता दो बंडलों के मध्य उस बंडल को प्राथमिकता देता है, जिसमें दूसरे बंडल की

तुलना में कम से कम एक वस्तु की अधिक मात्रा होती है और दूसरे वस्तु की मात्रा कम नहीं होती है।

□ बजट रेखा में परिवर्तन :

- (1) बजट रेखा में समान्तर खिसकाव (दायें तथा बायें) उपभोक्ता की आय में परिवर्तन तथा वस्तु के मूल्य में परिवर्तन के कारण होता है।
- उपभोक्ता संतुलन : एक ऐसी स्थिति जहाँ उपभोक्ता अपनी आय को इस प्रकार व्यय करता है कि उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो।
- उपभोक्ता संतुलन की शर्तें :

1. उपयोगिता विश्लेषण (उपयोगिता की गणनावाचक अवधारणा) : इस अवधारणा के अनुसार, उपयोगिता की गणना 'यूटिलिस' में की जा सकती है। 'यूटिलिस' को उपयोगिता की इकाइयाँ कहते हैं।

शर्तें : (a) एक वस्तु की स्थिति में -

$$MUm = \frac{MUx}{Px} \left[\text{अगर } MUm = 1, \text{ तो } MUx = Px \right]$$

यहाँ MUm = मुद्रा की सीमांत उपयोगिता

MUx = वस्तु x की सीमांत उपयोगिता

Px = वस्तु x का मूल्य

$$(b) \text{ दो वस्तु की स्थिति में- (i) } \frac{MUx}{Px} = \frac{MUy}{Py} = MUm$$

वस्तु की सीमांत उपयोगिता निरंतर गिर रही हो।

2. तटस्थता वक्र विश्लेषण (उपयोगिता की क्रमवाचक अवधारणा) : इस अवधारणा के अनुसार उपयोगिता की गणना नहीं की जा सकती, परन्तु उसे क्रम के रूप में प्रदर्शित कर सकते हैं

शर्तें :

$$(i) MRS_{xy} = \frac{Px}{Py} \left[Px = \text{वस्तु } x \text{ का मूल्य} \right]$$

$$(ii) MRS \text{ गिरती हुई हो या तटस्थता वक्र मूल बिन्दु पर उन्नतोदर होना चाहिए।}$$

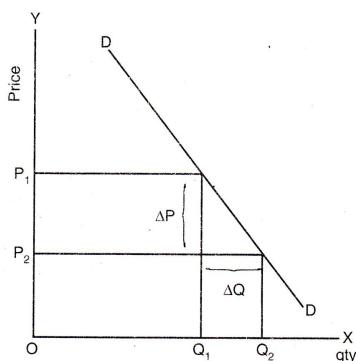
- माँग : वस्तु की वह मात्रा जिसे उपभोक्ता किसी निश्चित कीमत एवं निश्चित समय पर खरीदता है या खरीदने के लिए तैयार होता है।

- **बाजार माँग** : कीमत के एक निश्चित स्तर पर किसी बाजार में सभी उपभोक्ताओं द्वारा वस्तु की खरीदी गई मात्राओं का योग 'बाजार माँग' कहलाता है।
- **माँग फलन** : यह किसी वस्तु की माँग तथा उसे प्रभावित करने वाले कारकों के मध्य फलनात्मक सम्बन्ध को बताता है।

$$D = f(P_x, P_r, Y, T, E, N, Yd).$$

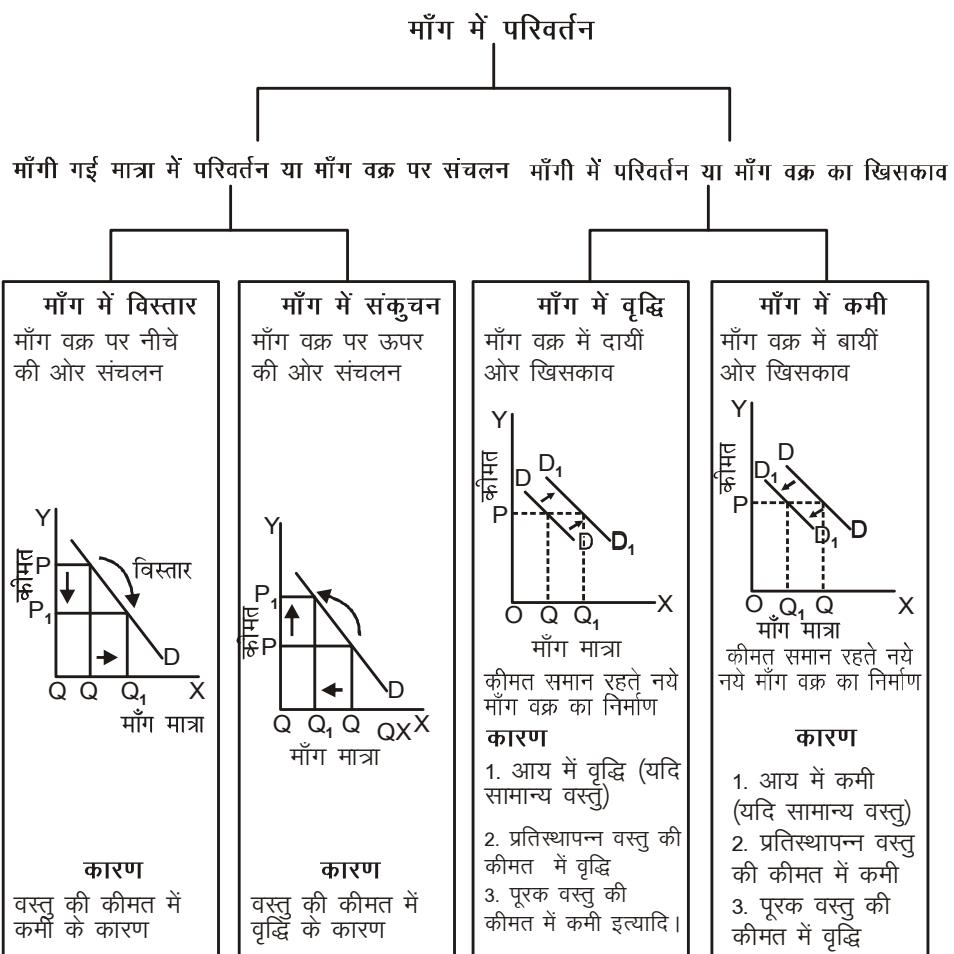
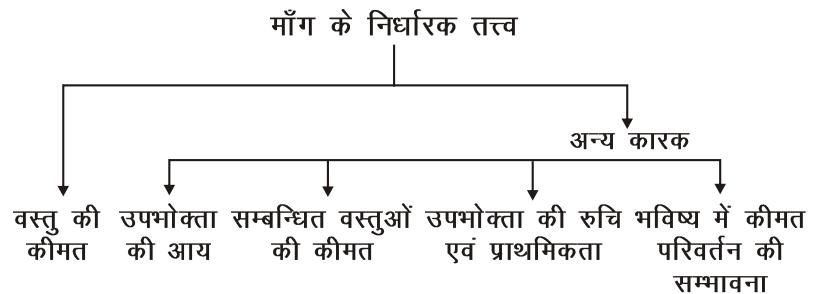
- **माँग का नियम** : यह बताता है कि यदि अन्य बातें समान हों तो किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होने से उसकी माँग मात्रा घटती है और उस वस्तु की कीमत में कमी होने से उसकी माँग मात्रा बढ़ती है अर्थात् कीमत तथा माँग मात्रा में ऋणात्मक संबंध होता है।
- **माँग अनुसूची** : माँग अनुसूची वह तालिका है जो विभिन्न कीमत स्तरों पर एक वस्तु की माँग मात्राओं की दर्शाता है।
- **माँग वक्र** : माँग तालिका (अनुसूची) का रेखाचित्रीय प्रस्तुतिकरण माँग वक्र कहलाता है। अर्थात् माँग वक्र कीमत के विभिन्न स्तरों पर माँग मात्राओं को दर्शाने वाला वक्र है। यह ऋणात्मक ढाल का होता है जो वस्तु की कीमत और उसकी माँग मात्रा में विपरीत सम्बन्ध को बताता है।
- **माँग वक्र एवं उसका ढाल** : माँग वक्र का ढाल

$$= \frac{\text{कीमत में परिवर्तन}}{\text{माँगी गई मात्रा में परिवर्तन}}$$



$$\text{माँग वक्र का ढाल} = \frac{\Delta P}{\Delta Q}$$

- **माँग में परिवर्तन** : कीमत के समान रहने पर किसी अन्य कारक में परिवर्तन होने से जब वस्तु की माँग घट या बढ़ जाती है।
- **माँग मात्रा में परिवर्तन** : वस्तु की अपनी कीमत में परिवर्तन के कारण वस्तु की माँग में परिवर्तन जबकि अन्य कारक समान रहें।



- **माँग की कीमत लोच :** माँग की कीमत लोच, कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन के फलस्वरूप माँग की मात्रा में होने वाले प्रतिक्रियात्मक प्रतिशत परिवर्तन को संख्यात्मक रूप में मापती हैं।

प्रतिशत या आनुपातिक विधि :

$$E_d = (-) \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q} \text{ अथवा } E_d = (-) \frac{Q_1 - Q_0}{P_1 - P_0} \times \frac{P_0}{Q_0}$$

जहाँ पर P_0 = प्रारम्भिक कीमत

Q_0 = प्रारम्भिक मात्रा

P_1 = अंतिम कीमत

Q_1 = अंतिम मात्रा

ΔQ = माँग में परिवर्तन

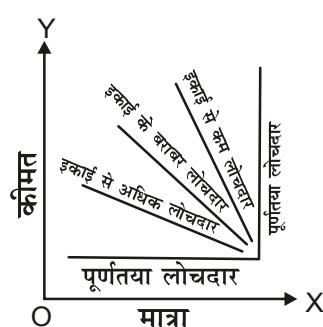
ΔP = कीमत में परिवर्तन

E_d = माँग की कीमत लोच

अथवा $E_d = \frac{\text{माँग में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$

माँग में % परिवर्तन = $\frac{\Delta Q}{Q_0} \times 100$

कीमत में % परिवर्तन = $\frac{\Delta P}{P_0} \times 100$



□ माँग की कीमत लोच को प्रभावित करने वाले कारक -

- (क) वस्तु की प्रकृति
- (ख) उपभोक्ता की आय
- (ग) निकटतम स्थानापन्न वस्तुओं की उपलब्धता
- (घ) उपभोग के स्थगन की सम्भावना
- (ङ) वस्तु पर व्यय होने वाला आय का भाग
- (च) वस्तु के विविध प्रयोग

बहु विकल्पीय प्रश्न : 1 अंक

1. एक वस्तु की कुल उपयोगिता अधिकतम होती है जब
 - (a) वस्तु का उपयोग अधिकतम होता है।
 - (b) सीमांत उपयोगिता अधिकतम होती है।
 - (c) औसत उपयोगिता अधिकतम होती है।
 - (d) सीमांत उपयोगिता शून्य होती है।
2. एक वस्तु की सीमांत उपयोगिता –
 - (a) मात्रा में वृद्धि होने पर सदैव घटती है
 - (b) केवल कुल उपयोगिता के घटने पर घटती है।
 - (c) घटती है किन्तु सदैव धनात्मक रहती है।
 - (d) पहले बढ़ती है तथा उच्चतम बिन्दु पर पहुँचने के पश्चात् घटती है।
3. एक उपभोक्ता को अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होती है जब
 - (a) वस्तु की कीमत निम्नतम हो
 - (b) कुल उपयोगिता अधिकतम हो
 - (c) कुल उपयोगिता जो उसे मिल रही है वह समान है मुद्रा के रूप में त्यागी गई उपयोगिता के समान है।

- (d) वस्तु की अंतिम इकाई से मिलने वाली उपयोगिता, मुद्रा के रूप में त्यागी गई उपयोगिता के समान है।
4. एक उपभोक्ता दो वस्तुओं का उपभोग करता है। उपभोक्ता संतुलन की अवस्था में होगा, जब
- (a) दो वस्तुओं की सीमांत उपयोगिता समान है।
 - (b) दो वस्तुओं की कुल उपयोगिता समान है।
 - (c) दो वस्तुओं की कीमत समान है।
 - (d) प्रति रुपया सीमांत उपयोगिता समान है।
5. जब सीमांत उपयोगिता ऋणात्मक है, तब
- (a) कुल उपयोगिता घटती दर से बढ़ती है।
 - (b) कुल उपयोगिता घटती है।
 - (c) कुल उपयोगिता शून्य होती है।
 - (d) कुल उपयोगिता ऋणात्मक होती है।
6. यदि एक वस्तु की कीमत शून्य है, तो उपभोक्ता उपभोग करेगा।
- (a) वस्तु की असीमित मात्रा का
 - (b) जब तक कुल उपयोगिता अधिकतम होगी।
 - (c) जब तक सीमान्त उपयोगिता शून्य न हो जाए।
 - (d) जब तक कुल उपयोगिता शून्य हो जाए।
7. एक वस्तु की स्थिति में, निम्न में से कौन सी शर्त उपभोक्ता संतुलन के लिए अनिवार्य है?
- (a) $\frac{MU_m}{MU_x} = P_x$
 - (b) $MU_x = MU_m \times P_x$
 - (c) $\frac{P_x}{MU_x} = MU_m$
 - (d) $\frac{MU_m}{P_x} = MU_x$

8. उपभोक्ता संतुलन के सिद्धान्त के अनुसार एक उपभोक्ता, उपभोक्ता संतुलन पर पहुँचने के लिए कर सकता है—
- (a) वस्तु की कीमत में कमी
 - (b) उपभोक्ता की आय में वृद्धि
 - (c) वस्तु की मात्रा में परिवर्तन
 - (d) दोनों वस्तुओं के उपभोग में वृद्धि
9. एक उपभोक्ता के असंतुलन की स्थिति $\frac{MU_x}{P_x} > \frac{MU_y}{P_y}$ पैदा होती है
- (a) X वस्तु के उपभोग में वृद्धि के कारण
 - (b) Y वस्तु की कीमत में कमी के कारण
 - (c) X वस्तु की कीमत में वृद्धि के कारण
 - (d) Y वस्तु की कीमत में वृद्धि के कारण
10. दो वस्तुओं के उपभोग की स्थिति में उपभोक्ता संतुलन होगा, जब :

$$(a) \frac{P_x}{MU_X} = \frac{P_y}{MU_y} = MU_M \quad (b) \frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y} = MU_M$$

$$(c) \frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y} = MRS_{xy} \quad (d) MU_M = \frac{MU_x}{P_x}$$

11. एक उपभोक्ता के बजट सेट की संख्या होती है:
- (a) असीमित, लेकिन बजट रेखा के भीतर।
 - (b) सीमित, उपभोक्ता की आय पर निर्भर।
 - (c) सीमित, वस्तु की कीमत पर निर्भर
 - (d) सीमित, वस्तु की कीमत तथा उपभोक्ता की आय पर निर्भर
12. निम्न में से कौन सी तटस्थता वक्र की विशेषता नहीं है:
- (a) तटस्थता वक्र मूल बिन्दू की ओर उन्नतोदर होता है।

- (b) उच्च तटस्थता वक्र संतुष्टि के उच्च स्तर को दर्शाता है।
- (c) तटस्थता वक्र एक दूसरे को नहीं काटते हैं।
- (d) तटस्थता वक्र मूल बिन्दू की ओर नतोदर होता है।
13. निम्न में से कौन सा वैयक्तिक माँग का निर्धारक नहीं है।
- (a) आय का वितरण (b) वस्तु की कीमत
- (c) उपभोक्ता की आय (d) फैशन तथा प्राथमिकताएँ।
14. एक उपभोक्ता कीमत के कम होने पर अधिक मात्रा की माँग करता है क्योंकि
- (a) कुल उपयोगिता बढ़ती है तथा कीमत से अधिक हो जाती है।
- (b) सीमान्त उपयोगिता, कीमत से अधिक हो जाती है।
- (c) कीमत के कम होने से मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता बढ़ जाती है।
- (d) कीमत के कम होने से सीमान्त उपयोगिता भी घटती है।
15. माँग वक्र दाई ओर खिसकता है जब
- (a) वस्तु की कीमत में कमी हो
- (b) स्थानापन्न वस्तु की कीमत में कमी हो
- (c) पूरक वस्तु की कीमत में वृद्धि हो
- (d) क्रेताओं की संख्या में वृद्धि हो।
16. एक वस्तु की माँग की कीमत लोच (-2.5) है। वस्तु की कीमत में 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। माँग की मात्रा में क्या परिवर्तन होगा?
- (a) 50 इकाइयों की कमी होगी (b) 50 इकाइयों की वृद्धि होगी।
- (c) 8 प्रतिशत की कमी होगी (d) 50 प्रतिशत की कमी होगी।
17. एक उपभोक्ता का एक दिष्ट अधिमान है। वह किस बण्डल (संयोग) को सबसे अधिक प्राथमिकता देगा।
- (a) X वस्तु की 4 इकाइयाँ तथा Y वस्तु की 6 इकाइयाँ

- (b) X वस्तु की 6 इकाइयाँ तथा Y वस्तु की 5 इकाइयाँ
- (c) X वस्तु की 5 इकाइयाँ तथा Y वस्तु की 6 इकाइयाँ
- (d) X वस्तु की 4 इकाइयाँ तथा Y वस्तु की 5 इकाइयाँ
18. एक उपभोक्ता के तटस्थिता वक्रों की अधिकतम संख्या क्या है?
- (a) तटस्थिता वक्रों की असीमित संख्या।
- (b) उपभोक्ता के अधिकतम संतुष्टि स्तर तक।
- (c) उपभोक्ता की बजट रेखा पर निर्भर है।
- (d) उपभोक्ता के विभिन्न बजट सेट के बराबर
19. माँग वक्र का ढाल शून्य है, माँग की लोच है:
- (a) माँग की लोच शून्य है (b) माँग की लोच बेलोचदार है।
- (c) माँग की लोच अन्नत है (d) माँग की लोच लोचदार है।
20. निम्न में से कौन सा माँग की लोच निर्धारिक कारक नहीं है
- (a) वस्तु की प्रकृति (b) वस्तु के उपयोगों की संख्या
- (c) स्थानापन्न वस्तुओं की उपलब्धता
- (d) वस्तु की माँगी गई मात्रा

उत्तर

**1. (d); 2. (a); 3. (d); 4. (d); 5. (b); 6. (c); 7. (b); 8. (c); 9. (d); 10. (b); 11. (d);
12. (d); 13. (a); 14. (b); 15. (d); 16. (d); 17. (c); 18. (a); 19. (c); 20 (d)**

लघु उत्तर वाले प्रश्न (3-4 अंक)

- तालिका की सहायता से कुल उपयोगिता एवं सीमांत उपयोगिता में संबंध बताइये?
- एक वस्तु की स्थिति में उपयोगिता अवधारणा की सहायता से उपभोक्ता संतुलन की व्याख्या कीजिए।

3. कुल उपयोगिता में क्या परिवर्तन होगा जबकि-
 - (a) सीमांत उपयोगिता वक्र x-अक्ष के ऊपर स्थित हो।
 - (b) सीमांत उपयोगिता वक्र x-अक्ष को स्पर्श कर रहा हो।
 - (c) सीमांत उपयोगिता वक्र X-अक्ष के नीचे स्थित हो।
4. अनधिमान वक्र की तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
5. उपयोगिता विश्लेषण की सहायता से दिखाइए कि एक वस्तु की माँग और उसकी कीमत में विपरीत सम्बन्ध होता है। समझाइए।
6. एक वस्तु X की माँग पर क्या प्रभाव पड़ेगा यदि संबंधित वस्तु की कीमत में वृद्धि हो जाए?
7. उपभोक्ता की आय बढ़ने पर सामान्य वस्तु की माँग क्यों बढ़ती है?
8. माँग की लोच को प्रभावित करने वाले निम्न कारकों की व्याख्या कीजिए।
 - (क) वस्तु की प्रकृति
 - (ख) प्रतिस्थापन वस्तुओं की उपलब्धि
 - (ग) उपभोग का स्थगन
9. एक रेखाचित्र की सहायता से मांग में विस्तार और माँग में वृद्धि में अन्तर स्पष्ट कीजिए?
10. बजट सेट तथा बजट रेखा के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।
11. माँग में परिवर्तन तथा मांगी गई मात्रा में परिवर्तन के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।
12. माँग की लोच पर निम्न कारकों का क्या प्रभाव होता है?
 - (क) क्रेता की आय के स्तर
 - (ख) उपभोक्ता का व्यवहार
13. माँग वक्र का ढाल निम्न स्थितियों में कैसा होगा-
 - (क) पूर्णतया लोचदार माँग
 - (ख) पूर्णतया बेलोचदार माँग
 - (ग) इकाई के बराबर लोचदार माँग

14. माँग वक्र में दाई ओर खिसकाव (माँग में वृद्धि) के प्रमुख कारक लिखकर किसी एक की व्याख्या कीजिए।
15. मांग में कमी (माँग वक्र में बाई ओर खिसकाव) के प्रमुख कारक लिखकर किसी एक की व्याख्या कीजिए।

उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल H.O.T.S.

17. रुपये 7 प्रति इकाई पर एक उपभोक्ता वस्तु की 12 इकाई खरीदता है जब कीमत गिरकर रुपये 6 प्रति इकाई हो जाती है वह वस्तु पर रुपये 72 व्यय करता है। प्रतिशत विधि द्वारा कीमत मांग लोच ज्ञात कीजिए। लोच के इस माप के आधार पर माँग वक्र के सम्भावित आकार पर टिप्पणी कीजिए।
18. एक उपभोक्ता रुपये 5 प्रति इकाई पर वस्तु की 20 इकाईयाँ खरीदता है। जब वह उसी वस्तु की 24 इकाईयाँ खरीदता है तो इस पर कुल व्यय रुपये 120 होता है। प्रतिशत विधि द्वारा कीमत मांग की लोच ज्ञात कीजिए। इस सूचना के आधार पर माँग वक्र के सीमित आकार पर टिप्पणी कीजिए।
19. वस्तु X एवं Y की कीमत लोच आपस में बराबर है। वस्तु X की मूल्य में 20% कमी होने से मांगी गई मात्रा 100 इकाई से बढ़कर 250 इकाई हो जाती है। अगर वस्तु Y के मूल्य में 8% की कमी आती है तो मांगी गई मात्रा में प्रतिशत वृद्धि की गणना करें।
20. निम्नलिखित समीकरणों में रिक्त स्थान भरो-

$$(i) \quad MRS = \frac{\Delta Y}{?} \qquad \qquad (ii) \quad ? = \Sigma MU$$

$$(iii) \quad MU_n = TU_n - ? \qquad \qquad (iv) \quad e_d = \frac{\Delta Q}{?} \times \frac{P}{Q}$$

21. अन्तर स्पष्ट कीजिए -
 - (i) सामान्य वस्तुएँ और निम्न कोटि वस्तुएँ।
 - (ii) पूरक वस्तुएँ एवं प्रतिस्थापन वस्तुएँ।
22. जब सीमान्त उपयोगिता वस्तु की कीमत से कम होती है तो उपभोक्ता वस्तु के अधिक उपभोग को बन्द कर देता है। क्यों? कारण समझाइए।

23. एक उपभोक्ता केवल दो वस्तुओं X तथा Y का उपभोग करता है। उपयोगिता विश्लेषण की सहायता से उपभोक्ता संतुलन की शर्तें बताइए और उनकी व्याख्या कीजिए।
25. वे शर्तें समझाइए जिससे यह निर्धारित होता है कि किसी कीमत पर एक उपभोक्ता वस्तु की कितनी इकाई खरीदेगा।
26. सीमांत प्रतिस्थापन दर की परिभाषा दीजिए। समझाइए कि एक अनधिमान वक्र उन्नतोदर (उत्तल) क्यों होता है।

दीर्घ उत्तर वाले प्रश्न (6 अंक)

1. अनधिमान वक्र विश्लेषण की सहायता से उपभोक्ता संतुलन की शर्तें समझाइए। रेखाचित्र द्वारा समझाइए।
2. उपयोगिता अवधारणा की सहायता से दो वस्तुओं के सम्बन्ध में उपभोक्ता के संतुलन की शर्तें की व्याख्या कीजिए।
3. मांग वक्र का ढलान ऋणात्मक क्यों होता है? किन्हीं तीन कारकों की व्याख्या कीजिए।
4. रेखाचित्रों का प्रयोग करते हुए समझाइए कि निम्नलिखित का वस्तु की मांग पर क्या प्रभाव पड़ता है?
 - (1) उपभोक्ता की आय में कमी
 - (2) सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि।
5. अनधिमान वक्र विधि के अन्तर्गत उपभोक्ता के संतुलन की शर्तें क्या हैं? यदि शर्तें पूरी नहीं होती तो संतुलन तक पहुँचने में क्या परिवर्तन होंगे? वर्णन कीजिए।
6. अनधिमान वक्रों की तीन विशेषताएँ समझाइए।
7. कारण सहित लिखिए कि निम्न कथन सही हैं अथवा गलत।
 - (क) दो अनधिमान वक्र कभी-भी एक-दूसरे को नहीं काटते।
 - (ख) निम्न कोटि वस्तुओं का आय प्रभाव धनात्मक होता है।

- (ग) माँगी गई मात्रा में परिवर्तन, मांग के नियम की व्याख्या करता है।
8. निम्न कथन सत्य हैं या असत्य। कारण सहित स्पष्ट कीजिए।
- (क) क्रेताओं की संख्या में वृद्धि माँग बढ़ को दाईं ओर खिसका देती है।
- (ख) बाजार में किसी वस्तु के प्रतिस्थापन की उपस्थिति के कारण उस वस्तु की माँग लोचदार हो जाती है।
- (ग) सीमांत प्रतिस्थापन दर बढ़ती हुई होती है जिसके कारण अनधिमान बढ़ का ढाल उत्तल होता है।

परीक्षा उपयोग प्रश्न

1 अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. किसी वस्तु को सामान्य वस्तु कब कहा जाता है?

उत्तर. जिस वस्तु का आय प्रभाव धनात्मक हो तथा कीमत प्रभाव ऋणात्मक हो, उसे सामान्य वस्तु कहते हैं।

प्र. 2. किसी वस्तु को निकृष्ट वस्तु कब कहा जाता है?

उत्तर. जिस वस्तु का आय प्रभाव ऋणात्मक हो, उसे निकृष्ट वस्तु कहा जाता है।

प्र. 3. पानी की माँग बेलोचदार क्यों होती है?

उत्तर. क्योंकि पानी एक अनिवार्य वस्तु है।

प्र. 4. बाजार माँग को परिभाषित कीजिए।

उत्तर. बाजार माँग से अभिप्राय किसी वस्तु की उन मात्राओं के योग से जिन्हें बाजार के सभी उपभोक्ता एक निश्चित समयावधि में वस्तु की विभिन्न कीमतों पर खरीदने के इच्छुक हैं, योग्य हैं व तैयार हैं।

प्र. 5. सीमांत प्रतिस्थापन दर (MRS) से क्या अभिप्राय है?

उत्तर. समान संतुष्टि स्तर बनाए रखते हुए, उपभोक्ता एक वस्तु X की एक अतिरिक्त इकाई का उपभोग करने हेतु दूसरी वस्तु Y की जितनी इकाईयों का त्याग करने के लिए तैयार होता है, उसके अनुपात को सीमांत प्रतिस्थापन दर कहते हैं।

प्र. 6. एकदिष्ट अधिमान से क्या अभिप्राय है?

उत्तर. एकदिष्ट अधिमान से अभिप्राय है कि उपभोक्ता दो बंडलों के मध्य उस बंडल को प्राथमिकता देता है, जिसमें दूसरे बंडल की तुलना में कम-से-कम वस्तु की अधिक मात्रा होती है और दूसरी वस्तु की मात्रा कम नहीं होती है।

प्र. 7. बजट रेखा का समीकरण लिखिए।

उत्तर. $M = P_x \cdot X + P_y \cdot Y$

Q. 8. बजट सेट का समीकरण लिखिए।

Ans. $P_x \cdot X + P_y \cdot Y \leq M$

3-4 अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. माँग में वृद्धि एवं वस्तु की मात्रा में वृद्धि में भेद कीजिए।

उत्तर. किसी वस्तु की कीमत स्थिर रहने पर अन्य कारकों में परिवर्तन के कारण जब माँग बढ़ती है तो उसे माँग में वृद्धि कहते हैं। इसके विपरीत अन्य बातें समान रहने पर जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के कारण उसकी माँग बढ़ती है तो उसे माँग मात्रा में वृद्धि कहते हैं।

प्र. 2. एक वस्तु की दी गई कीमत पर एक उपभोक्ता यह निर्णय कैसे लेता है कि वह उस वस्तु की कितनी मात्रा खरीदें?

उत्तर. उपभोक्ता एक वस्तु की इतनी मात्रा खरीदता है जिस पर सीमान्त उपयोगिता कीमत के बराबर हो। जब तक सीमान्त उपयोगिता कीमत से अधिक होती है वह वस्तु को खरीदता रहता है। जैसे-जैसे वह अधिक इकाई खरीदता है सीमान्त उपयोगिता घटती जाती है और एक स्थिति ऐसी आती है जहाँ सीमान्त उपयोगिता कीमत के बराबर हो जाती है। उपभोक्ता इस स्थिति तक ही वस्तु खरीदेगा।

प्र. 3. एक उपभोक्ता केवल दो वस्तुओं x और y का उपभोग करता है। उपयोगिता विश्लेषण की सहायता से उपभोक्ता संतुलन की शर्तें बताइए और उनकी व्याख्या कीजिए।

उत्तर. उपभोक्ता के संतुलन की दो शर्तें हैं :

$$(1) \frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y} \text{ Or } \frac{MU_x}{MU_y} = \frac{P_x}{P_y}$$

यदि $\frac{MU_x}{P_x} > \frac{MU_y}{P_y}$ तो उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में नहीं होगा

क्योंकि वह x की अधिक मात्रा और y की कम मात्रा खरीद कर कुल उपयोगिता बढ़ा सकता है। इसी प्रकार $\frac{MU_x}{P_x} < \frac{MU_y}{P_y}$ है तो सन्तुलन की स्थिति नहीं है क्योंकि वह x की कम y की अधिक मात्रा खरीदकर कुल उपयोगिता बढ़ा सकता है।

- (2) वस्तु की अधिक इकाईयों का उपयोग करने पर उसकी सीमान्त उपयोगिता घटती है। यदि ऐसा न हो तो या तो उपभोक्ता केवल एक ही वस्तु खरीदेगा जो अवास्तविक है या वह कभी सन्तुलन की स्थिति में नहीं पहुँचेगा।

प्र. 4. समझाइए कि किसी वस्तु की माँग उसकी सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतों से कैसे प्रभावित होती है। उदाहरण दीजिए।

उत्तर. सम्बन्धित वस्तुएँ दो प्रकार की होती हैं - (1) प्रतिस्थापन वस्तु (2) पूरक वस्तु।

1. **प्रतिस्थापन वस्तु :** जब प्रतिस्थापन वस्तु की कीमत घटती है तो वह दी हुई वस्तु की तुलना में सस्ती हो जाती है इसलिए उपभोक्ता इसे दी हुई वस्तु के स्थान पर प्रतिस्थापित करता है इससे दी हुई वस्तु की माँग घटती जाएगी। इसी प्रकार प्रतिस्थापन वस्तु की कीमत बढ़ने से दी हुई वस्तु की माँग बढ़ जाएगी।
उदाहरण : चाय और कॉफी आदि।

2. **पूरक वस्तुएँ :** जब पूरक वस्तु की कीमत घटती है तो उसकी माँग बढ़ जाती है और उसके साथ दी हुई वस्तु की माँग भी बढ़ जाती है। इसी प्रकार जब पूरक वस्तु की कीमत बढ़ती है तो साथ दी हुई वस्तु की माँग घट जाती है।

उदाहरण : कार तथा पेट्रोल आदि।

प्र. 5. सामान्य वस्तु और घटिया वस्तु के बीच अन्तर बताइए। प्रत्येक का उदाहरण दीजिए।

उत्तर. **सामान्य वस्तुएँ :** सामान्य वस्तुएँ उन वस्तुओं को कहते हैं जिनकी माँग क्रेताओं की आय के बढ़ने पर बढ़ती है। अतः आय और माँग में धनात्मक सम्बन्ध पाया जाता है अथवा आय प्रभाव धनात्मक होता है।

घटिया वस्तुएँ (निम्नकोटि वस्तुएँ) : घटिया (निम्नकोटि) वस्तुएँ उन वस्तुओं को कहते हैं जिनकी मांग क्रेताओं की आय के बढ़ने पर घटती है अतः आय और मांग में ऋणात्मक सम्बन्ध पाया जाता है।

उदाहरण : मोटा अनाज तथा मोटा कपड़ा

प्र. 6. मांग की कीमत लोच को प्रभावित करने वाले किन्हीं चार कारकों की व्याख्या कीजिए।

- उत्तर.**
- वस्तु की प्रकृति :** अनिवार्य वस्तुएँ, जैसे नमक, जीवन रक्षक दवाएँ आदि की मांग बेलोचदार होती है तथा विलासिता की वस्तुओं की मांग लोचदार होती है।
 - प्रतिस्थापन वस्तुओं की उपलब्धता :** ऐसी वस्तुएँ जिनके निकटतम स्थापन उपलब्ध होते हैं, उनकी मांग अधिक लोचदार होती है तथा जिन वस्तुओं के प्रतिस्थापन नहीं होते उनकी मांग उपेक्षाकृत बेलोचदार होती है।
 - उपयोग में विविधता :** जिन वस्तुओं के विभिन्न उपयोग होते हैं उनकी मांग अधिक लोचदार होती है। उदाहरण के लिए बिजली के विभिन्न उपयोग।
 - उपभोक्ता की आदर :** उपभोक्ताओं को जिन वस्तुओं के उपयोग की आदत पड़ जाती है उनकी मांग बेलोचदार होती है। उदाहरण : शराब, सिगरेट।

Q. 7. कुल उपयोगिता तथा सीमान्त उपयोगिता के बीच सम्बन्ध समझाइए। तालिका का प्रयोग कीजिए।

Ans.

मात्रा (इकाइयाँ)	कुल उपयोगिता (यूटिलिस्ट)	सीमान्त उपयोगिता (यूटिलिस्ट)
0	0	-
1	8	8
2	14	6
3	18	4
4	20	2
5	20	0
6	18	-2

तालिका से स्पष्ट है-

- (1) जब तक सीमान्त उपयोगिता धनात्मक और घटती है कुल उपयोगिता बढ़ती है।
- (2) जब सीमान्त उपयोगिता शून्य होती है तब कुल उपयोगिता अधिकतम होती है।
- (3) जब सीमान्त उपयोगिता ऋणात्मक होती है, तब कुल उपयोगिता घटना शुरू हो जाती है।

प्र. 8. सीमान्त उपयोगिता की परिभाषा दीजिए। हासमान सीमान्त उपयोगिता का नियम बताइए।

उत्तर. **सीमान्त उपयोगिता :** वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई के उपभोग से कुल उपयोगिता में जो वृद्धि होती है, उसे सीमान्त उपयोगिता कहते हैं।

हासमान सीमान्त उपयोगिता का नियम : हासमान सीमान्त उपयोगिता का नियम यह बताता है कि उपभोक्ता जैसे-जैसे किसी वस्तु की अधिक मात्रा का उपभोग करता है वैसे-वैसे उस वस्तु की सीमान्त उपयोगिता घटती जाती है इस नियम के अनुसार कुल उपयोगिता घटती दर से बढ़ती है तथा सीमान्त उपयोगिता घटती है।

6 अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. अनधिमान वक्र की तीन विशेषताएँ समझाइए।

उत्तर. अनधिमान वक्रों की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. **इनका ढलान बाएँ से दाएँ नीचे की ओर होता है** - एक वस्तु की इकाइयों का अधिक उपभोग करने के लिए दूसरी वस्तु की कुछ इकाइयों का त्याग करना पड़ता है ताकि संतुष्टि स्तर वही रहे।
2. **मूल बिन्दु की ओर उत्तल (उन्नतोदर)** हाती है - हासमान सीमान्त उपयोगिता के नियम के कारण सीमान्त प्रतिस्थापन दर निरन्तर घटती है।
3. **ऊँचा अनधिमान वक्र अधिक उपयोगिता दर्शाता है** - ऊँचा अनधिमान वक्र वस्तुओं के बड़े बंडलों को दर्शाता है। इसका अर्थ है अधिक उपयोगिता, एकदिष्ट अधिमान के नियम के कारण।

प्र. 2. अनधिमान वक्र विश्लेषण द्वारा उपभोक्ता सन्तुलन की शर्तें समझाइए। रेखाचित्र का प्रयोग कीजिए।

उत्तर. उपभोक्ता के सन्तुलन की दो शर्तें हैं-

- (1) सीमान्त प्रतिस्थापन दर = कीमतों का अनुपात ($MRS = P_x/P_y$)
- (2) सीमान्त प्रतिस्थापन दर निरन्तर घटती है।

व्याख्या :

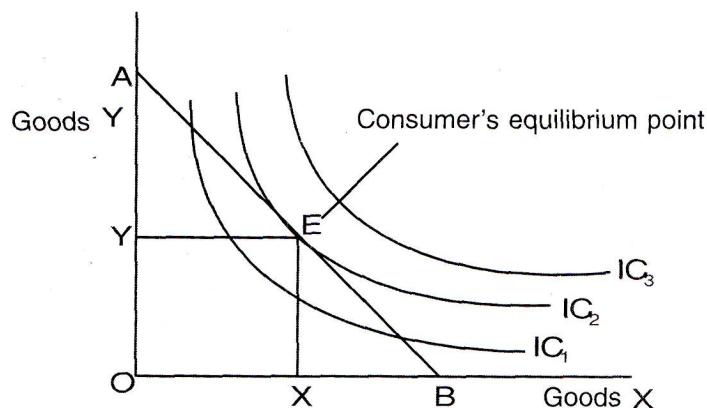
(i) मान लीजिए दो वस्तुएँ x तथा y हैं। उपभोक्ता के सन्तुलन की पहली शर्त है कि

$$MRS = \frac{P_x}{P_y}.$$

यदि $MRS > P_x/P_y$ है तो इसका अर्थ है कि उपभोक्ता x वस्तु की बाजार में जो कीमत है उसमें अधिक देने को तैयार हैं अतः वह X की अधिक मात्रा खरीदेगा। इससे MRS घटेगी और ऐसा तब तक होता रहेगा जब तक कि $MRS = P_x/P_y$.

यदि $MRS < \frac{P_x}{P_y}$ है तो इसका अर्थ है कि उपभोक्ता x वस्तु की बाजार में जो कीमत है उससे कम देने को तैयार है अतः वह x की कम मात्रा खरीदेगा। इससे MRS बढ़ेगी और ऐसा तब तक होता रहेगा जब तक कि $MRS = \frac{P_x}{P_y}$.

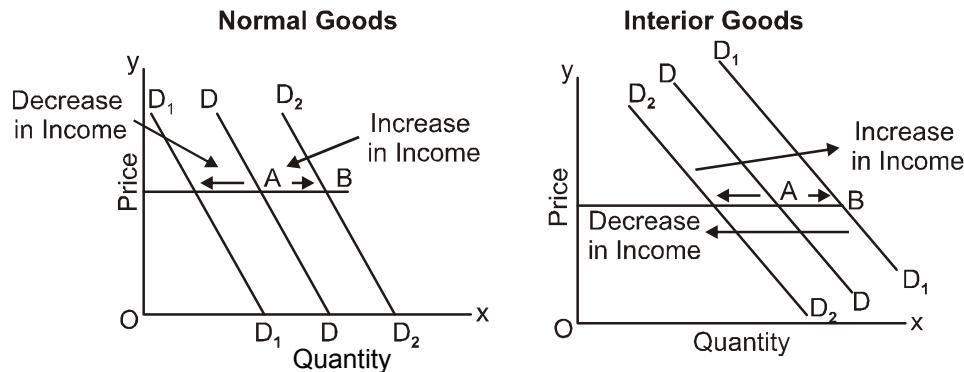
(2) सीमान्त प्रतिस्थापन दर निरन्तर घटेगी जब तक कि सन्तुलन की स्थिति स्थापित नहीं हो जाती।



प्र. 3. उपभोक्ता की आय में परिवर्तन होने से वस्तु की माँग पर पड़ने वाले प्रभाव की चित्र सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तर. उपभोक्ता की आय में परिवर्तन के प्रभाव को दो श्रेणियों में विभाजित करके निम्न प्रकार समझा जा सकता है।

1. **सामान्य वस्तु** : सामान्य वस्तुएँ वे वस्तुएँ होती हैं, जिन पर आय प्रभाव धनात्मक एवं कीमत प्रभाव ऋणात्मक होता है। यदि उपभोक्ता की आय में वृद्धि होती है तो इनकी माँग बढ़ जाती है। इसके विपरीत यदि आय में कमी होती है तो उसकी माँग में कमी हो जाती है।
2. **निम्नकोटि वस्तुएँ** : ये वे वस्तुएँ होती हैं जिन पर आय प्रभाव ऋणात्मक एवं कीमत प्रभाव धनात्मक होता है। यदि उपभोक्ता की आय में वृद्धि होती है तो इन वस्तुओं की माँग कम हो जाती है। इसकी विपरीत यदि उपभोक्ता की आय में कमी होती है तो इनकी माँग बढ़ जाती है।



प्र. 4. माँग वक्र का ढलान ऋणात्मक क्यों होता है? कारण बताइये-

उत्तर. माँग वक्र के ऋणात्मक ढाल होने के निम्नलिखित कारण हैं-

- (1) **हासमान सीमान्त उपयोगिता नियम** : इस नियम के अनुसार प्रत्येक अगली इकाई का प्रयोग करने से मिलने वाली सीमान्त उपयोगिता क्रमशः घटती चली जाती है, इसलिए प्रत्येक अगली इकाई को खरीदने के लिए उपभोक्ता कम कीमत देने को तैयार होता है।
- (2) **आय प्रभाव** : वस्तु की कीमत के कम होने के कारण क्रेता की वास्तविक आय बढ़ जाती है। वास्तविक आय बढ़ने से वस्तु की माँग में वृद्धि होती है।
- (3) **प्रतिस्थापन प्रभाव** : एक वस्तु की कीमत के कम होने के कारण एक वस्तु दूसरी वस्तु की तुलना में सस्ती हो जाती है तथा उपभोक्ता उसका प्रतिस्थापन दूसरी वस्तु से करता है। जैसे चाय की कीमत कम होने पर उसका कॉफी के स्थान पर प्रतिस्थापन किया जाता है।

- (4) **उपभोक्ता समूह का आकार :** किसी वस्तु की कीमत के कम होने पर जो उपभोक्ता उस वस्तु को नहीं खरीद रहे थे, अब उस वस्तु को खरीदने में सक्षम हो जाते हैं जिससे उसकी माँग में वृद्धि होती है।
- (5) **विभिन्न प्रयोग :** एक वस्तु के विभिन्न प्रयोग होते हैं। वस्तु सस्ती होने पर उसकी माँग बढ़ जाती है क्योंकि विभिन्न प्रयोगों में उसका इस्तेमाल किया जा सकता है जैसे दूध की कीमत कम होने पर इसकी माँग बढ़ेगी।

प्र. 5. एक उपभोक्ता केवल दो वस्तुओं x और y का उपयोग करता है। दोनों की बाजार कीमत 3 रु प्रति इकाई है। यदि उपभोक्ता इन दो वस्तुओं के ऐसे संयोग का चुनाव करता है। जिसकी सीमान्त प्रतिस्थापन दर 3 है, तो क्या उपभोक्ता संतुलन में है? कारण दीजिए। ऐसी स्थिति में एक विवेकी उपभोक्ता क्या करेगा? समझाइये।

उत्तर. Given $P_x = 3$, $P_y = 3$ and $MRS = 3$, एक उपभोक्ता संतुलन में तब कहा

$$\text{जायेगा जब} - MRS = \frac{P_x}{P_y}$$

मूल्यों को प्रतिस्थापत करने पर

$$3 > \frac{3}{3}$$

इसलिए उपभोक्ता संतुलन में नहीं है। $MRS > \frac{P_x}{P_y}$ का अर्थ है कि उपभोक्ता x वस्तु की एक और इकाई खरीदने के लिए तैयार है-

- उपभोक्ता x वस्तु की अधिक इकाईयाँ खरीदेगा।
- हासमान सीमान्त उपयोगिता नियम के कारण सीमान्त प्रतिस्थापन दर घटेगी।
- और यह प्रक्रिया तब तक जारी रहेगी जब तक $MRS = \frac{P_x}{P_y}$ न हो जाए और इस प्रकार उपभोक्ता संतुलन में आ जायेगा।

प्र. 6. एक उपभोक्ता दो वस्तुओं x तथा y का उपभोग करता है जिनकी कीमत क्रमशः 4 रु. और 5 रु. प्रति इकाई है। यदि उपभोक्ता दोनों वस्तुओं का ऐसा संयोग चुनता है जिसमें x की सीमान्त उपयोगिता 5 और 4 की सीमान्त

उपयोगिता 4 है, तो क्या उपभोक्ता संतुलन में है। कारण दीजिए। ऐसी स्थिति में एक विवेकी उपभोक्ता क्या करेगा? उपयोगिता विश्लेषण का उपयोग कीजिए।

Ans. Given $P_x = 4$, $P_y = 5$ और MU_x , MU_y , एक उपभोक्ता $\frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y}$ होने पर संतुलन में होगा। मूल्यों को प्रतिस्थापित करने पर

$\frac{5}{4} > \frac{4}{5}$ or $\frac{MU_x}{P_x} > \frac{MU_y}{P_y}$ प्रति इकाई रु. की MU_x , प्रति रु. MU_y की सीमान्त उपयोगिता से ज्यादा है। इसलिए उपभोक्ता संतुलन में नहीं है।

उपभोक्ता x वस्तु की अधिक तथा y वस्तु की कम इकाईयाँ खरीदेगा। इसलिए MU_x कम होगा तथा MU_y बढ़ेगा जब तक की $\frac{MU_x}{P_x}$ तथा $\frac{MU_y}{P_y}$ बराबर नहीं हो जाता।

इकाइ - III

उत्पादन का व्यवहार और पूर्ति

स्मरणीय बिन्दु

- किसी वस्तु के भौतिक आगतों तथा भौतिक निगर्तों के बीच फलनात्मक सम्बन्ध को उत्पादन फलन कहते हैं।
- उत्पादन फलन दो प्रकार के होते हैं : (i) अल्पकालीन उत्पादन फलन : जिसमें उत्पादन का एक साधन परिवर्तनशील होता है और अन्य स्थिर। इसमें एक साधन के प्रतिफल का नियम लागू होता है। इसमें उत्पादन को परिवर्तनशील साधन की इकाईयों को बढ़ाकर ही बढ़ाया जा सकता है।
(ii) दीर्घकालीन उत्पादन फलन : जिसमें उत्पादन के सभी साधन परिवर्तनशील होते हैं। इसमें पैमाने के प्रतिफल का नियम लागू होता है। इसमें उत्पादन के सभी साधनों को बढ़ाकर उत्पादन बढ़ाया जाता है।
- कुल उत्पादन : एक निश्चित समय में प्रयुक्त सभी परिवर्ती साधन (कारक) की इकाईयों द्वारा किए गए सीमांत उत्पादन का योग होता है अथवा $TP = \Sigma MP$
- प्रति इकाई परिवर्ती कारक के उत्पादन को औसत उत्पादन कहते हैं।

$$AP = \frac{\text{कुल उत्पादन}}{\text{परिवर्ती कारक की इकाई}} = \frac{TP}{L}$$

- परिवर्ती कारक की एक अतिरिक्त इकाई का प्रयोग करीने पर कुल भौतिक उत्पाद में जो परिवर्तन होता है, उसे सीमांत उत्पादन कहते हैं।

$$MP = \frac{\Delta TP}{\Delta L} \text{ or } MP_n = TP_n - TP_{n-1}$$

- कुल उत्पाद तथा सीमांत उत्पाद में सम्बन्ध
 1. जब कुल उत्पाद बढ़ती हुई दर से बढ़ता है तो सीमांत उत्पाद अधिकतम स्तर तक बढ़ता है।
 2. जब कुल उत्पाद घटती हुई दर से बढ़ता है तो सीमांत उत्पाद घटता है परन्तु धनात्मक होता है।
 3. जब कुल उत्पाद अधिकतम होता है तो सीमांत उत्पाद शून्य होता है।
 4. जब कुल उत्पाद घटने लगता है तो सीमांत उत्पाद ऋणात्मक हो जाता है।

औसत उत्पाद तथा सीमान्त उत्पाद में संबंध

- जब $MP > AP$, तब AP बढ़ता है।
- जब $MP = AP$, तब AP अधिकतम तथा स्थिर होता है।
- जब $MP < AP$, तो AP घटने लगता है।
- दोनों वक्रों (MP तथा AP) उल्टे 'U' आकार की होती हैं।
- **परिवर्तनशील अनुपात का नियम :** अल्पकाल में स्थिर साधनों की दी हुई मात्रा के साथ परिवर्ती कारक की अतिरिक्त इकाईयों का प्रयोग किया जाता है तो कुल उत्पादन में होने वाले परिवर्तन को कारक के प्रतिफल का नियम कहा जाता है। इस नियम के अनुसार - यदि अन्य साधनों को स्थिर रखते हुये किसी परिवर्ती साधन की जैसे-जैसे अधिक से अधिक इकाईयाँ बढ़ायी जाती हैं तो कुल उत्पादन सर्वप्रथम बढ़ती दर से बढ़ता है, फिर घटती दर से बढ़ता है और अंततः घटने लगता है। इसमें TP तथा MP में तीन चरणों में परिवर्तन होता है। (i) TP बढ़ते दर से बढ़ता है, MP बढ़ता है। (ii) TP घटती दर से बढ़ता है, MP घटता है पर धनात्मक रहता है, (iii) TP घटता है, MP ऋणात्मक हो जाता है।
 - **प्रथम चरण :** कुल उत्पाद बढ़ती हुई दर से बढ़ता है : स्थिर साधनों के साथ जब परिवर्ती कारक की इकाईयों को लगातार बढ़ाकर प्रयोग किया जाता है तो प्रारम्भ में कुल उत्पाद बढ़ती दर पर बढ़ता है तथा MP भी बढ़ता है।
 - **द्वितीय चरण :** कुल उत्पाद घटती हुई दर से बढ़ता है : स्थिर कारकों की निश्चित मात्रा के साथ जब परिवर्ती कारक की इकाईयों का

लगातार बढ़ाकर प्रयोग किया जाता है। तब कुल उत्पाद घटती दर से बढ़ता है अर्थात् कुल उत्पाद वृद्धि अनुपात परिवर्ती कारक अनुपात से कम होता है MP घटने लगता है धनात्मक रहता है। जब TP अधिकतम होता है तो MP शून्य होता है।

- **तृतीय चरण :** कुल उत्पाद घटता है : यह कारक प्रतिफल नियम का अंतिम चरण है। जब स्थिर कारकों की निश्चित मात्रा के साथ परिवर्ती कारक की इकाईयाँ लगातार बढ़ाकर उत्पादन किया जाता है तो अंततः कुल उत्पाद घटने लगता है और सीमांत उत्पाद ऋणात्मक हो जाता है।

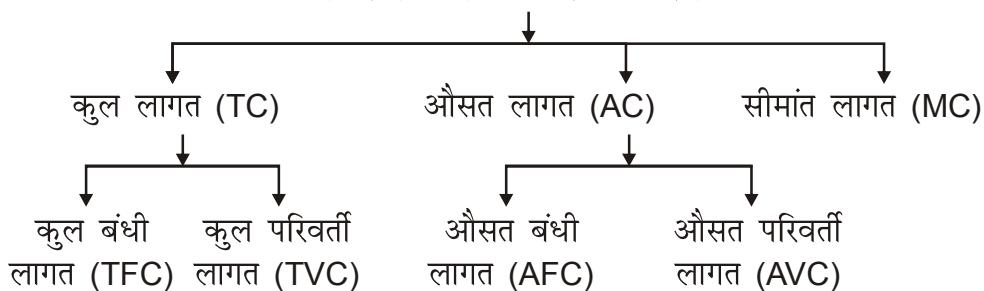
लागत की अवधारणा

- स्पष्ट तथा अस्पष्ट लागतों तथा सामन्य लाभ के योग को आर्थिक लागत कहते हैं।

$$\text{आर्थिक लागत} = \text{स्पष्ट लागत} + \text{अस्पष्ट लागत} + \text{सामन्य लाभ।}$$

- वे मौद्रिक भुगतान जो उत्पादक द्वारा कारक व गैर कारक आगतों के प्रयोग के लिए किए जाते हैं जिनका स्वामी, उत्पादक स्वयं नहीं है स्पष्ट लागतों कहलाती हैं।
- अस्पष्ट लागतों उत्पादन प्रक्रिया में उत्पादक द्वारा प्रयुक्त निजी कारकों की अनुमानित लागत है।

अल्पकालीन लागतों का वर्गीकरण



- एक फर्म द्वारा किसी वस्तु की दी गई मात्रा का उत्पादन करने पर जितना मुद्रा व्यय किया जाता है, उसे कुल लागत कहते हैं।
- कुल लागत कुल बंधी लागत तथा कुल परिवर्ती लागत का योग होती है।

$$TC = TFC + TVC$$

- कुल बंधी लागत उत्पादन के सभी स्तरों पर समान रहती है तथा उत्पादन के शून्य स्तर पर भी शून्य नहीं होती। इसका वक्र X-अक्ष के समान्तर होता है।

$$TFC = TC - TVC \quad \text{or} \quad TFC = AFC \times Q$$

- कुल परिवर्ती लागत उत्पादन में होने वाले परिवर्तन के अनुसार परिवर्तित होती है। यह उत्पादन के शून्य स्तर पर शून्य होती है। इसका वक्र कुल लागत वक्र के समांतर होता है।

$$TVC = TC - TFC \quad \text{or} \quad TVC = AVC \times Q.$$

- औसत लागत वस्तु की प्रति इकाई लागत को बताती है। यह औसत बंधी लागत व औसत परिवर्ती लागत का योग होती है।

$$AC = \frac{TC}{Q} \quad \text{or} \quad AC = AFC + AVC$$

- औसत बंधी लागत प्रति इकाई बंधी लागत को बताती है।

$$AFC = \frac{TFC}{Q} \quad \text{or} \quad AFC = AC - AVC$$

- वस्तु की प्रति इकाई परिवर्ती लागत को औसत परिवर्ती लागत कहते हैं।

$$AVC = \frac{TVC}{Q} \quad \text{or} \quad AVC = AC - AFC$$

- वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने पर जो कुल लागत में परिवर्तन होता है, उसे सीमांत लागत कहते हैं। $MC = \Delta TC / \Delta Q$ अथवा $MC = TC_n - TC_{n-1}$. किन्तु अल्पकाल में सीमांत लागत की गणना कुल परिवर्ती लागत से होती है।

$$\text{अतः } MC = TVC_n - TC_{n-1} \quad \text{or} \quad MC = \frac{\Delta TVC}{\Delta Q}$$

अल्पकालीन लागतों के पारस्परिक सम्बन्ध

- कुल लागत वक्र तथा कुल परिवर्ती लागत वक्र एक दूसरे के समान्तर होते हैं दोनों के बीच की लम्बवत् दूरी कुल बंधी लागत के समान होती है। TFC वक्र X-अक्ष के समान्तर होता है जबकि TVC वक्र TC के समांतर होता है।

- उत्पादन स्तर में वृद्धि के साथ औसत बंधी लागत वक्र व औसत वक्र के बीच अंतर बढ़ता चला जाता है, इसके विपरीत औसत परिवर्ती लागत वक्र व औसत वक्र के बीच अंतर में उत्पादन वृद्धि के साथ-साथ कमी आती है, किन्तु इनके वक्र एक-दूसरे को कभी नहीं काटते क्योंकि औसत बंधी लागत कभी शून्य नहीं होती।
- सीमांत लागत तथा औसत परिवर्ती लागत में संबंध
 - जब $MC < AVC$, AVC घटता है।
 - जब $MC = AVC$, AVC न्यूनतम तथा स्थिर होता है।
 - जब $MC > AVC$, AVC बढ़ता है।
- सीमांत लागत तथा औसत लागत में संबंध
 - जब $MC < AC$, AC घटता है।
 - जब $MC = AC$, AC न्यूनतम तथा स्थिर होता है।
 - जब $MC > AC$, AC बढ़ता है।

संप्राप्ति की अवधारणा

- **कुल संप्राप्ति TR :** यह वह मौद्रिक राशि होती है जो एक निश्चित समयावधि में फर्म को उत्पाद की दी हुई इकाईयों की बिक्री से प्राप्त होती है।

$$TR = \text{कीमत (AR)} \times \text{बेची गई मात्रा (Q)} \quad \text{अथवा} \quad TR = \Sigma MR$$
- **औसत संप्राप्ति :** बेची गई वस्तु की प्रति इकाई सम्प्राप्ति को औसत संप्राप्ति कहते हैं। यह वस्तु की कीमत के बराबर होती है।

$$AR = \frac{TR}{Q} \quad \text{अथवा} \quad AR = \text{कीमत} \left[\because \frac{TR}{Q} \quad \text{or} \quad \frac{P \times Q}{Q} = \text{Price} \right]$$

- वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई बेचने से कुल संप्राप्ति में होने वाला परिवर्तन सीमांत संप्राप्ति कहलाता है।

$$MR = \frac{\Delta TR}{\Delta Q} \quad \text{or} \quad MR_n = TR_n - TR_{n-1}$$

MR तथा AR में संबंध

- जब $MR > AR$, AR बढ़ता है।
 - जब $MR = AR$, AR अधिकतम तथा स्थिर होता है।
 - जब $MR < AR$, AR घटता है।
- जब प्रति इकाई कीमत स्थिर रहती है तब औसत, सीमांत व कुल संप्राप्ति में संबंध (पूर्ण प्रतियोगिता)
- (a) औसत व सीमांत संप्राप्ति उत्पादन के सभी स्तरों पर स्थिर रहती है तथा इनका वक्र x-अक्ष के समांतर होता है।
 - (b) कुल संप्राप्ति स्थिर दर से बढ़ती है व इसका वक्र मूल बिन्दु से गुजरने वाली सीधी धनात्मक ढाल वाली 45° रेखा के समान होता है।
- जब वस्तु की अतिरिक्त मात्रा बेचने के लिए प्रति इकाई कीमत घटाई जाए अथवा एकाधिकार व एकाधिकारात्मक बाजार में TR, AR तथा MR में संबंध।
- (a) AR व MR वक्र नीचे की ओर गिरते हुए ऋणात्मक ढाल वाले होते हैं। MR वक्र AR वक्र के नीचे रहता है।
 - (b) MR, AR की तुलना में दो गुणा दर से घटता है, यदि दोनों वक्र सीधी रेखा हो।
 - (c) TR घटते हुए दर से बढ़ता है MR भी घटता है परन्तु धनात्मक रहता है।
 - (d) TR में उस स्थिति तक वृद्धि होती है जब तक MR धनात्मक होता है जहाँ MR शून्य होगा वहाँ TR अधिकतम होता है और जब MR ऋणात्मक हो जाता है तब TR घटने लगता है।

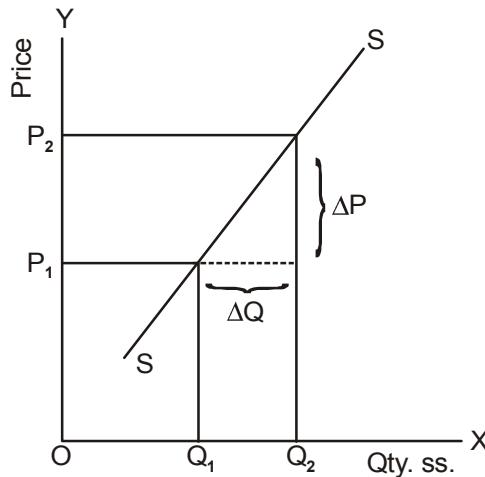
उत्पादक संतुलन की अवधारणा

- उत्पादक का संतुलन वह अवस्था है, जिसमें उत्पादक को प्राप्त होने वाले लाभ अधिकतम होते हैं। वह उस अवस्था को बदलना नहीं चाहता है।

- सीमांत लागत व सीमांत संप्राप्ति विचारधारा : इस विचारधारा के अनुसार संतुलन की शर्तें निम्न हैं-
 - (a) सीमांत संप्राप्ति व सीमांत लागत समान हों।
 - (b) संतुलन बिन्दु के पश्चात् उत्पादन में वृद्धि की स्थिति में सीमांत लागत संप्राप्ति से अधिक हो।

पूर्ति की अवधारणा

- पूर्ति : जब एक विक्रेता किसी वस्तु की एक निश्चित कीमत पर तथा निश्चित समयावधि में जितनी मात्रा बेचने के लिए तैयार होता है तो उसे उस वस्तु की पूर्ति कहते हैं।
- किसी वस्तु की पूर्ति को प्रभावित करने वाले कारक
 - वस्तु की कीमत
 - अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमतें
 - आगातों की कीमतें
 - उत्पादक की तकनीक
 - फर्मों की संख्या
 - फर्मों का उद्देश्य
 - कर तथा आर्थिक सहायता से संबंधित सरकारी नीति।
- पूर्ति वक्र : पूर्ति अनुसूची का रेखाचित्र प्रस्तुतीकरण है जो वस्तु की विभिन्न कीमतों पर पूर्ति की मात्राओं को दर्शाता है।
- पूर्ति वक्र एवं उसका ढाल : पूर्ति वक्र का ढाल धनात्मक होता है। यह वस्तु की कीमत तथा उसकी पूर्ति में प्रत्यक्ष संबंध को बताता है।
- पूर्ति वक्र का ढाल = कीमत में परिवर्तन / पूर्ति मात्रा में परिवर्तन
 $= \Delta P / \Delta Q$

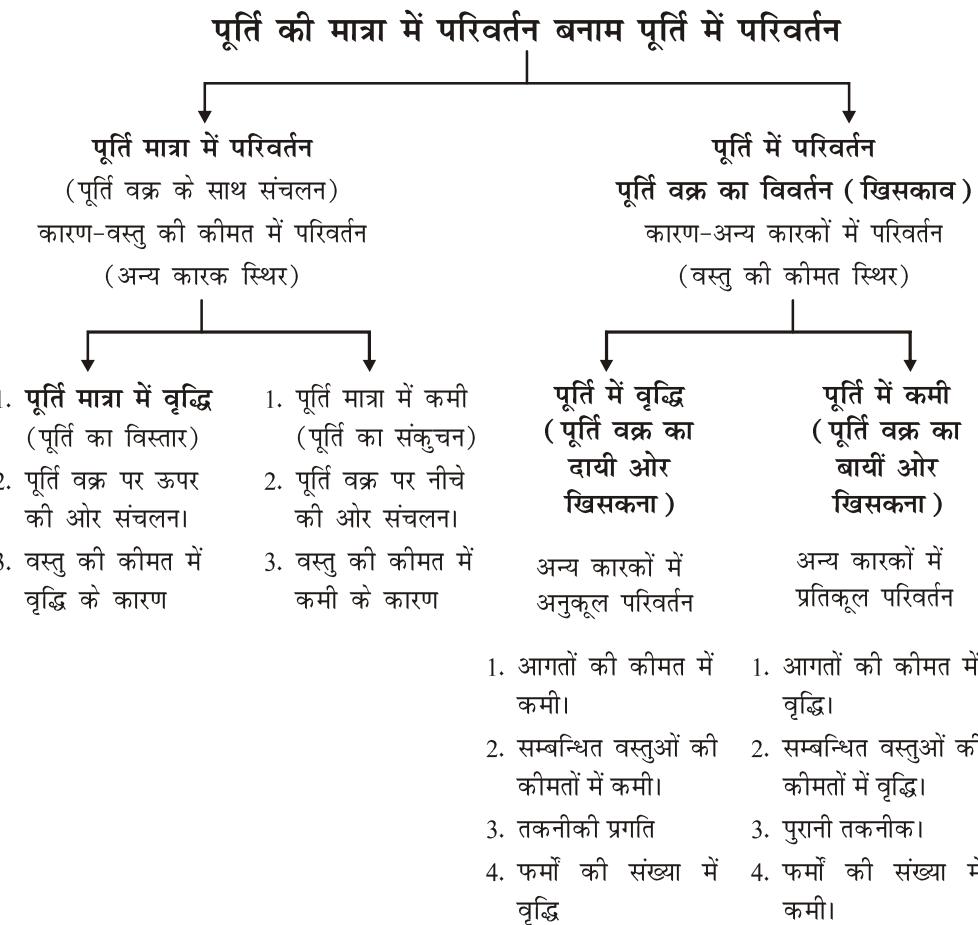


- **पूर्ति का नियम :** अन्य बातें समान रहने पर वस्तु की कीमत बढ़ने से पूर्ति की मात्रा बढ़ जाती है तथा कीमत कम होने से पूर्ति की मात्रा भी कम हो जाती है।

$$(P_x \uparrow \rightarrow S_x \uparrow, P_x \downarrow \rightarrow S_x \downarrow)$$

- **व्यक्तिगत पूर्ति :** एक व्यक्तिगत विक्रेता द्वारा किसी एक वस्तु की निश्चित कीमत पर तथा निश्चित समयावधि में वस्तु की जितनी मात्रा बेची जाती है उसे व्यक्तिगत पूर्ति कहते हैं।
- **बाजार पूर्ति :** बाजार के सभी विक्रेताओं द्वारा किसी एक वस्तु की निश्चित कीमत पर तथा निश्चित समयावधि में बेची जाने वाली वस्तु की सभी इकाइयों के योग को बाजार पूर्ति कहते हैं।
- **पूर्ति अनुसूची :** किसी वस्तु की विभिन्न संभावित कीमतों पर बेची जाने वाली वस्तु की विभिन्न इकाइयों का सारणीयन प्रस्तुतीकरण ही पूर्ति अनुसूची कहलाती है।
- **पूर्ति की कीमत लोच -** पूर्ति की कीमत लोच वस्तु की कीमत में परिवर्तनों के कारण वस्तु की पूर्ति की मात्रा की अनुक्रियाशीलता को मापती है, अथवा वस्तु की पूर्ति मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन तथा वस्तु की कीमत में प्रतिशत परिवर्तन के बीच अनुपात को पूर्ति की कीमत लोच कहते हैं।

$$\text{Elasticity of Supply (Es)} = \frac{\text{पूर्ति मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$



पूर्ति की कीमत लोच ज्ञात करने की विधियाँ

1. प्रतिशत विधि द्वारा

$$E_s = \frac{\text{पूर्ति मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत प्रतिशत में परिवर्तन}} \text{ अथवा } \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q} \times 100$$

बहु विकल्पीय प्रश्न : 1 अंक

1. एक पूर्ति वक्र के साथ ऊपर की ओर संचलन का कारण है-
 - (a) कीमत में कमी
 - (b) आय में वृद्धि
 - (c) आय में कमी
 - (d) कीमत में वृद्धि

2. जब कुल संप्राप्ति अधिकतम होती है तो सीमांत संप्राप्ति होती है-
- (a) न्यूनतम (b) अधिकतम
(c) शून्य (d) स्थिर
3. जब पूर्ति में प्रतिशत परिवर्तन तथा कीमत में प्रतिशत परिवर्तन दोनों बराबर हो तो पूर्ति की लोच होगी-
- (a) एक से अधिक (b) एक के बराबर
(c) एक से कम (d) शून्य के बराबर
4. जब कुल संप्राप्ति स्थिर दर से बढ़ती है तो औसत संप्राप्ति होगी-
- (a) स्थिर (b) बढ़ेगी
(c) घटेगी (d) शून्य
5. जब सीमांत उत्पाद शून्य होता है तो कुल उत्पाद होता है-
- (a) न्यूनतम (b) अधिकतम
(c) घटेगा (d) शून्य
6. कौन-सी लागत का वक्र X-अक्ष के समान्तर होता है :
- (a) AFC (b) TVC
(c) TFC (d) TC
7. यदि पूर्ति वक्र Y-अक्ष के समान्तर होता है तो पूर्ति की लोच होगी-
- (a) शून्य (b) अनंत
(c) एक (d) एक से अधिक
8. जब प्रति इकाई कीमत स्थिर हो तो-
- (a) $AR > MR$ (b) $AR < MR$
(c) $AR = MR$ (d) उपरोक्त में से कोई नहीं।
9. जब कुल उत्पाद गिरता है, तब सीमांत उत्पाद का व्यवहार होगा
- (a) सीमांत उत्पाद अधिकतम होता है

- (b) सीमांत उत्पाद शून्य होता है।
- (c) सीमांत उत्पाद ऋणात्मक होता है।
- (d) सीमांत उत्पाद घटता है।
10. जब औसत उत्पाद अधिकतम होता है, तो
- | | |
|---------------|-----------------------|
| (a) $MP > AP$ | (b) $MP = AP$ |
| (c) $MP < AP$ | (d) MP अधिकतम होगा। |

उत्तर

1. (d); 2. (c); 3. (b); 4. (a); 5. (b); 6. (c); 7. (a); 8. (c); 9. (c); 10. (b).

3-4 अंकों वाले प्रश्न

1. कारक के घटते प्रतिफल क्यों लागू होते हैं?
2. सीमांत उत्पादन में परिवर्तन के फलस्वरूप कुल उत्पादन का व्यवहार किस प्रकार का होगा?
3. तालिका की सहायता से कुल उत्पाद के व्यवहार को स्पष्ट कीजिए जब उत्पादन में वृद्धि हेतु केवल एक आगत की इकाईयों को बढ़ाया जाता है।
4. कुल बंधी लागत व कुल परिवर्ती लागत में अंतर कीजिए।
5. रेखाचित्र की सहायता से औसत लागत, औसत परिवर्ती लागत व सीमांत लागत के बीच सम्बन्ध दर्शाइये।
6. अल्पकालीन औसत लागत वक्र 'U' आकार का क्यों होता है?
7. रेखाचित्र की सहायता से औसत लागत, औसत परिवर्ती लागत तथा औसत बंधी लागत के सम्बन्ध की व्याख्या कीजिए।
8. निम्न स्थितियों में कुल संप्राप्ति में क्या परिवर्तन होंगे जबकि
 - (a) सीमांत संप्राप्ति गिर रही हो किन्तु धनात्मक हो।

- (b) सीमांत संप्राप्ति शून्य हो।
- (c) सीमांत संप्राप्ति ऋणात्मक हो।
9. जब बिक्री बढ़ाने के लिए कीमत घटानी पड़ती है तब सीमांत संप्राप्ति, कुल संप्राप्ति को किस प्रकार प्रभावित करती है, तालिका की सहायता से समझाइए।

अध्यास प्रश्न

10. निम्नलिखित तालिका को पूरा करो-

उत्पादन की इकाईयाँ	AVC	TC	MR
1.	—	60	20
2.	18	—	—
3.	—	—	18
4.	20	120	—
5.	22	—	—

11. एक फर्म की लागत अनुसूची नीचे दी गई है। 3 इकाईयों का उत्पादन करने पर इसकी औसत बंधी लागत 20 रुपये है।

उत्पाद (इकाईयाँ)	1	2	3
औसत परिवर्ती लागत (रु.)	30	28	32

उत्पाद के दिए हुए प्रत्येक स्तर पर सीमांत लागत और औसत कुल लागत का परिकलन कीजिए।

12. निम्नलिखित तालिका को पूरा करो।

उत्पादन की इकाईयाँ	कीमत (रु.)	सीमांत आगम (रु.)	कुल आगम (रु.)
1.	—	—	10
2.	—	4	—
3.	—	—	—
4.	—	(-3)	—

13. पूर्ति में परिवर्तन तथा पूर्ति की मात्रा में परिवर्तन में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
14. पूर्ति में संकुचन तथा पूर्ति में कमी में अंतर कीजिए।
15. आगतों की कीमतों में होने वाले परिवर्तन वस्तु की पूर्ति को किस प्रकार प्रभावित करती है।
16. दो वस्तुओं X तथा Y की कीमत लोच एक समान है। यदि वस्तु X की कीमत में 20% की वृद्धि होती है तो उसकी पूर्ति मात्रा 400 से बढ़कर 500 इकाईयाँ हो जाती है। यदि वस्तु Y की कीमत 8% घट जाए तो उसकी पूर्ति मात्रा में कितनी प्रतिशत की कमी आयेगी।
17. पूर्ति तालिका क्या है? प्रौद्योगिकी में परिवर्तन का किसी वस्तु की पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है? समझाइए।
18. निम्न कथन सही है या गलत कारण बताइए।
 - (अ) उत्पादन संतुलन की अवस्था में सीमांत लागत घटती हुई होगी।
 - (ब) AR वक्र MR वक्र के सदैव ऊपर रहता है।
19. निम्न कथन सही है या गलत, कारण दीजिए-
 - (अ) सीमांत संप्राप्ति घटते समय औसत संप्राप्ति से तेजी से घटती है।
 - (ब) औसत लागत तब बढ़ती है जब सीमांत लागत बढ़ती है।
20. निम्न कथन सत्य है या असत्य, कारण सहित समझाइए।
 - (अ) कारक के घटते प्रतिफल तब लागू होते हैं, जब औसत उत्पादन घटना प्रारम्भ कर देता है।
 - (ब) AC तथा AVC वक्र एक दूसरे को कभी नहीं काटते।
21. निम्न कथन सही है अथवा गलत, कारण सहित बताइये-
 - (क) कर की दरों में परिवर्तन का वस्तु की पूर्ति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
 - (ख) भविष्य में कीमत वृद्धि की संभावना वर्तमान में बाजार पूर्ति में वृद्धि कर देती है।

6 अंक वाले प्रश्न

1. जब केवल एक आगत (कारक) में वृद्धि की जाती है तथा अन्य आगतें स्थिर रहती हैं तब कुल उत्पाद पर क्या प्रभाव पड़ता है? रेखाचित्र की सहायता से व्याख्या कीजिए।
2. उत्पादक के संतुलन से क्या अभिप्राय है? 'सीमांत लागत और सीमांत संप्राप्ति' दृष्टिकोण से उत्पादक के संतुलन की शर्तें समझाइए। रेखाचित्र का प्रयोग कीजिए।
3. निम्न कथन सत्य हैं या असत्य, कारण सहित व्याख्या कीजिए।
 - (अ) सीमांत उत्पाद वक्र के अन्तर्गत आने वाला क्षेत्र कुल उत्पाद होता है।
 - (ब) जब सीमांत उत्पाद घटता है तब औसत उत्पाद सदैव घटता है।
 - (स) उत्पाद की पहली इकाई की सीमांत लागत $MC = AVC$ (औसत परिवर्ती लागत)
4. अपने उत्तर के लिए कारण देते हुए बताइए कि निम्नलिखित कथन सही हैं या गलत-
 - (अ) जब सीमांत संप्राप्ति स्थिर होती है और शून्य नहीं होती तो कुल संप्राप्ति भी स्थिर होगी।
 - (ब) जैसे ही सीमांत लागत बढ़ने लगती है औसत परिवर्ती लागत बढ़ने लगती है।
 - (स) चाहे कारक के हासमान प्रतिफल हों या बढ़ते प्रतिफल हों कुल उत्पाद हमेशा बढ़ता है।
5. कारण देते हुए बताइए कि निम्नलिखित कथन सही है या गलत-
 - (अ) जब कुल संप्राप्ति स्थिर होती है तो औसत संप्राप्ति भी स्थिर होगी।
 - (ब) सीमांत लागत के बढ़ते हुए होने पर भी औसत परिवर्ती लागत घट सकती है।
 - (स) जब सीमांत उत्पाद घटता है तो औसत उत्पाद भी घटेगा।

6. मान लिया जाए कि एक फर्म परिवर्ती अनुपात नियम के तृतीय चरण में उत्पादन कर रहा है तथा अधिक हानि उठा रहा है। हानि कम करने तथा लाभ बढ़ाने के उपाय बताओ।

हल : आंकिक (3-4 अंक वाले)

10.

उत्पादन की इकाईयाँ	AVC	TC	MC	TVC	TFC
1	20	60	20	20	40
2	18	76	16	36	40
3	18	94	18	54	40
4	20	120	26	80	40
5	22	150	30	110	40

11.

उत्पाद (इकाईयाँ)	AVC (रु.)	TVC (रु.)	AFC (रु.)	TFC (रु.)	TC (रु.)	ATC (रु.)	MC (रु.)
1.	30	30	60	60	90	90	30
2.	28	56	30	60	116	58	26
3.	32	96	20	60	156	52	40

12.

उत्पादन की इकाईयाँ	कीमत (रु.)	सीमांत आगम (रु.)	कुल आगम (रु.)
1	10	10	10
2	7	4	14
3	5	1	15
4	3	(-3)	12

13. वस्तु X की पूर्ति लोच = $\frac{\text{वस्तु } X \text{ की पूर्ति मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{वस्तु } X \text{ की कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$

$$= \frac{\frac{500 - 400}{400} \times 100}{20\%} = \frac{25\%}{20\%} = 1.25$$

वस्तु X की पूर्ति लोच = वस्तु Y की पूर्ति लोच

$1.25\% = \frac{\text{वस्तु } Y \text{ की पूर्ति मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{वस्तु } Y \text{ की कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$

$$= \frac{\text{वस्तु } Y \text{ की पूर्ति मात्रा में प्रतिशत कमी}}{8\%}$$

वस्तु Y की पूर्ति मात्रा में प्रतिशत कमी

$$= 1.25\% \times 8\% = 10\%.$$

परीक्षा उपयोगी प्रश्न

1 अंक वाले प्रश्न उत्तर

प्र. 1. उत्पादन फलन का अर्थ बताइए।

उत्तर. आगतों और निर्गतों के बीच के संबंध को बताने वाला उत्पादन फलन कहलाता है।

प्र. 2. जब कुल उत्पाद घटती दर से बढ़ता है तब सीमांत उत्पाद में क्या परिवर्तन होंगे?

उत्तर. जब कुल उत्पाद घटती दर से बढ़ता है तब सीमांत उत्पाद घटता है लेकिन धनात्मक रहता है।

प्र. 3. समस्तर बिन्दु किसे कहते हैं?

उत्तर. जिस बिन्दु पर $TR = TC$ या $AR = AC$ होता है उसे समस्तर बिंदु कहते हैं।

प्र. 4. यदि कीमत में परिवर्तन होने पर वस्तु की मात्रा नहीं बदलती तो पूर्ति की लोच क्या होगी?

उत्तर. पूर्ति की लोच शून्य के बराबर होगी।

3-4 अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. कारक के वर्धमान प्रतिफल की अवस्था में कुल उत्पाद के व्यवहार की व्याख्या संख्यात्मक उदाहरण की सहायता कीजिए।

उत्तर. वर्धमान प्रतिफल कारक के प्रतिफल नियम की प्रथम अवस्था है जब उत्पादन में वृद्धि हेतु किसी एक परिवर्ती कारक की इकाइयों को लगातार बढ़ाया जाता है तो परिवर्ती कारक का कुल भौतिक उत्पाद एक निश्चित अवस्था तक बढ़ती दर से बढ़ता है।

मशीन	श्रमिक	कुल भौतिक उत्पाद
1	1	10
1	2	24
1	3	42

प्र. 2. कुल बंधी लागत व कुल परिवर्ती लागत के बीच उदाहरण की सहायता से अन्तर कीजिए।

उत्तर. **कुल बंधी लागत**

1. यह उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर समान रहती है अर्थात् उत्पादन के बढ़ने अथवा घटने पर भी स्थिर रहती है।
2. उत्पादन के शून्य स्तर पर भी यह शून्य नहीं होती।
3. इसका वक्र x अक्ष के समान्तर होता है।
4. उदाहरण – किराया, स्थाई कर्मचारी का वेतन।

कुल परिवर्ती लागत

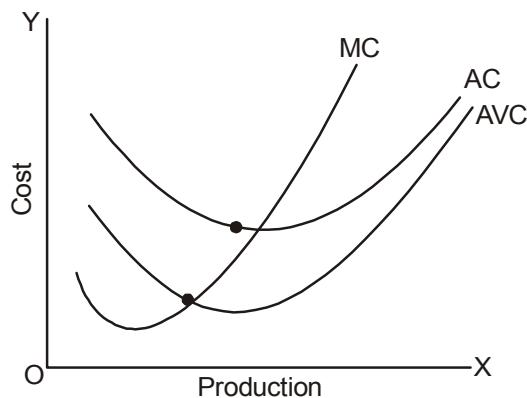
1. यह उत्पादन की मात्रा के अनुसार बढ़ने पर यह बढ़ जाती है तथा उत्पादन में कमी आने पर यह घट जाती है।
2. उत्पादन के शून्य स्तर पर यह शून्य होती है।

3. इसका वक्र कुल लागत वक्र के समान्तर होता है।

4. उदाहरण - दैनिक मजदूरी व कच्चे माल की लागत।

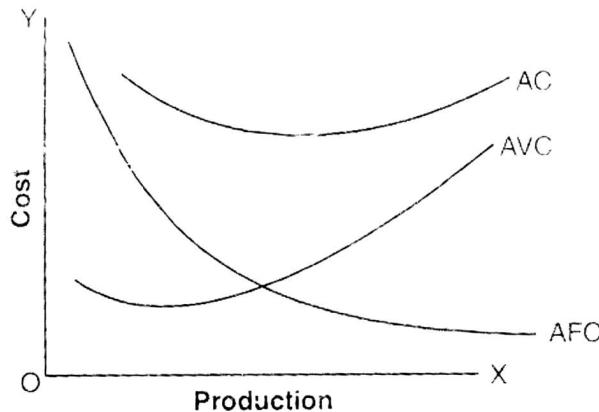
प्र. 3. एक ही वक्र पर औसत कुल लागत, औसत परिवर्ती लागत तथा सीमान्त लागत को प्रदर्शित कीजिए/अथवा इनके मध्य सम्बन्ध स्पष्ट कीजिए।

उत्तर.



1. MC, AC व AVC को उनके न्यूनतम बिन्दु पर काटती है।
2. MC के कटाव बिन्दु से पूर्व AC व AVC दोनों घटती हैं तथा MC से अधिक होती हैं किन्तु कटाव बिन्दु के बाद AC व AVC बढ़ने लगती है। इस स्थिति में MC, AC व AVC से अधिक हो जाती है।
3. उत्पादन बढ़ने के साथ-साथ AC व AVC का अन्तर कम होता चला जाता है किन्तु यह अन्तर कभी शून्य नहीं होता।

प्र. 4. औसत कुल लागत, औसत परिवर्ती लागत तथा औसत बंधी लागत को एक ही वक्र पर प्रदर्शित कीजिए / अथवा इनके मध्य सम्बन्ध स्पष्ट कीजिए।



1. AC, AVC व AFC योग होता है।
 2. उत्पादन वृद्धि से AC व AVC का अन्तर कम होने लगता है किन्तु AC व AFC के बीच अन्तर बढ़ता जाता है।
 3. AC व AVC के बीच लम्बवत् दूरी AFC के कारण होती है।
 4. AC व AVC कभी समान नहीं होती क्योंकि AFC कभी शून्य नहीं होता।
- प्र. 5.** औसत सप्राप्ति एवं सीमान्त सप्राप्ति के सम्बन्ध की व्याख्या कीजिए जब फर्म प्रति इकाई कीमत कम करके वस्तु की अतिरिक्त इकाई बेच सकती है।

- Ans.**
1. AR व MR दोनों घटते हैं।
 2. MR, AR की तुलना में तेजी दर से घटता है।
 3. MR घटते-घटते शून्य व ऋणात्मक हो जाता है किन्तु AR कभी शून्य नहीं होता।

- प्र. 6.** पूर्ति में परिवर्तन तथा पूर्ति की मात्रा में परिवर्तन के बीच अन्तर कीजिए।

उत्तर. पूर्ति की मात्रा में परिवर्तन

1. यह वस्तु की कीमत में परिवर्तन के कारण पूर्ति में होने वाला बदलाव है।
2. इस स्थिति में पूर्ति के अन्य निर्धारक तत्व अपरिवर्तित रहते हैं।
3. इस स्थिति में पूर्ति का नियम लागू होता है।
4. पूर्ति वक्र पर इस स्थिति में ऊपर अथवा नीचे की ओर संचलन होता है।

पूर्ति में परिवर्तन

1. यह वस्तु की कीमत के अलावा पूर्ति के अन्य निर्धारकों में परिवर्तन के कारण पूर्ति में होने वाला परिवर्तन है।
2. इस स्थिति में वस्तु की कीमत अपरिवर्तित रहती है।
3. इस स्थिति में पूर्ति का नियम क्रियाशील नहीं होता।
4. पूर्ति वक्र इस स्थिति में दायीं ओर या बायीं ओर खिसक जाता है।

प्र. 7. आगतों की कीमतों में परिवर्तन (वृद्धि/कमी) का वस्तु की पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर. **आगत कीमत में वृद्धि का पूर्ति पर प्रभाव :** आगतों की कीमतों में वृद्धि से वस्तु की पूर्ति में कमी आती है। क्योंकि आगतों की कीमतों में वृद्धि से उत्पादन लागत बढ़ जाती है। लागत में वृद्धि होने से उत्पादक का लाभ कम होता है जिससे वह वस्तु की पूर्ति कम कर देता है।

आगत कीमतों में कमी का पूर्ति पर प्रभाव : आगतों की कीमत में कमी से वस्तु की पूर्ति में वृद्धि होती है क्योंकि आगतों की कीमतों में कमी से वस्तु की उत्पादन लागत घट जाती है। लागत में कमी होने पर उत्पादक के लाभ बढ़ जाते हैं। लाभ में होने वाली वृद्धि उत्पादक को पूर्ति में वृद्धि के लिए प्रेरित करती है।

प्र. 8. सम्बन्धित वस्तुओं की कीमत में परिवर्तन (वृद्धि/कमी) का वस्तु की पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है। व्याख्या कीजिए।

उत्तर. सम्बन्धित वस्तुओं की कीमत में परिवर्तन का किसी वस्तु की पूर्ति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है जिसे निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है-

1. **सम्बन्धित अन्य उत्पाद की कीमत में वृद्धि :** किसी वस्तु से सम्बन्धित अन्य उत्पादों की कीमत में वृद्धि होती है तो इन उत्पादों का उत्पादन लाभप्रद हो जाएगा जिससे इनकी पूर्ति में वृद्धि होगी। परिणामतः दी गई वस्तु की पूर्ति में कमी आएगी।

2. **सम्बन्धित अन्य उत्पादन की कीमत में कमी :** यदि किसी वस्तु से सम्बन्धित अन्य उत्पादों की कीमत में कमी होती है तो इन उत्पादों के उत्पादन से होने वाले लाभ में कमी आएगी। जिससे अन्य उत्पादों के उत्पादन में कमी आएगी। परिणामतः दी गई वस्तु के तुलनात्मक लाभ बढ़ जायेंगे और इनकी पूर्ति में वृद्धि होगी।

प्र. 9. स्पष्ट कीजिए कि तकनीकी प्रगति वस्तु की पूर्ति पर क्या प्रभाव डालती है?

उत्तर. तकनीकी में होने वाला परिवर्तन उत्पादन लागत को प्रभावित करता है जिससे

वस्तु की पूर्ति प्रभावित होती है। यदि तकनीक में सुधार/प्रगति होती है अथवा फर्म श्रम प्रधान के स्थान पर पूँजी प्रधान तकनीक का प्रयोग करती है तो उत्पादन लागत में कमी आएगी तथा उत्पादन क्षमता में वृद्धि होगी। लाभ में होने वाली वृद्धि से पूर्ति में वृद्धि होगी।

प्र. 10. जैसे-जैसे उत्पादन में वृद्धि की जाती है, औसत स्थिर लागत का व्यवहार क्या रहता है? ऐसा क्यों होता है?

उत्तर. जैसे-जैसे उत्पादन में वृद्धि होती है, औसत स्थिर लागत लगातार गिरती है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर कुल स्थिर लागत समान रहती है तथा औसत स्थिर लागत ज्ञात करने के लिए कुल स्थिर लागत को उत्पादन की मात्रा से भाग किया जाता है।

प्र. 11. एक व्यक्ति किराए पर ली गई दुकान की मालिक भी है और मैनेजर भी। इस सूचना में अंतर्निहित लागत और स्पष्ट लागत की पहचान कीजिए। समझाइए।

उत्तर. स्वामी का अनुमानित वेतन अंतर्निहित लागत है क्योंकि यदि वह किसी और की फर्म में कार्य करता तो उसे वेतन मिलता।

दिया गया किराया स्पष्ट लागत है। क्योंकि यह आगत पर किया गया मौद्रिक व्यय है।

प्र. 12. पूर्ति तालिका क्या होती है? यदि किसी वस्तु के उत्पादन पर सरकार आर्थिक सहायता देती है तो उस वस्तु की पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है? समझाइए।

उत्तर. वह तालिका जो एक समय के दौरान विभिन्न कीमतों पर पूर्ति की गई मात्रा को दर्शाती है, पूर्ति तालिका कहलाती है।

सरकार द्वारा दी गई आर्थिक सहायता से लागत के अपरिवर्तित रहने पर लाभ बढ़ जाते हैं। इसके फलस्वरूप पूर्ति बढ़ जाती है।

6 अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. परिवर्ती अनुपातों के नियम की व्याख्या रेखाचित्र / अनुसूची की सहायता से कीजिए।

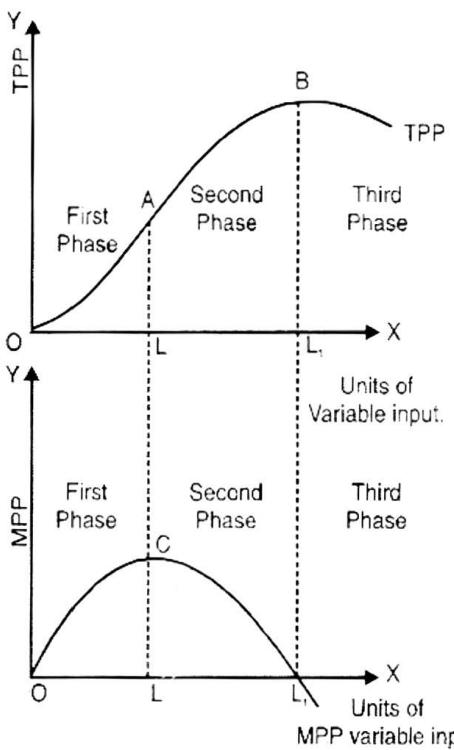
अथवा

उत्पादन में वृद्धि हेतु जब किसी एक कारक की इकाईयों को लगातार बढ़ाया जाता है उस स्थिति में कुल उत्पाद के व्यवहार की व्याख्या कीजिए। रेखाचित्र व अनुसूची का प्रयोग कीजिए।

उत्तर. परिवर्ती अनुपातों का नियम यह स्पष्ट करता है कि किसी परिवर्ती कारक की इकाईयों में लगातार वृद्धि का भौतिक उत्पादन पर क्या प्रभाव पड़ता है। अल्पकाल में जब उत्पाद वृद्धि हेतु स्थिर कारकों के साथ किसी एक परिवर्ती कारक की इकाईयों को लगातार बढ़ाया जाता है तब भौतिक उत्पाद में निम्न परिवर्तन आते हैं-

1. कुल भौतिक उत्पाद बढ़ती दर से बढ़ता है तथा सीमान्त उत्पाद में भी वृद्धि होती है और यह अधिकतम हो जाता है।
2. कुल भौतिक उत्पाद घटती दर से बढ़ता है तथा सीमान्त उत्पाद घटने लगता है और घटते-घटते शून्य हो जाता है।
3. कुल भौतिक उत्पाद घटने लगता है और सीमान्त उत्पाद ऋणात्मक हो जाता है।

मशीन	श्रम की इकाईयाँ	कुल भौतिक उत्पाद (इकाई में)	सीमान्त उत्पाद (इकाई में)
1	1	3	3
1	2	7	4
1	3	12	5
1	4	16	4
1	5	19	3
1	6	21	2
1	7	22	1
1	8	22	0
1	9	21	-1



पहला चरण : कुल भौतिक उत्पाद A बिन्दु L तक बढ़ती दर से बढ़ता है। सीमान्त उत्पाद बढ़ते हुए बिन्दु C पर अधिकतम हो जाता है।

दूसरा चरण : कुल भौतिक उत्पाद B बिन्दु L₁ तक घटती दर से बढ़ते हुए अधिकतम हो जाता है। सीमान्त उत्पाद घटकर D बिन्दु पर शून्य हो जाता है।

तीसरा चरण : B बिन्दु के पश्चात् कुल भौतिक उत्पाद घटने लगता है। सीमान्त उत्पाद ऋणात्मक हो जाता है।

ध्यान देने योग्य बातें :

- उपरोक्त प्रश्न का उत्तर लिखते समय ध्यान रखने योग्य मुख्य बिन्दु प्रश्न-पत्र में यदि उपरोक्त प्रश्न के स्पष्टीकरण हेतु यदि अनुसूची का प्रयोग करने का निर्देश हो तो रेखाचित्र न बनाएँ।
- यदि प्रश्न में उपरोक्त प्रश्न की व्याख्या हेतु कुल भौतिक उत्पाद का व्यवहार ही स्पष्ट करने का निर्देश हो तो सीमान्त उत्पाद की व्याख्या व अनुसूची तथा रेखाचित्र में सीमान्त उत्पाद का वर्णन न करें।

□ यदि प्रश्न-पत्र में उपरोक्त प्रश्न की व्याख्या हेतु सीमान्त उत्पाद का व्यवहार ही स्पष्ट करने का निर्देश हो तो कुल भौतिक उत्पाद के व्यवहार की व्याख्या व अनुसूची तथा रेखाचित्र में कुल भौतिक उत्पाद का वर्णन न करें।

प्र. 2. सीमान्त सम्प्राप्ति व सीमान्त लागत विचारधारा का प्रयोग करते हुए उत्पादक सन्तुलन की शर्तों की व्याख्या कीजिए। रेखाचित्र, तालिका का प्रयोग कीजिए।

उत्तर. उत्पादक सन्तुलन से अभिप्राय ऐसी अवस्था से है जब उत्पादक अपने दिए गए साधनों की सहायता से उत्पादन के उस स्तर को प्राप्त करता है जहाँ उसे प्राप्त होने वाले लाभ अधिकतम होते हैं। सीमान्त सम्प्राप्ति व सीमान्त लागत विचारधारा के अनुसार उत्पादक सन्तुलन निर्धारण की प्रमुख शर्तें निम्नलिखित हैं-

1. सीमान्त सम्प्राप्ति व सीमान्त लागत बराबर हो।
2. सीमान्त लागत बढ़ती हुई हो।
3. सन्तुलन स्तर के पश्चात उत्पाद वृद्धि से सीमान्त लागत सम्प्राप्ति से अधिक हो जाए।

उत्पादक संतुलन निर्धारण का रेखाचित्र व तालिका द्वारा स्पष्टीकरण

उत्पादन की इकाईयाँ	सीमान्त सम्प्राप्ति (रूपये में)	सीमान्त लागत (रूपये में)
1	4	5
2	4	4
3	4	3
4	4	4
5	4	5

OR

उत्पादन की इकाईयाँ	सीमान्त सम्प्राप्ति (रूपये में)	सीमान्त लागत (रूपये में)
1	10	5
2	8	4
3	6	3
4	4	4
5	2	5

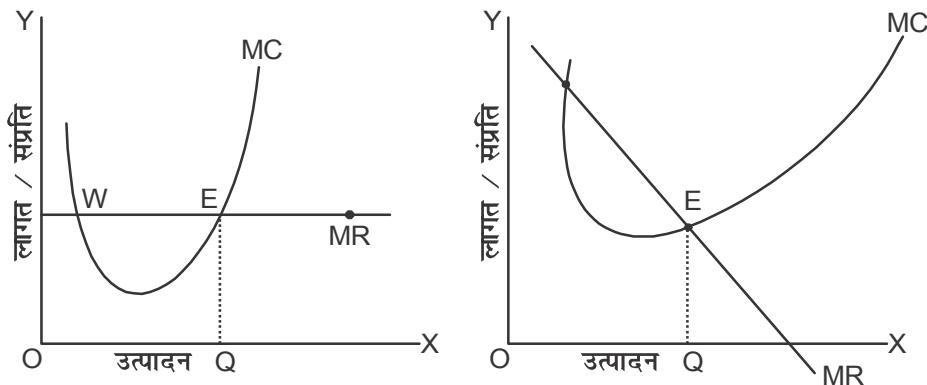
दोनों तालिका व रेखाचित्रों में से किसी एक प्रयोग करें।

सन्तुलन शर्तों की व्याख्या-

- (1) सीमान्त लागत जब सीमान्त सम्प्राप्ति से कम होती है उस अवस्था में उत्पादक को प्राप्त होने वाले लाभ बढ़ते हैं। लाभ में होने वाली वृद्धि उत्पादक को अधिक उत्पादन करने के लिए प्रेरित करती है और उत्पादक उत्तरोत्तर संतुलन की अवस्था को प्राप्त कर लेता है।
- (2) जब सीमान्त लागत सीमान्त सम्प्राप्ति से अधिक हो जाती है उस स्थिति में उत्पादक को प्राप्त होने वाले लाभ कम होने लगते हैं।

उपरोक्त प्रश्न के उत्तर हेतु यदि प्रश्न-पत्र में तालिका हेतु निर्देश हो तो रेखाचित्र का प्रयोग न करें। इसके विपरीत यदि रेखाचित्र के प्रयोग हेतु निर्देश हो तो तालिका का प्रयोग न करें।

उत्पादक सन्तुलन -रेखाचित्र



इकाई-IV

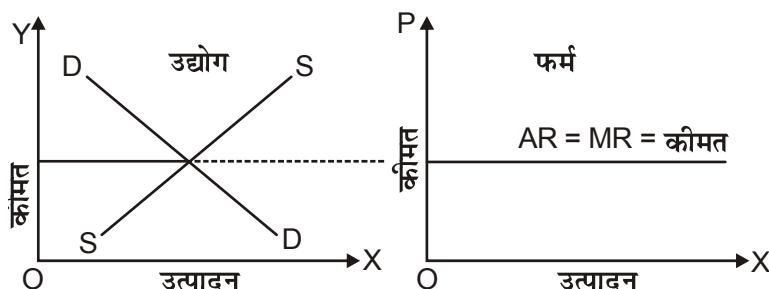
बाजार के प्रमुख रूप तथा पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत निर्धारण

स्मरणीय बिन्दु

- बाजार से अभिप्राय एक ऐसी व्यवस्था से है जिसमें एक वस्तु के क्रेता व विक्रेता के क्रय-विक्रय हेतु एक-दूसरे के सम्पर्क में रहते हैं।

बाजार के प्रमुख रूप:

1. पूर्ण प्रतियोगिता
 2. एकाधिकार
 3. एकाधिकारी प्रतियोगिता
 4. अल्पाधिकार पूर्ण प्रतियोगिता
- पूर्ण प्रतियोगिता में प्रति इकाई कीमत स्थिर रहने के कारण औसत व सीमांत संप्राप्ति समान रहते हैं। अतः इनके वक्र Ox -अक्ष के समांतर होते हैं।



- पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत निर्धारण उद्योग द्वारा किया जाता है जो कि माँग एवं पूर्ति की शक्तियों से प्रभावित होता है। समरूप वस्तु होने के कारण कोई भी

व्यक्तिगत फर्म या उपभोक्ता किसी वस्तु की कीमत को प्रभावित नहीं कर पाता। अतः उद्योग कीमत निर्धारक तथा फर्म कीमत स्वीकारक होती है।

पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएँ

- (a) क्रेताओं एवं विक्रेताओं की अत्यधिक संख्या
- (b) फर्मों के बाजार में स्वतंत्र प्रवेश एवं बहिर्गमन
- (c) समरूप उत्पाद
- (d) बाजार का पूर्ण ज्ञान।

एकाधिकार बाजार

- एक ऐसी बाजार व्यवस्था जहाँ एक अकेली फर्म ऐसी वस्तु का उत्पादन करता हो जिसका कोई निकट स्थानापन्न उपलब्ध न हो।

विशेषताएँ :

- (a) एक विक्रेता
- (b) नए फर्मों के प्रवेश पर प्रतिबंध
- (c) निकट स्थानापन्न वस्तु का अभाव
- (d) कीमत विभेद।

एकाधिकारिक प्रतियोगिता

- एक ऐसी बाजार व्यवस्था जिसमें क्रेताओं एवं विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है तथा विक्रेता विभेदीकृत वस्तुओं को बेचते हैं जो रंग, आकार व रूप में एक-दूसरे से भिन्न होती हैं।

विशेषताएँ :

- (a) क्रेता व विक्रेता की संख्या अधिक
- (b) वस्तु विभेद : वस्तुएँ विभेदीकृत होती हैं तथा एक-दूसरे के पूर्ण स्थानापन्न न होकर निकट स्थानापन्न होते हैं।

- (c) विक्रय लागत-वस्तुओं के विज्ञापन एवं विक्रय प्रोत्साहन पर होने वाले व्यय
- (d) फर्मों के प्रवेश एवं निकास पर कोई रोक नहीं।

अल्पाधिकार

- अल्पाधिकार बाजार का ऐसा स्वरूप है जिसमें वस्तु की कुछ बड़ी फर्म होती हैं। सभी फर्म वस्तु की बाजार पूर्ति का एक निश्चित मात्रा में उत्पादन करती है।

विशेषताएँ

- (अ) सभी फर्में समरूप या विभेदात्मक वस्तुओं का उत्पादन करती हैं।
- (ब) कुछ बड़ी फर्में
- (स) अल्पाधिकार बाजार में नई फर्म का प्रवेश असंभव नहीं लेकिन कठिन होता है।
- (द) अल्पाधिकार बाजार में मांग वक्र अनिश्चित होता है।
- (इ) अल्पाधिकार बाजार में कीमत तथा मात्रा निर्धारण हेतु फर्मों में अंतर्निर्भरता होती है।
- अल्पाधिकार को निम्न भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है-
 - (1) **सहयोगी अल्पाधिकार** : अल्पाधिकार का वह रूप जिसमें सभी फर्म आपसी सहयोग के आधार पर उत्पादन की मात्रा तथा कीमत निर्धारित करती है।
 - (2) **असहयोगी अल्पाधिकार** : अल्पाधिकार का वह रूप जिसमें कीमत तथा उत्पाद की मात्रा निर्धारित करते समय फर्मों के बीच सहयोगी व्यवहार की अपेक्षा प्रतियोगी व्यवहार होता है तथा प्रत्येक फर्म अपनी प्रतियोगी फर्मों की प्रतिक्रिया को ध्यान में रखती है।
 - (3) **पूर्ण अल्पाधिकार** में सभी फर्में सजातीय वस्तुओं का उत्पादन करती है तथा अपूर्ण अल्पाधिकार में विजातीय वस्तुओं का।

बाजार के विभिन्न रूपों में तुलनात्मक अध्ययन

तुलना का आधार	पूर्ण प्रतियोगिता	एकाधिकार	एकाधिकारिक प्रतियोगिता	अल्पाधिकार
1. विक्रेताओं की संख्या 2. उत्पाद/वस्तु की प्रकृति 3. फर्मों का प्रवेश तथा बहिर्गमन 4. फर्म का मांग वक्र 5. विक्रय लागत 6. कीमत नियंत्रण की स्थिति 7. मांग की लोच	1. अधिक संख्या 2. समरूप वस्तु 3. स्वतंत्र प्रवेश एवं बहिर्गमन 4. X-अक्ष के समान्तर तथा $AR = MR$ 5. आवश्यक नहीं 6. नियंत्रण नहीं 7. $ed < \infty$ पूर्णतया लोचदार	1. एक विक्रेता 2. वस्तु का स्थापन नहीं 3. प्रवेश तथा बहिर्गमन पर प्रतिवध 4. ऋणात्मक ढाल $AR > MR$ 5. आवश्यक नहीं कीमत पर पूर्ण नियंत्रण होता है। 6. कीमत पर सीमित नियंत्रण होता है। 7. $ed < 1$ बेलोचदार	1. अधिक संख्या 2. वस्तु विभेद 3. स्वतंत्र प्रवेश तथा बहिर्गमन 4. ऋणात्मक ढाल $AR > MR$ 5. बहुत अधिक 6. कीमत पर सीमित नियंत्रण होता है। 7. $ed < 0$ लोचदार	1. सीमित बड़े विक्रेता 2. सटरूप व विभेदीकृत 3. प्रवेश तथा बहिर्गमन पर प्रतिवध 4. अनिर्धारणीय 5. अधिक 6. कीमत कठोरता 7. निर्धारण नहीं

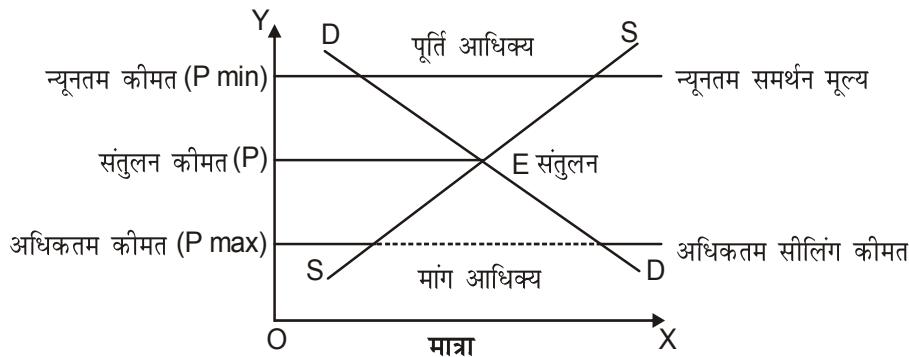
बाजार के विभिन्न रूपों में माँग वक्र

- **संतुलन कीमत :** वह कीमत है जिस पर बाजार मांग तथा बाजार पूर्ति बराबर होते हैं।
- **बाजार संतुलन :** वह अवस्था है जिसमें बाजार मांग तथा बाजार पूर्ति बराबर होते हैं। बाजार में अतिरिक्त मांग या अतिरिक्त पूर्ति की स्थिति का अभाव होता है।

माँग एवं पूर्ति वक्रों का अनुप्रयोग :

उच्चतम कीमत तथा न्यूनतम कीमत का निर्धारण

- जब सरकार ऐसा देखती है कि आवश्यक वस्तुओं की स्थिति में संतुलन कीमत इतनी अधिक हो जाती है कि एक आम उपभोक्ता उस कीमत पर वस्तु नहीं खरीद पाता। ऐसी स्थिति में सरकार एक अधिकारिक कीमत निर्धारण करती है जो संतुलन कीमत से कम होती है। साथ ही राशन दुकानों के माध्यम से आवश्यक वस्तुओं को बाजार में उपलब्ध कराती है।
- दूसरी ओर न्यूनतम कीमत / समर्थित मूल्य निर्धारित करके उत्पादकों के हितों की रक्षा करती है। जब वस्तुओं का उत्पादन इतना अधिक हो जाता है कि संतुलन कीमत अत्यधिक निम्न हो जाती है, तो ऐसी स्थिति में उत्पादकों, किसानों को हानि होती है। तब सरकार न्यूनतम समर्थित मूल्य का निर्धारण करती है, जो संतुलन कीमत से अधिक होती है।



बहुविकल्पीय प्रश्न (1 अंक)

1. किस बाजार में $AR = MR$ होता है-

(a) एकाधिकार	(b) पूर्ण प्रतियोगिता
(c) एकाधिकार प्रतियोगिता	(d) अल्पाधिकार
2. किस बाजार में नये फर्मों के प्रवेश पर प्रतिबंध है-

(a) पूर्ण प्रतियोगिता	(b) एकाधिकार प्रतियोगिता
(c) एकाधिकार	(d) उपरोक्त में से कोई नहीं।
3. किस बाजार में फर्म कीमत स्वीकारक होती है-

(a) पूर्ण प्रतियोगिता	(b) एकाधिकार
(c) एकाधिकारिक प्रतियोगिता	(d) अल्पाधिकार
4. अल्पाधिकार में

(a) विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है।	(b) एक विक्रेता
(c) अल्प विक्रेता	(d) उपरोक्त में से कोई नहीं।
5. जिस कीमत पर उपभोक्ता वस्तु खरीदने का इच्छुक हो तथा विक्रेता बेचने को तैयार हो तो उस कीमत को कहते हैं-

(a) न्यूनतम कीमत	(b) अधिकतम कीमत
(c) संतुलन कीमत	(d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

6. जब एक एकाधिकारी फर्म विभिन्न उपभोक्ताओं को विभिन्न कीमतों पर एक ही वस्तु बेचता है, तो उसे कहते हैं-
- (a) मात्रा विभेद
 - (b) वस्तु विभेद
 - (c) कीमत विभेद
 - (d) उपभोक्ता विभेद।
7. संतुलन कीमत पर वस्तु की बेची तथा खरीदी जाने वाली मात्रा को कहते हैं-
- (a) अधिकतम मात्रा
 - (b) न्यूनतम मात्रा
 - (c) दोनों (a) तथा (b)
 - (d) संतुलन मात्रा
8. जब किसी दी हुई बाजार कीमत पर वस्तु की मांग उसके पूर्ति से अधिक हो जाती है तो उसे मांग आधिक्य कहते हैं। यहाँ दी हुई कीमत-
- (a) संतुलन कीमत से कम होती हैं।
 - (b) संतुलन कीमत से अधिक होती है।
 - (c) संतुलन कीमत से कम या बराबर होती है।
 - (d) संतुलन कीमत से अधिक या बराबर होती है।
9. अधिकतम सीमांत कीमत का अर्थ है-
- (a) अधिकतम खुदरा मूल्य
 - (b) अधिकतम कीमत जो क्रेता देना चाहता हो
 - (c) अधिकतम कीमत जिस पर विक्रेता बेचने का तैयार हो।
 - (d) अधिकतम कीमत जिसे उत्पादक/विक्रेता कानूनन वसूल करता है।
10. अल्पाधिकार की कौन सी विशेषता इसे अन्य बाजारों से अलग करती है।
(सही विकल्प चुनें)
- (a) फर्मों की अंतर्निर्भरता
 - (b) वस्तु विभेद
 - (c) विक्रय लागत
 - (d) क्रेताओं की संख्या अधिक
11. निम्नलिखित बाजारों में कौन सा बाजार वास्तविकता में नहीं होता (सही विकल्प चुनें)

- | | |
|-----------------------|----------------------------|
| (a) पूर्ण प्रतियोगिता | (b) एकाधिकार |
| (c) अल्पाधिकार | (d) एकाधिकारिक प्रतियोगिता |

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. (b); 2. (c); 3. (a); 4. (b); 5. (c); 6. (c); 7. (d); 8. (a); 9. (d); 10. (a); 11. (a).

3-4 अंक वाले प्रश्न

1. बाजार में निर्बाध प्रवेश की स्वतंत्रता पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म के लाभ पर क्या प्रभाव डालती है।
2. एकाधिकारी प्रतियोगिता का माँग वक्र पूर्ण प्रतियोगिता के माँग वक्र से किस प्रकार भिन्न होता है।
3. पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत फर्म कीमत स्वीकारक क्यों होती है?
4. पूर्ण प्रतियोगिता में बाजार का पूर्ण ज्ञान क्रेता के लिए किस प्रकार लाभदायक होता है, स्पष्ट कीजिए।
5. पूर्ण प्रतियोगिता में 'बड़ी संख्या में विक्रेता' विशेषता के महत्व/निहितार्थ समझाइए।
6. माँग तथा पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ेगा यदि बाजार में प्रचलित कीमत संतुलन कीमत से अधिक हो।
7. अल्पाधिकार बाजार एकाधिकार बाजार से किस प्रकार भिन्न है?
8. आधिक्य माँग को चित्र की सहायता से समझाइये।
9. अल्पाधिकार गठबंधन व गैर गठबंधन अल्पाधिकार में अंतर बताइये।
10. पूर्ण प्रतियोगी बाजार में संतुलन कीमत का निर्धारण किस प्रकार होता है? तालिका की सहायता से समझाइये।
11. समझाइये कि किसी वस्तु की संतुलन कीमत उसी उत्पादन स्तर पर क्यों निर्धारित होती है जिस पर उस वस्तु की माँग और पूर्ति बराबर होती है।
12. पूर्ण प्रतियोगिता में $MR = AR$, परन्तु एकाधिकार व एकाधिकारिक प्रतियोगिता

में $MR < AR$ क्यों होता है।

13. किस स्थिति में मांग में कमी होने पर भी वस्तु की कीमत में कमी नहीं होती।
14. एक अल्पाधिकार बाजार में फर्म परस्पर निर्भर क्यों रहती है?
15. निकटतम स्थानापन्न वस्तु की उपलब्धता किस प्रतियोगिता में पायी जाती है? यह कीमत पर क्या प्रभाव डालती है?
16. पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में 'फर्मों के प्रवेश और निकासी की स्वतंत्रता' के परिणाम समझाइए।
17. पूर्ण अल्पाधिकार तथा अपूर्ण अल्पाधिकार में अंतर स्पष्ट कीजिए।

6 अंक वाले प्रश्न

1. एकाधिकारिक प्रतियोगिता की विशेषताओं का वर्णन करो।
2. पूर्ण प्रतियोगिता में निम्नलिखित विशेषताएँ समझाइए।
 - (क) क्रेताओं और विक्रेताओं की बड़ी संख्या
 - (ख) समरूप उत्पाद
3. अल्पाधिकार की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
4. एक वस्तु का बाजार संतुलन में है। उस वस्तु की पूर्ति में 'वृद्धि' हो जाती है। इस परिवर्तन के कारण पड़ने वाले प्रभावों की श्रृंखला की व्याख्या कीजिए। एक संख्यात्मक उदाहरण दीजिए।
5. एक वस्तु का बाजार संतुलन में है। उस वस्तु की माँग और पूर्ति में एक साथ वृद्धि होती है। बाजार कीमत पर उसका प्रभाव समझाइए।
6. बाजार संतुलन का अर्थ समझाइए। उन परिवर्तनों की श्रृंखला की व्याख्या कीजिए, जो बाजार कीमत के संतुलन कीमत से अधिक होने पर होंगे।
7. चाय की कीमत में कमी कॉफी की संतुलन कीमत को कैसे प्रभावित करेंगी? प्रभावों की श्रृंखला समझाइए।
8. एक वस्तु की मांग में 'कमी' का उसकी संतुलन कीमत और मात्रा पर पड़ने

वाले प्रभावों की व्याख्या एक रेखाचित्र की सहायता से कीजिए।

9. मांग व पूर्ति में एक साथ कमी होने पर किस स्थिति में निम्न परिणाम प्राप्त होंगे।
 - (क) साम्य कीमत में कोई परिवर्तन नहीं।
 - (ख) संतुलन कीमत में कमी।
10. मान लें कि एक पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में आवश्यक वस्तुओं की कीमतें संतुलन कीमत से अत्यधिक हैं। एक सामान्य उपभोक्ता हेतु सुझाव दें कि संतुलन कीमत को कैसे निम्न स्तर पर लाया जा सकता है, जिससे आम उपभोक्ता वस्तु खरीद सकें।
11. मान लो कि सरकार एक वस्तु पर लगे उत्पाद शुल्क की दर को घटा दे तथा आर्थिक सहायता बढ़ा दे तो वस्तु के बाजार पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा। वक्र का उपभोग करके बताओ।

उत्तर (3-4 अंक वाले प्रश्नों के लिए संकेत)

13. क्योंकि वस्तु विशेष को बेचने वाली चंद फर्में होती हैं इसलिए आपसी मेल-जोल और सामूहिक व्यवहार नई फर्मों के प्रवेश करने से रोकने का प्रयास करते हैं।

6 अंक वाले प्रश्नों के लिए संकेत

7. स्थानापन वस्तु की कीमत में कमी होने पर उस वस्तु की मांग कम हो जायेगी अतः संतुलन कीमत कम हो जायेगी और स्थानापन वस्तु की कीमत बढ़ने पर वस्तु की संतुलन कीमत बढ़ जायेगी।

परीक्षाप्रयोगी प्रश्न

एक अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. बाजार संतुलन क्या है?

उत्तर. बाजार संतुलन से अभिप्राय उस अवस्था से होता है जब बाजार मांग बाजार पूर्ति के बराबर होती है।

प्र. 2. पूर्ण प्रतियोगिता को परिभाषित करें।

उत्तर. पूर्ण प्रतियोगिता से अभिप्राय एक ऐसी बाजार संरचना से होता है जहाँ बहुत बड़ी संख्या में क्रेता और विक्रेता बाजार शक्तियों द्वारा निर्धारित कीमत पर समरूप वस्तु का लेन-देन करते हैं।

प्र. 3. सगुट (कार्टेल) या व्यापार समूह क्या है?

उत्तर. व्यापार समूह कुछ फर्मों का समूह होता है जो आपस में मिलकर अपने उत्पादन और कीमत को तय करते हैं ताकि एकाधिकारी शक्ति का प्रयोग कर सकें।

प्र. 4. ‘उच्चतम कीमत’ को परिभाषित करें?

उत्तर. उच्चतम कीमत से अभिप्राय एक वस्तु की अधिकतम कीमत को संतुलन कीमत से कम स्तर पर तय करने से होता है।

प्र. 5. एक वस्तु की अतिरेग माँग (अधिक मांग) का अर्थ बताइये?

उत्तर. अतिरेक मांग से अभिप्राय उस अवस्था से होता है जब प्रचलित बाजार कीमत पर माँगी गई मात्रा पूर्ति की गई मात्रा से अधिक होती है।

3-4 अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. एक पूर्णतया प्रतियोगी बाजार में क्रेताओं की बड़ी संख्या से क्या परिणाम निकलता है? समझाइए।

- उत्तर.** इसका परिणाम यह होता है कि कोई भी अकेला क्रेता स्वयं बाजार कीमत को प्रभावित करने की स्थिति में नहीं होता क्योंकि वह वस्तु के कुल उत्पादन की नगण्य मात्रा खरीदता है।
- प्र. 2.** एक अल्पाधिकार बाजार में फर्म परस्पर निर्भर क्यों रहती हैं? समझाइए।
- उत्तर.** फर्मों की परस्पर निर्भरता का कारण यह है कि कोई भी फर्म कीमत और उत्पादन के बारे में कोई निर्णय विरोधी फर्मों की प्रतिक्रिया को ध्यान में रखकर ही लेती है।
- प्र. 3.** पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में फर्मों के प्रवेश और निकासी की स्वतंत्रता के परिणाम समझाइए।
- उत्तर.** उद्योग में मौजूद फर्म जब असामान्य लाभ प्राप्त कर रही होती है तो फर्म प्रवेश करती है, उससे उद्योग का उत्पादन बढ़ जाता है और बाजार कीमत घट जाती है। फलस्वरूप लाभ घट जाते हैं नई फर्मों का प्रवेश तब तक जारी रहता है जब तक कि असामान्य लाभ घटकर सामान्य लाभ (शून्य) न हो जाए। जब फर्मों की हानि होती है तो वे उद्योग को छोड़ने लगती हैं और हानि घटने लगती है। फर्मों का उद्योग से जाएगा तब तक जारी रहता है जब तक की हानि समाप्त न हो जाए।
- प्र. 4.** पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में बाजार के बारे में पूर्ण ज्ञान के परिणाम समझाइए।
- उत्तर.** बाजार के बारे में पूर्ण जानकारी का अर्थ है कि सभी क्रेताओं और विक्रेताओं को बाजार कीमत की पूर्ण जानकारी है। अतः कोई भी फर्म बाजार कीमत से भिन्न कीमत नहीं ले सकती और कोई भी क्रेता बाजार कीमत से अधिक कीमत नहीं देगा। अतः बाजार में एक ही कीमत रहेगी।
- प्र. 5.** एकाधिकार प्रतियोगिता के अन्तर्गत मांग वक्र एकाधिकार के अन्तर्गत मांग वक्र की तुलना में अधिक लोचदार क्यों होता है? समझाइए।
- उत्तर.** जिस वस्तु का निकटतम स्थानापन्न होता है उसकी मांग अधिक लोचदार होती है तथा एकाधिकार प्रतियोगिता के अन्तर्गत उत्पादित वस्तु का निकटतम स्थानापन्न होता है। अतः मांग वक्र अधिक लोचदार होता है तथा एकाधिकार वस्तु का निकटतम स्थानापन्न नहीं होता इसलिए मांग वक्र कम लोचदार होता है।

प्र. 6. एक फर्म पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत कीमत स्वीकारक तथा एकाधिकार में कीमत निर्धारक क्यों होती है? संक्षेप में समझाइए।

उत्तर. पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म कीमत स्वीकारक होती है। इसके निम्नलिखित कारण हैं-

1. **फर्मों की संख्या :** पूर्ण प्रतियोगिता में फर्मों की संख्या इतना अधिक होती है कि कोई भी एक फर्म अपनी स्वयं की पूर्ति में कोई प्रभावपूर्ण परिवर्तन नहीं कर सकती। अतः बाजार कीमत अप्रभावित रहती है।
2. **समरूप वस्तु :** पूर्ण प्रतियोगिता में एक उद्योग की सभी फर्मों का उत्पादन समरूप होता है अतः कीमत भी समान रहती है।
3. **पूर्ण जानकारी :** सभी क्रेताओं तथा विक्रेताओं को बाजार कीमत की पूर्ण जानकारी होती है, अतः कोई भी फर्म बाजार कीमत से भिन्न कीमत नहीं ले सकती। अतः बाजार में एक ही कीमत होगी।

एकाधिकार में फर्म कीमत निर्धारक होती है। इसके निम्नलिखित कारण हैं-

1. एकाधिकार में एक ही फर्म होती है। अतः पूर्ति पर उसका पूर्ण नियन्त्रण होता है।
2. एकाधिकार में वस्तु का कोई निकट स्थानापन्न नहीं होता। इसलिए वस्तु की मांग कम लोचदार होती है।
3. नई फर्मों के प्रवेश पर कानूनी, तकनीकी तथा प्राकृतिक प्रतिबंध होते हैं इसलिए बाजार पूर्ति में वृद्धि का कोई डर नहीं होता।

प्र. 7. कीमत विभेद तथा वस्तु विभेद के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. **कीमत विभेद :** वह स्थिति है जिसमें एकाधिकारी एक ही वस्तु के विभिन्न क्रेताओं से भिन्न-भिन्न कीमत लेता है। सामान्यतया ये लाभ को अधिकतम करने के लिए किया जाता है।

वस्तु विभेद : विभेद वह स्थिति है जिसमें एकाधिकार प्रतियोगिता के अन्तर्गत विभिन्न उत्पादन अपनी वस्तु को उसकी बनावट आकार, पैकिंग, ट्रेडमार्क या ब्राण्ड नाम के अनुसार विभेदीकृत या भिन्न प्रकार का बनाने का प्रयत्न करते हैं। यह वे इसलिए करते हैं ताकि बाजार में विरोधी फर्मों से ग्राहकों को अपने उत्पाद की ओर आकर्षित कर सकें।

प्र. 8. पूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकार में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. **पूर्ण प्रतियोगिता**

1. क्रेताओं तथा विक्रेताओं की अधिक संख्या
2. वस्तु समरूप होती है।
3. फर्मों के प्रवेश तथा बहिर्गमन की स्वतन्त्रता।
4. कीमत पर कोई नियन्त्रण नहीं होता।

एकाधिकार

1. एक विक्रेता तथा अधिक क्रेता।
2. वस्तु का निकट स्थानापन्न नहीं होता।
3. फर्मों के प्रवेश पर प्रतिबन्ध।
4. कीमत पर पूर्ण नियन्त्रण नहीं होता।

प्र. 9. एकाधिकार तथा एकाधिकारी प्रतियोगिता में भेद स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. **एकाधिकार**

1. एक विक्रेता तथा अधिक क्रेता।
2. वस्तु का निकट स्थानापन्न नहीं होता।
3. फर्मों के प्रवेश पर प्रतिबन्ध।
4. विक्रय लागत शून्य

एकाधिकारी प्रतियोगिता

1. क्रेताओं तथा विक्रेताओं की अधिक संख्या
2. विभेदीकृत वस्तु होती है।
3. फर्मों के प्रवेश तथा बहिर्गमन की स्वतंत्रता।
4. ऊँची विक्रय लागतें होती हैं।

प्र. 10. अल्पाधिकार किसे कहते हैं? अल्पाधिकार की विशेषताएँ बताइए?

उत्तर. अल्पाधिकार : यह बाजार का वह रूप है जिसमें किसी वस्तु के कुछ ही बड़े विक्रेता और बड़ी संख्या में क्रेता होते हैं। कीमत तथा उत्पादन नीति के सन्दर्भ में विक्रेताओं के बीच अन्तनिर्भरता पायी जाती है।

अल्पाधिकार की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. कुछ ही फर्में
2. अन्तनिर्भरता की ऊँची मात्रा
3. गैर-कीमत प्रतियोगिता
4. फर्मों के प्रवेश की बाधाएँ
5. व्यापार-गुटों का निर्माण

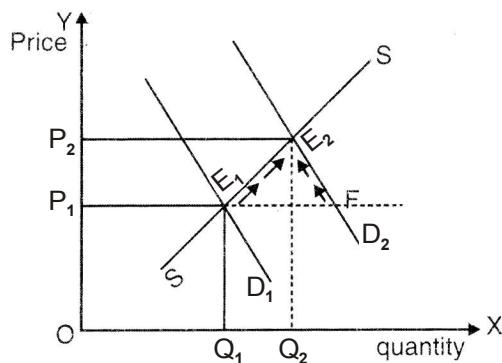
6 अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. सहयोगी और गैर-सहयोगी अल्पाधिकार के बीच अन्तर बताइए। समझाइए कि कैसे अल्पाधिकारी फर्म कीमत और उत्पादन के बारे में निर्णय लेने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर रहती हैं?

उत्तर. सहयोगी अल्पाधिकारी के अन्तर्गत फर्म कीमत और उत्पादन का स्तर निर्धारित करते समय एक-दूसरे के साथ सहयोग करती है जबकि गैर-सहयोगी अल्पाधिकार में फर्म एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्द्धा करती है। प्रत्येक फर्म अपने उत्पादन और कीमत के बारे में निर्णय लेते समय अपनी विरोधी फर्मों की सम्भव प्रतिक्रिया को ध्यान में रखती है। अतः फर्मों में परस्पर निर्भरता होती है। अन्य फर्मों की सम्भव प्रतिक्रिया के कारण अपने उत्पादन व कीमत में परिवर्तन करने के निर्णय पर पुनः विचार करना पड़ सकता है।

प्र. 2. एक वस्तु बाजार में है। उस वस्तु की मांग में वृद्धि हो जाती है। इस परिवर्तन के कारण होने वाले प्रभावों की शृंखला की व्याख्या कीजिए। रेखाचित्र का प्रयोग कीजिए।

उत्तर. मांग में वृद्धि के कारण मांग वक्र D_1 दायीं ओर खिसक जाती है। रेखाचित्र में D_2 मांग वक्र है। इससे दी हुई कीमत P_1 पर E_1F के बराबर मांग आधिक्य हो जाता है। इस कीमत पर उपभोक्ता वस्तु की उतनी मात्रा खरीदना चाहते हैं। इसलिए क्रेताओं में प्रतिस्पर्द्धा होती है जिससे कीमत बढ़ जाती है।



कीमत के बढ़ने से मांग घटने लगती है और पूर्ति बढ़ने लगती है जैसा कि रेखाचित्र में दिखाया गया है। इसमें परिवर्तन तब तक होते रहेंगे जब तक कि मांग और पूर्ति बराबर न हो जाए। मांग बढ़कर OQ_2 और कीमत बढ़कर OP_2 हो जाती है।

प्र. 3. एक वस्तु बाजार सन्तुलन में है। उस बाजार कीमत पर वस्तु की मांग तथा पूर्ति में एक साथ 'कमी' होती हैं। इसका प्रभाव समझाइए।

उत्तर. तीन संभावनाएँ हैं-

1. यदि मांग में सापेक्षिक (प्रतिशत) कमी पूर्ति में कमी से अधिक है तो कीमत घटेगी। बाजार में पूर्ति आधिक्य होने के कारण कीमत घटेगी।
2. यदि मांग में सापेक्षित (प्रतिशत) कमी पूर्ति में कमी से कम है तो कीमत बढ़ेगी। बाजार में मांग आधिक्य होने के कारण कीमत बढ़ेगी।
3. यदि मांग में सापेक्षित (प्रतिशत) कमी पूर्ति में कमी के बराबर है तो कीमत अपरिवर्तित रहेगी। कीमत अपरिवर्तित रहने का कारण यह है कि बाजार में न तो मांग आधिक्य है और न ही पूर्ति आधिक्य।

प्र. 4. समझाइए कि किसी वस्तु की सन्तुलन कीमत उसी उत्पादन स्तर पर क्यों निर्धारित होती है जिस पर उस वस्तु की मांग और पूर्ति बराबर होती है?

उत्तर. यदि मांग पूर्ति से अधिक है तो क्रेता उतनी वस्तुएँ नहीं खरीद पाएँगे, जितनी वह खरीदना चाहते हैं अतः क्रेताओं में प्रतिस्पर्द्ध होगी, जिसके परिणामस्वरूप कीमत बढ़ने लगती है, जिसके कारण मांग गिरने लगती है तथा पूर्ति बढ़ने लगती है और यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक कि मांग और पूर्ति बराबर न हो जाए।

इसके विपरीत यदि पूर्ति, मांग से अधिक है तो विक्रेता उतनी वस्तुएँ नहीं बेच पायेंगे। जितनी वह बेचना चाहते हैं। अतः विक्रेताओं में प्रतिस्पर्द्ध होगी जिसके परिणाम स्वरूप कीमतें गिरने लगती हैं, जिसके कारण मांग बढ़ने लगती है तथा पूर्ति गिरने लगती है और यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है, जब तक कि मांग और पूर्ति बराबर न हो जाए।

अतः वस्तु की सन्तुलन कीमत उसी उत्पादन स्तर पर निर्धारित होती है जिस पर वस्तु की मांग तथा पूर्ति बराबर होती है।

इकाई-V

राष्ट्रीय आय एवं सम्बद्ध समाहार

स्मरणीय बिन्दु

- **वस्तुएँ** : अर्थशास्त्र में वस्तुएँ वे सभी भौतिक पदार्थ (मानव निर्मित) तथा सेवाएँ होती हैं जिनका कोई बाजार मूल्य होता है। वस्तुएँ दृश्य मर्दे होती हैं जैसे पुस्तक, पेन, वस्त्र आदि।
- **सेवाएँ** : वह आर्थिक क्रिया जो अदृश्य है, भण्डार नहीं की जा सकती तथा इसमें स्वामित्व नहीं होता। जैसे बैंकिंग, इंश्योरेंस, डाक सेवा आदि।
- **उपभोक्ता वस्तुएँ** : वे अंतिम वस्तुएँ जो प्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ता की मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। उपभोक्ता द्वारा क्रय की गई वस्तुएँ और सेवाएँ उपभोक्ता वस्तुएँ हैं।
- **पूँजीगत वस्तुएँ** : ये वे अंतिम वस्तुएँ हैं जो उत्पादन में सहायक होती हैं तथा आय सृजन के लिए प्रयोग की जाती है। उत्पादन प्रक्रिया में ये पूरी तरह समाप्त नहीं होती।
- **अंतिम वस्तुएँ** : वे वस्तुएँ जो उपभोग व निवेश के लिए उपलब्ध होती हैं ये पुनः बिक्री या मूल्य वृद्धि के लिए नहीं होती। उपभोक्ता द्वारा प्रयोग सभी सेवाएँ अंतिम वस्तुएँ होती हैं।
- **मध्यवर्ती वस्तुएँ** : वे वस्तुएँ हैं जिनकी एक ही वर्ष में पुनः बिक्री की जा सकती है या अंतिम वस्तुओं के उत्पादन में कच्चे माल के रूप में प्रयोग की जाती है। ये प्रत्यक्ष रूप से मानव आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करती। उत्पादक द्वारा प्रयोग की गई सेवाएँ जैसे वकील की सेवाएँ।
- **निवेश** : एक निश्चित समय में पूँजीगत वस्तुओं के स्टॉक में वृद्धि निवेश कहलाता है। इसे पूँजी निर्माण भी कहते हैं।
- **मूल्यहास** : सामान्य टूट-फूट या अप्रचलन के कारण अचल परिसंपत्तियों के

मूल्य में गिरावट को मूल्यहास या अचल पूँजी का उपभोग कहते हैं। मूल्यहास, स्थायी पूँजी के मूल्य को उसकी अनुमानित आयु (वर्षों में) से भाग करके ज्ञात किया जाता है।

सकल निवेश : एक निश्चित समयावधि में पूँजीगत वस्तुओं के स्टॉक में कुल वृद्धि सकल निवेश कहलाती है। इसमें मूल्यहास शामिल होता है।

निवल निवेश : एक अर्थव्यवस्था में एक निश्चित समयावधि में पूँजीगत वस्तुओं के स्टॉक में शुद्ध वृद्धि निवल निवेश कहलाता है। इसमें मूल्यहास शामिल नहीं होता है।

निवल निवेश = सकल निवेश - घिसावट (मूल्य हास)

आय के चक्रीय प्रवाह : अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के बीच वस्तुओं एवं सेवाओं एवं साधन सेवाओं तथा मौद्रिक आय के सतत प्रवाह को आय का चक्रीय प्रवाह कहते हैं। इसकी प्रकृति चक्रीय होती है क्योंकि न तो इसका कोई आरम्भिक बिन्दु है और न ही कोई अन्तिम बिन्दु। वास्तविक प्रवाह उत्पादित सेवाओं तथा वस्तुओं और साधन सेवाओं का प्रवाह दर्शाता है। मौद्रिक प्रवाह उपभोग व्यय और साधन भुगतान के प्रवाह को दर्शाता है।

स्टॉक : स्टॉक एक ऐसी मात्रा (चर) है जो किसी निश्चित समय बिन्दु पर मापी जाती है; जैसे राष्ट्रीय धन एवं सम्पत्ति, मुद्रा की आपूर्ति आदि।

प्रवाह : प्रवाह एक ऐसी मात्रा(चर) है जिसे समय अवधि में मापा जाता है; जैसे राष्ट्रीय आय आदि।

आर्थिक सीमा : यह सरकार द्वारा प्रशासित व भौगोलिक सीमा है जिसमें व्यक्ति, वस्तु व पूँजी का स्वतंत्र प्रवाह होता है।

आर्थिक सीमा क्षेत्र :

1. राजनैतिक, समुद्री व हवाई सीमा।
2. विदेशों में स्थित दूतावास, वाणिज्य दूतावास, सैनिक प्रतिष्ठान, राजनयिक भवन आदि।
3. जहाज तथा वायुयान जो दो देशों के बीच आपसी सहमति से चलाए जाते हैं।

4. मछली पकड़ने की नौकाएँ, तेल व गैस निकालने वाले यान तथा तैरने वाले प्लेटफार्म जो देशवासियों द्वारा चलाए जाते हैं।

- **सामान्य निवासी** : किसी देश का सामान्य निवासी उस व्यक्ति अथवा संस्था को माना जाता है जिसके आर्थिक हित उसी देश की आर्थिक सीमा में केन्द्रित हों जिसमें वह सामान्यतः एक वर्ष से रहता है।
- **उत्पादन का मूल्य** : एक उत्पादन इकाई द्वारा एक लेखा वर्ष में उत्पादित सभी वस्तुओं व सेवाओं का बाजार मूल्य उत्पादन का मूल्य कहलाता है।

$$\text{उत्पादन का मूल्य} = \text{बेची गई इकाई} \times \text{बाजार कीमत} + \text{स्टॉक में परिवर्तन।}$$
- **साधन आय** : उत्पादन के साधनों (श्रम, भूमि, पूँजी तथा उद्यम) द्वारा उत्पादन प्रक्रिया में प्रदान की गई सेवाओं से प्राप्त आय, साधन आय कहलाती है। जैसे, वेतन व मजदूरी, किराया, ब्याज आदि।
- **हस्तांतरण भुगतान** : यह एक पक्षीय भुगतान होते हैं जिनके बदले में कुछ नहीं मिलता है। बिना किसी उत्पादन सेवा के प्राप्त आय। जैसे वृद्धावस्था पेंशन, कर, छात्रवृत्ति आदि।
- **पूँजीगत लाभ** : पूँजीगत सम्पत्तियों तथा वित्तीय सम्पत्तियों के मूल्य में वृद्धि, जो समय बीतने के साथ होती है, यह क्रय मूल्य से अधिक मूल्य होता है। यह सम्पत्ति की बिक्री के समय प्राप्त होता है।
- **कर्मचारियों का पारिश्रमिक** : श्रम साधन द्वारा उत्पादन प्रक्रिया में प्रदान की गई साधन सेवाओं के लिए किया गया भुगतान (नगर व वस्तु) कर्मचारियों का पारिश्रमिक कहलाता है। इसमें वेतन, मजदूरी, बोनस, नियोजकों द्वारा सामाजिक सुरक्षा में योगदान शामिल होता है।
- **परिचालन अधिशेष** : उत्पादन प्रक्रिया में श्रम को कर्मचारियों का पारिश्रमिक का भुगतान करने के पश्चात् जो राशि बचती है। यह किराया, ब्याज व लाभ का योग होता है।

घरेलू समाहार

- **बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{MP})** : एक वर्ष की अवधि में देश के भौगोलिक सीमा के अन्तर्गत उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओं एवं

सेवाओं के बाजार मूल्यों के योग को बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद कहते हैं।

- बाजार कीमत पर निवल देशीय उत्पाद (NDP_{MP}) :

$$NDP_{MP} = GDP_{MP} - \text{मूल्यह्रास}$$

- देशीय आय (NDP_{FC}) : एक देश की घरेलू सीमा में एक लेखा वर्ष में उत्पादन कारकों की आय का योग, जो कारकों द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के बदले प्राप्त होती है को देशीय आय कहते हैं।

$$NDP_{FC} = GDP_{MP} - \text{मूल्यह्रास} - \text{निबल अप्रत्यक्ष कर।}$$

राष्ट्रीय समाहार

- बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP_{MP}) : एक देश के सामान्य निवासियों द्वारा एक वर्ष में देश की घरेलू सीमा व विदेशों में उत्पादित अंतिम वस्तुओं व सेवाओं के बाजार मूल्यों के योग को GNP_{MP} कहते हैं।

बाजार कीमत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद (NNP_{MP}):

$$NNP_{MP} = GNP_{MP} - \text{मूल्यह्रास}$$

- राष्ट्रीय आय (NNP_{FC}) : एक देश के सामान्य निवासियों द्वारा एक लेखा वर्ष में देश की घरेलू सीमा व शेष विश्व से अर्जित साधन आय का योग राष्ट्रीय आय कहलाती है।

$$NNP_{FC} = NDP_{FC} + NFIA = \text{राष्ट्रीय आय}$$

- **क्षरण** : आय के चक्रीय प्रवाह से निकाली गई राशि (मुद्रा के रूप में) की क्षरण कहते हैं; जैसे कर, बचत तथा आयात को क्षरण कहते हैं।
- **भरण** : आय के चक्रीय प्रवाह में डाली गई राशि (मुद्रा की मात्रा) को भरण कहते हैं; जैसे निवेश, सरकारी व्यय, निर्यात।

- **वर्धित मूल्य (मूल्यवृद्धि) :** किसी उत्पादन इकाई द्वारा निश्चित समय में किए गए उत्पादन के मूल्य तथा प्रयुक्त मध्यवर्ती उपभोग के मूल्य का अंतर वर्धित मूल्य कहलाता है।
- **दोहरी गणना की समस्या :** 'राष्ट्रीय आय आंकलन में जब किसी वस्तु का मूल्य एक से अधिक बार गणना की जाती है उसे दोहरी गणना कहते हैं। इससे राष्ट्रीय आय अधिमूल्यांकन दर्शाता है। इसलिए इसे दोहरी गणना की समस्या कहते हैं।

कुछ महत्वपूर्ण समीकरण

- $\text{सकल} = \text{निवल} (\text{शुद्ध}) + \text{मूल्यहास} (\text{स्थायी पूँजी का उपभोग})$
- $\text{राष्ट्रीय} = \text{घरेलू} + \text{विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय।}$
- $\text{बाजार कीमत} = \text{साधन लागत} + \text{निवल अप्रत्यक्ष कर (NIT)}$
- $\text{निवल अप्रत्यक्ष कर (NIT)} = \text{अप्रत्यक्ष कर} - \text{सहायिकी} (\text{आर्थिक सहायता})$
- $\text{विदेशों से शुद्ध साधन आय (कारक)} = \text{विदेशों से साधन आय} - \text{विदेशों से साधन आय}$

राष्ट्रीय आय अनुमानित (मापने) करने की विधियाँ

आय विधि

प्रथम चरण

साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद/निवल घरेलू साधन आय (NDP_{FC}) = कर्मचारियों का पारिश्रमिक + प्रचालन अधिशेष + स्वयं नियोजितों की मिश्रित आय।

द्वितीय चरण

साधन लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद / राष्ट्रीय आय = साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद + विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय।

$$NNP_{FC} = NDP_{FC} + NFIA$$

उत्पाद विधि / वर्धित मूल्य विधि

प्रथम चरण

बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद = प्राथमिक क्षेत्र द्वारा सकल वर्धित मूल्य + द्वितीयक क्षेत्र द्वारा सकल वर्धित मूल्य + तृतीयक क्षेत्र द्वारा सकल वर्धित मूल्य।

या

बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{MP}) = बिक्री + स्टॉक में परितर्वन - मध्यवर्ती उपभोग।

द्वितीय चरण

बाजार कीमत पर निवल घरेलू उत्पाद NDP_{MP} = बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद GDP_{MP} - मूल्यहास।

तृतीय चरण

साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद (NDP_{FC}) = बाजार कीमत पर निवल घरेलू उत्पाद (NDP_{MP}) - शुद्ध अप्रत्यक्ष कर (NIT)

चतुर्थ चरण

साधन लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद / राष्ट्रीय आय (NNP_{FC}) = साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद (NDP_{FC}) + विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय (NFIA)

व्यय विधि

प्रथम चरण

बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद = निजी अंतिम उपयोग व्यय + सरकारी अंतिम उपयोग व्यय + सकल घरेलू पूँजी निर्माण + शुद्ध/निवल निर्यात्

$$GDP_{MP} = C + G + I + (X - M)$$

द्वितीय चरण

बाजार कीमत पर निवल घरेलू उत्पाद (NDP_{MP}) = बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{MP}) – मूल्यहास।

तृतीय चरण

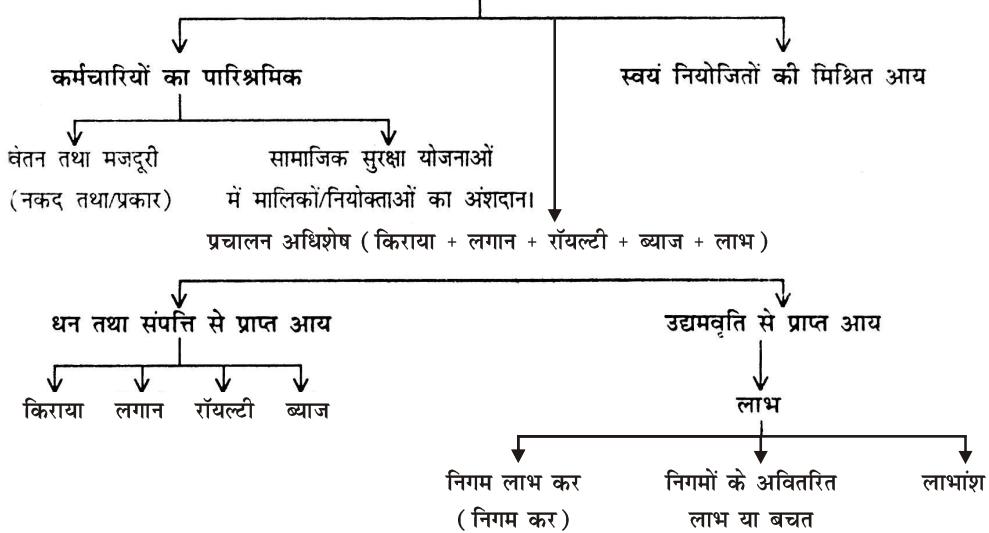
साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद (NDP_{FC}) = बाजार कीमत पर निवल घरेलू उत्पाद (NDP_{MP}) – शुद्ध अप्रत्यक्ष कर (NIT)

चतुर्थ चरण

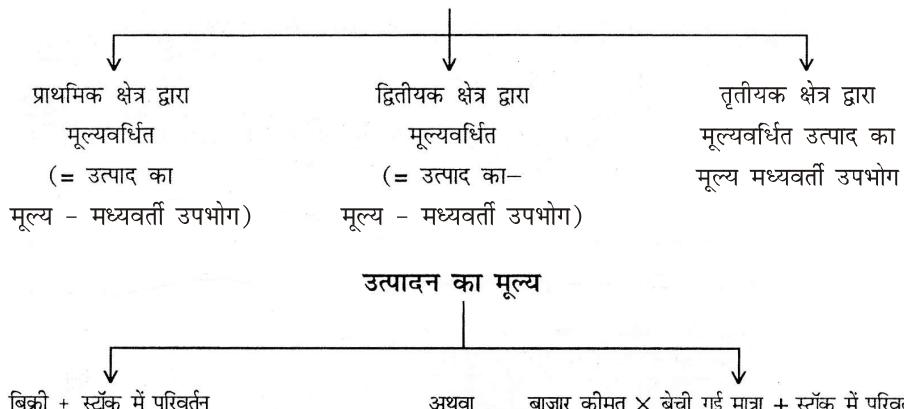
साधन लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद/राष्ट्रीय आय (NNP_{FC}) = साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद (NDP_{FC}) + विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय (NFIA)

- **विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय (NFIA) :** देश के सामान्य निवासियों द्वारा विदेशों को प्रदान की गई साधन सेवाओं से प्राप्त आय तथा विदेशों को दी गई साधन आय के बीच के अंतर को विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय कहते हैं। इसके निम्न घटक होते हैं–
 1. कर्मचारियों का निवल पारिश्रमिक
 2. सम्पत्ति तथा उद्यमवृत्ति से निवल आय तथा
 3. विदेशों से निवासी कम्पनियों की शुद्ध प्रतिधारित आय।
- **चालू हस्तांतरण :** वह गैर-अर्जित आय जो देने वाले (Doner) के चालू आय में से निकलता है और प्राप्त करने वाले (Recipient) के चालू आय में जोड़ा जाता है, उसे चालू हस्तांतरण आय कहते हैं।
- **पूँजीगत हस्तांतरण :** वह गैर-अर्जित आय जो देने वाले के धन तथा पूँजी से निकलता है तथा प्राप्त करने वाले के धन तथा पूँजी में शामिल होता है, उसे पूँजीगत हस्तांतरण कहते हैं।

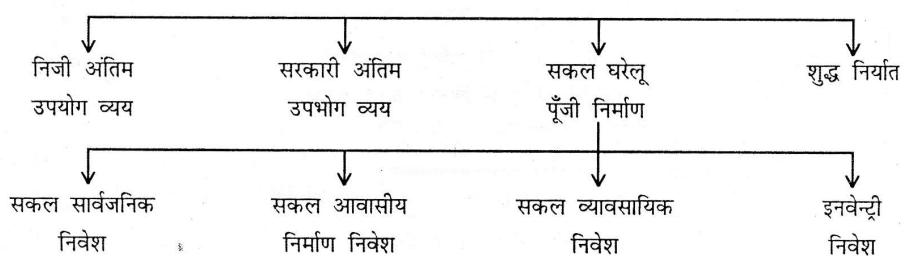
आय विधि के अनुसार निवल घरेलू उत्पाद के घटकों का संक्षिप्तसार



मूल्यवर्धित या उत्पाद विधि के अनुसार घटकों का संक्षिप्त सार।



व्यय विधि के अनुसार बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद के घटकों का संक्षिप्तसार



- **सकल घरेलू उत्पाद एवं कल्याण :** सामान्यतः सकल घरेलू उत्पाद एवं कल्याण में प्रत्यक्ष संबंध होता है। उच्चतर GDP का अर्थ है वस्तुओं एवं सेवाओं के अधिक उत्पादन का होना। इसका तात्पर्य है कि वस्तुओं एवं सेवाओं की अधिक उपलब्धता। परन्तु इसका अर्थ यह निकालना कि लोगों का कल्याण पहले से अच्छा है, आवश्यक नहीं है। दूसरे शब्दों में, उच्चतर GDP का तात्पर्य लोगों के कल्याण में वृद्धि का होना, आवश्यक नहीं है।

GDP दो प्रकार का होता है।

- वास्तविक GDP :** एक देश के भौगोलिक सीमा के अंतर्गत एक वर्ष की अवधि में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं का, यदि मूल्यांकन आधार वर्ष की कीमतों (स्थिर कीमतों) पर किया जाता है तो उसे वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद कहते हैं। इसे स्थिर कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद भी कहते हैं। यह केवल उत्पादन मात्रा में परिवर्तन के कारण परिवर्तित होता है इसे आर्थिक विकास का एक सूचक माना जाता है।
- मौद्रिक GDP :** एक देश के भौगोलिक सीमा के अंतर्गत एक वर्ष की अवधि में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं का, यदि मूल्यांकन चालू वर्ष की कीमतों (चालू कीमतों) पर किया जाता है तो उसे मौद्रिक GDP कहते हैं। इसे चालू कीमतों पर GDP भी कहते हैं। यह उत्पादन मात्रा तथा कीमत स्तर दोनों में परिवर्तन से प्रभावित होता है। इसे आर्थिक विकास का एक सूचक नहीं माना जाता है।

मौद्रिक GDP का वास्तविक GDP में रूपांतरण

$$\text{वास्तविक GDP} = \frac{\text{मौद्रिक GDP}}{\text{कीमत सूचकांक}} \times 100$$

चूँकि कीमत सूचकांक चालू कीमत अनुमानों को घटाकर स्थिर कीमत अनुमान के रूप में लाने हेतु एक अपस्फायक की भूमिका अदा करता है। इसलिए इसे सकल घरेलू उत्पाद अपस्फायक कहा जाता है।

- **कल्याण :** इसका तात्पर्य लोगों के भौतिक सुख-सुविधाओं से है। यह अनेक आर्थिक एवं गैर-आर्थिक कारकों पर निर्भर करता है। आर्थिक कारक जैसे राष्ट्रीय आय, उपभोग का स्तर आदि और गैर-आर्थिक कारक जैसे पर्यावरण

प्रदूषण, कानून व्यवस्था, सामाजिक अशांति आदि। वह कल्याण जो आर्थिक कारकों पर निर्भर करता है उसे आर्थिक कल्याण तथा जो गैर-आर्थिक कारकों पर निर्भर करता है उसे गैर आर्थिक कल्याण कहा जाता है। दोनों के योग को सामाजिक कल्याण कहा जाता है।

निष्कर्ष : दोनों में अर्थात् GDP एवं कल्याण में प्रत्यक्ष सम्बन्ध है परन्तु यह संबंध निम्नलिखित कारणों से अपूर्ण एवं अधूरा है। GDP को आर्थिक कल्याण के सूचक के रूप में सीमाएँ निम्न हैं-

1. **बाह्यताएँ :** इससे तात्पर्य व्यक्ति या फर्म द्वारा की गई उन क्रियाओं से है जिनका बुरा (या अच्छा) प्रभाव दूसरों पर पड़ता है लेकिन इसके लिए उन्हें दण्डित (लाभान्वित) नहीं किया जाता। उदाहरण - कारखानों का धुँआ (नकारात्मक बाह्यताएँ) तथा फ्लाईओवर का निर्माण (सकारात्मक बाह्यताएँ)।
2. **GDP की संरचना :** यदि GDP में वृद्धि, युद्ध सामग्री के उत्पादन में वृद्धि के कारण हैं तो GDP में वृद्धि से कल्याण में वृद्धि नहीं होगी।
3. **GDP का वितरण :** GDP में वृद्धि से कल्याण में वृद्धि नहीं होगी यदि आय का असमान वितरण है, अमीर अधिक अमीर हो जाएंगे तथा गरीब अधिक गरीब हो जाएंगे।
4. **गैर-मौद्रिक लेन-देन :** GDP में कल्याण को बढ़ाने वाले गैर मौद्रिक लेन-देन को शामिल नहीं किया जाता है।

बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक)

1. निम्नलिखित को प्राप्त कारक आय का योग राष्ट्रीय आय कहलाता है :

(a) नागरिक	(b) आर्थिक क्षेत्र
(c) सामान्य निवासी	(d) निवासी और गैर-निवासी दोनों
2. किसी देश का सामान्य निवासी वह है :

(a) जो उस देश में पैदा हुआ है।	(b) जो उस देश में रहता है।
--------------------------------	----------------------------

- (c) जो उस देश का नागरिक है।
- (d) जो उस देश में रहता है, कमाता है, खर्च करता है तथा अजित्त करता है।
3. किसी वर्ष में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों का आंकलन यदि चालू वर्ष के कीमतों पर किया जाता है तो उसे कहते हैं-
- (a) वास्तविक जी.डी.पी. (b) स्थिर कीमतों पर GDP
- (c) राष्ट्रीय उत्पाद (d) चालू कीमतों पर GDP
4. कौन सा सही है-
- (a) जब NFIA शून्य से कम होता तो GNP_{MP} बढ़ा होगा GDP_{MP} से।
- (b) जब NFIA शून्य होगा तो GNP_{MP} बढ़ा होगा GDP_{MP} से।
- (c) जब FIFA, FITA से कम होगा तो GNP_{MP} बढ़ा होगा GDP_{MP} से।
- (d) जब NFIA शून्य से अधिक होगा तो GNP_{MP} बढ़ा होगा GDP_{MP} से।
5. निम्न में से कौन-सा हस्तांतरण भुगतान नहीं है-
- (a) अप्रत्यक्ष कर (b) अनुदान
- (c) छात्रवृत्ति (d) लाभांश
6. जब किसी वस्तु का मूल्य एक से अधिक बार गणना की जाती है तो उसे दोहरी गणना कहते हैं जिसके कारण राष्ट्रीय आय का आंकलन होता है-
- (a) न्यून आंकलन (b) अधिआंकलन
- (c) सही आंकलन (d) उपरोक्त में से कोई नहीं
7. निम्न में से कौन-सा घटक NFIA का एक घटक नहीं है-
- (a) कर्मचारियों का शुद्ध आय
- (b) संपत्ति एवं उद्यम वृत्ति से शुद्ध पारिश्रमिक
- (c) विदेशों से निवासी कम्पनियों की शुद्ध प्रतिधारित आय।
- (d) शुद्ध निर्यात्

8. निम्नलिखित में से कौन-सा एक घटक सकल घरेलू स्थायी पूँजी निर्माण का एक घटक नहीं है -
- (a) सकल सार्वजनिक निवेश
 - (b) माल सूची निवेश
 - (c) सकल आवासीय निर्माण निवेश
 - (d) सकल व्यावसायिक स्थायी निवेश
9. निम्न में से कौन-सा स्टॉक चर है-
- (a) आय
 - (b) बचत
 - (c) निवेश
 - (d) मुद्रा आपूर्ति
10. बाजार कीमत साधन कीमत से कम होगी जब :
- (a) फर्म को हानि हो रही है
 - (b) अप्रत्यक्ष कर < सहायिकी
 - (c) अप्रत्यक्ष कर > सहायिकी
 - (d) अप्रत्यक्ष कर = सहायिकी
11. निम्न में से क्या राष्ट्रीय आय का भाग नहीं है-
- (a) S.B.I. की शाखा का लाभ, जो न्यूयार्क में स्थित है।
 - (b) जापानी दूतावास में काम करने वाले भारतीय का वेतन
 - (c) एक फर्म द्वारा लिए गए ऋण पर ब्याज का भुगतान।
 - (d) जर्मन सलाहकार को दिल्ली मैट्रो द्वारा फीस का भुगतान।
12. निम्न में क्या सकल घरेलू उत्पाद में शामिल होगा।
- (a) टैक्सी के लिए पैट्रोल का क्रय
 - (b) आइसक्रीम बेचने वाले द्वारा फ्रिज का क्रय
 - (c) फर्म द्वारा वकील को भुगतान
 - (d) TV विक्रेता द्वारा पुनः बिक्री के लिए TV का क्रय।

13. एक रेस्ट्रा (होटल मालिक) द्वारा एसी. की खरीद है-
- टिकाऊ वस्तु पर उपभोक्ता व्यय
 - गैर टिकाऊ वस्तु पर उपभोग व्यय
 - मध्यवर्ती व्यय
 - अंतिम व्यय।
14. मूल्य वृद्धि है-
- बिक्री कीमत – क्रय कीमत
 - बिक्री + स्टॉक – क्रय
 - बिक्री + स्टॉक + क्रय
 - उत्पादन का मूल्य – मध्यवर्ती उपभोग व्यय
15. प्रचालन अधिशेष है-
- लाभ – ब्याज
 - लाभ + सामान + ब्याज
 - लाभ + लगान
 - लाभ + लगान + रॉयलटी + ब्याज।

उत्तर

1. (c); 2. (d); 3. (d); 4. (d); 5. (d); 6. (b); 7. (d); 8. (b); 9. (d); 10. (b); 11. (d); 12. (b); 13. (d); 14. (d); 15. (d).

3-4 अंक वाले प्रश्न

- वास्तविक तथा मौद्रिक सकल देशीय उत्पाद में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
- वस्तुओं को मध्यवर्ती तथा अंतिम वस्तुओं में वर्गीकरण का आधार क्या है? उचित उदाहरण दीजिए।
- उपभोग वस्तुओं तथा पूँजीगत वस्तुओं में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

4. सकल देशीय उत्पाद का वितरण किस प्रकार आर्थिक कल्याण के मापन में बाधा है, समझाइए।
5. आय का चक्रीय प्रवाह समझाइए।
6. कारक आय तथा हस्तांतरण आय के बीच अंतर कीजिए।
7. निम्न को स्टॉक व प्रवाह में वर्गीकृत कीजिए-

(i) मुद्रा की आपूर्ति	(ii) मूल्यहास
(iii) निवेश	(iv) जेब खर्च
8. प्रचालन अधिशेष को परिभाषित कीजिए। इसके मुख्य घटकों को लिखिए।
9. सकल देशीय उत्पाद को कल्याण के सूचक के रूप में प्रयोग करने में बाहरी प्रभावों के कारण वह क्यों उपयुक्त नहीं माना जा सकता?
10. निम्नलिखित को मध्यवर्ती तथा अंतिम वस्तुओं में वर्गीकृत कीजिए। कारण भी दीजिए।
 - (i) डीलर द्वारा मशीन की खरीद।
 - (ii) गृहस्थों द्वारा कार की खरीद।
11. स्टॉक एवं प्रवाह में अंतर लिखिए तथा प्रत्येक का एक-एक उदाहरण भी दीजिए।
12. एक सामान्य निवासी से क्या अभिप्राय है? निम्नलिखित में से स्पष्ट कीजिए कि किसे भारत का सामान्य निवासी माना जाएगा?
 - (i) भारत में स्थित विश्व स्वास्थ्य संगठन के ऑफिस में कार्यरत एक अमेरिकी।
 - (ii) अमेरिकी दूतावास जो कि भारत में स्थित है, उसमें कार्यरत भारतीय।
13. एक भारतीय के लिए निम्न में से कौन-सी विदेशों से प्राप्त कारक आय है तथा क्यों?

- (a) भारतीय निवासी द्वारा अमेरिका की कम्पनी में खरीदे हुए बांड्स से प्राप्त ब्याज से आय
- (b) विदेश में स्थित भारतीय द्वारा अपने परिवार को भेजी गई राशि।

उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल

14. बाजार कीमत पर देशीय उत्पाद को कारक लागत पर देशीय उत्पाद में बदलने के लिए आर्थिक सहायता को जोड़ा जाता है तथा निवल अप्रत्यक्ष कर को घटाया जाता है। क्यों?
15. आय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय के आंकलन में निम्न की गणना किस प्रकार की जाएगी? कारण भी लिखिए।
 - (a) एक व्यक्ति द्वारा कार ऋण के ब्याज का भुगतान
 - (b) सरकार द्वारा अधिशाषित कम्पनी द्वारा कार ऋण के ब्याज का भुगतान।
16. स्वउपभोग के लिए उत्पाद की गणना करते समय हम वस्तुओं के आरोपित मूल्य को सम्मिलित करते हैं लेकिन सेवाओं को नहीं करते क्यों? वर्णन कीजिए।
17. विदेशों से प्राप्त निवल कारक आय को परिभाषित कीजिए। इसके घटकों के नाम लिखिए।
18. देशीय उत्पाद तथा राष्ट्रीय उत्पाद में अन्तर लिखिए। देशीय उत्पाद कब राष्ट्रीय उत्पाद से अधिक हो सकता है?

6 अंकों वाले प्रश्न

1. राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाते समय निम्न को किस प्रकार व्यवहार में लाया जाता है?
 - (a) एक भारतीय द्वारा विदेशी कम्पनी के शेयरों में निवेश से प्राप्त लाभांश।
 - (b) एक भारतीय परिवार द्वारा विदेशों में बसे अपने सम्बन्धियों से प्राप्त राशि।
 - (c) मित्र को कार के लिए दिए गए ऋण से प्राप्त ब्याज।

2. कारण बताते हुए समझाइए कि राष्ट्रीय आय का आंकलन करते समय निम्नलिखित के साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए :
 - (i) एक बैंक को एक फर्म द्वारा ब्याज भुगतान।
 - (ii) एक व्यक्ति को एक बैंक द्वारा ब्याज भुगतान।
 - (iii) एक बैंक को एक व्यक्ति द्वारा ब्याज भुगतान।
3. राष्ट्रीय आय की गणना करते समय दोहरी गणना की समस्या की एक उदाहरण की सहायता में व्याख्या कीजिए। इस समस्या से किस प्रकार बचा जा सकता है?
4. वास्तविक सकल देशीय उत्पाद तथा मौद्रिक सकल देशीय उत्पाद में अन्तर समझाइए। क्या वास्तविक सकल देशीय उत्पाद को कल्याण के सूचक के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है? दो कारण लिखिए।
5. राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाते समय निम्न की गणना किस प्रकार की जाएगी? कारण भी दीजिए।
 - (a) कम्पनी के शेयर धारकों द्वारा प्राप्त बोनस शेयरों का मूल्य।
 - (b) विद्यार्थियों से प्राप्त शुल्क।
 - (c) भारत में स्थित विदेशी कम्पनी को दिए गए ऋण से प्राप्त ब्याज।
6. आय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय ज्ञात करने के विभिन्न चरणों की व्याख्या कीजिए।
7. एक उचित उदाहरण की सहायता से मूल्य वृद्धि विधि द्वारा राष्ट्रीय आय ज्ञात करने के चरण समझाइए।
8. कारण बताते हुए निम्न को कारक आय तथा हस्तांतरण आय में वर्गीकृत कीजिए।
 - (i) नियोक्ता से प्राप्त कर्मचारियों का पारिश्रमिक
 - (ii) वृद्धावस्था पेंशन
 - (iii) आरोपित किराया।

9. कारण देते हुए समझाइए कि क्या निम्न को देशीय उत्पाद में सम्मिलित किया जाएगा।
- (i) भारत में स्थित विदेशी बैंक द्वारा अर्जित लाभ।
 - (ii) भारत में स्थित विदेशी दूतावास द्वारा उसके कर्मचारियों को दिया गया वेतन।
 - (iii) एक भारतीय द्वारा विदेश में स्थित फर्म से प्राप्त लाभ।
10. राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाते समय निम्न के साथ कैसा व्यवहार किया जायेगा अपने उत्तर का कारण लिखिए।
- (i) मकान की बिक्री से प्राप्त पूँजी लाभ।
 - (ii) लॉटरी का इनाम जीतना।
 - (iii) सार्वजनिक ऋणों पर ब्याज।
11. राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाते समय निम्न के साथ क्या व्यवहार किया जाता है? कारण सहित लिखिए।
1. मकान का आरोपित किराया।
 2. ऋण पत्रों से प्राप्त ब्याज।
 3. बाढ़ पीड़ितों द्वारा प्राप्त वित्तीय सहायता।

अभ्यास के लिए संख्यात्मक प्रश्न

राष्ट्रीय आय तथा संबंधित अवधारणाएँ

आंकिक अभ्यास

1.	निम्नलिखित आंकड़ों से 'बिक्री' ज्ञात कीजिए :	(लाख रु.)
	(i) कारक लागत पर निवल वर्धित मूल्य	560
	(ii) मूल्यहास	60
	(ii) स्टॉक में परिवर्तन	(-)30
	(iv) मध्यवर्ती उपभोग	1000

(v)	निर्यात	200
(vi)	अप्रत्यक्ष कर	60
2.	निम्नलिखित आँकड़ों से NVA_{FC} ज्ञात करो- (करोड़ रु.)	
(i)	आर्थिक सहायता	40
(ii)	बिक्री	800
(iii)	मूल्यहास	30
(iv)	निर्यात	100
(v)	अंतिम स्टॉक	20
(vi)	प्रारम्भिक स्टॉक	50
(vii)	मध्यवर्ती खरीद	500
(viii)	अपने प्रयोग के लिए मशीन का क्रय	200
(ix)	कच्चे माल का आयात	60
3.	निम्नलिखित आँकड़ों से 'मध्यवर्ती उपभोग' ज्ञात कीजिए:- (लाख रु.)	
(i)	उत्पादन का मूल्य	200
(ii)	कारक लागत पर निवल वर्धित मूल्य	80
(iii)	बिक्री कर	15
(iv)	आर्थिक सहायता	5
(v)	मूल्यहास	20
4.	निम्नलिखित आँकड़ों से (अ) व्यय विधि के द्वारा NNP_{FC} तथा (ब) मूल्यवधि त विधि द्वारा ज्ञात करें। (Rs. Crore)	
(i)	शुद्ध घरेलू पूँजी निर्माण	250
(ii)	शुद्ध निर्यात-	50
(iii)	निजि अंतिम उपभोग व्यय	900

(iv)	उत्पादन का मूल्यः	
(a)	प्राथमिक क्षेत्र	900
(b)	द्वितीयक क्षेत्र	800
(c)	तृतीयक क्षेत्र	400
(v)	मध्यवर्ती उपभोग का मूल्य	
(a)	प्राथमिक क्षेत्र	400
(b)	द्वितीय क्षेत्र	300
(c)	तृतीयक क्षेत्र	100
(vi)	स्थायी पूँजी का उपभोग	80
(vii)	अप्रत्यक्ष कर	100
(viii)	सरकारी अंतिम उपभोग व्यय	100
(ix)	आर्थिक सहायता	10
(x)	विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय	(-)20
5.	निम्न आँकड़ों से (a) बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद (GDP_{MP}) तथा (ब) विदेशों से कारक आय ज्ञात कीजिए।	(करोड़ रु.)
(i)	लाभ	500
(ii)	निर्यात	40
(iii)	कर्मचारियों का पारिश्रमिक	1500
(iv)	कारक लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद	2800
(v)	शेष विश्व से निवल चालू अंतरण	90
(vi)	लगान	300
(vii)	ब्याज	400
(viii)	विदेशों को कारक आय	120

(ix)	निवल अप्रत्यक्ष कर	250
(x)	निवल देशी पूँजी निर्माण	650
(xi)	सकल स्थिर पूँजी निर्माण	700
(xii)	स्टॉक में परिवर्तन	50
6.	निम्न आंकड़ों से बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद (GDP_{MP}) ज्ञात करो। (करोड़ रु.)	
(i)	घरेलू बिक्री	300
(ii)	निर्यात	100
(iii)	स्वयं उपभोग के लिए उत्पादन	50
(iv)	फर्म X से खरीद	110
(v)	फर्म Y से खरीद	70
(vi)	कच्चे माल का आयात	30
(vii)	स्टॉक में परिवर्तन	60
7.	निम्न से (a) घरेलू आय (b) कर्मचारियों का पारिश्रमिक की गणना करें। (करोड़ रु.)	
(i)	विदेशों से निवल कारक आय	-20
(ii)	शुद्ध निर्यात	10
(iii)	निवल अप्रत्यक्ष कर	50
(iv)	किराया और रॉयल्टी	20
(v)	स्थिर पूँजी का उपभोग	10
(vi)	निजी अंतिम उपभोग व्यय	400
(vii)	निगम कर	10
(viii)	ब्याज	30

(ix)	निवल घरेलू पूँजी निर्माण	50
(x)	लाभांश	22
(xi)	सरकारी अंतिम उपभोग व्यय	100
(xii)	अवितरित लाभ	5
(xiii)	मिश्रित आय	23
8.	निम्न आँकड़ों द्वारा आय विधि तथा व्यय विधि से राष्ट्रीय आय ज्ञात कीजिए। (करोड़ रु.)	
(i)	सरकारी अंतिम उपभोग व्यय	100
(ii)	निवल पूँजी निर्माण	110
(iii)	सकल पूँजी निर्माण	120
(iv)	निजी अंतिम उपभोग व्यय	800
(v)	शुद्ध निर्यात	70
(vi)	मालिकों का सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में योगदान	55
(vii)	वेतन व मजदूरी	600
(viii)	ब्याज का भुगतान	20
(ix)	लगान	200
(x)	रॉयलटी	25
(xi)	आर्थिक सहायता	10
(xii)	विदेशों को दी गई निवल साधन आय	30
(xiii)	अप्रत्यक्ष कर	60
(xiv)	लाभ	130

9.	निम्नलिखित आँकड़ों से उत्पादन का मूल्य ज्ञात कीजिए-	(करोड़ रु.)
	(i) साधन लागत पर निवल मूल्य वृद्धि	100
	(ii) मध्यवर्ती उपभोग	75
	(iii) आर्थिक सहायता	5
	(iv) मूल्यहास	10
	(v) उत्पाद शुल्क	20
10.	निम्नलिखित आँकड़ों से (अ) साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद तथा (ब) विदेशों को कारक आय ज्ञात करो-	(करोड़ रु.)
	(i) कर्मचारियों का पारिश्रमिक	800
	(ii) लाभ	200
	(iii) लाभांश	50
	(iv) बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद	1400
	(v) किराया	150
	(vi) ब्याज	100
	(vii) सकल घरेलू स्थिर पूँजी निर्माण	200
	(viii) निवल पूँजी निर्माण	200
	(ix) स्टॉक में परिवर्तन	50
	(x) विदेशों से निवल कारक आय	60
	(xi) निवल अप्रत्यक्ष कर	120

संख्यात्मक प्रश्नों के हल

1. $NVA_{FC} = \text{बिक्री} + \text{स्टॉक में परिवर्तन} - \text{मध्यवर्ती उपभोग} - \text{निवल अप्रत्यक्ष कर} - \text{मूल्यहास}$
- बिक्री = $560 - (-30) + 1000 + 60 + 60$
= रु. 1710 लाख

2. NVA_{FC} = बिक्री + स्टॉक में परिवर्तन – मध्यवर्ती उपभोग व्यय – मूल्यहास
– शुद्ध अप्रत्यक्ष कर

$$\begin{aligned} &= 800 + (-30) - 500 - 30 + 40 \\ &= 840 - 560 \\ &= 280 \text{ लाख रुपये} \end{aligned}$$

3. मध्यवर्ती उपभोग

$$\begin{aligned} &= \text{उत्पादन का मूल्य} - NVA_{FC} - \text{निवल अप्रत्यक्ष कर} - \text{मूल्यहास} \\ &= 200 - 80 - (15 - 5) - 20 \\ &= 200 - 80 - 10 - 20 \\ &= 90 \text{ लाख रु.} \end{aligned}$$

4. NNP_{FC} (व्यय विधि द्वारा)

$$\begin{aligned} &= (i) + (ii) + (iii) + (viii) - (vii) + (ix) - (vi) + (x) \\ &= 250 + 50 + 900 + 100 - 100 + 10 - 80 + (-20) \\ &= 1110 \text{ करोड़ रु.} \end{aligned}$$

NNP_{FC} (मूल्य वृद्धि विधि द्वारा)

$$\begin{aligned} &= (iv) - (v) - (vi) - (vii) + (ix) + (x) \\ &= (900 + 800 + 400) - (400 + 300 + 100) - 80 - 100 \\ &\quad + 10 + (-20) \\ &= 1110 \text{ करोड़ रु.} \end{aligned}$$

5. (अ) बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद (GDP_{MP})

$$\begin{aligned} NDP_{FC} &= (3) + (1) + (6) + (7) \\ &= 1500 + 500 + 300 + 400 \\ &= 2700 \text{ करोड़ रु.} \end{aligned}$$

$$\begin{aligned} GDP_{MP} &= NDP_{FC} + \text{निवल अप्रत्यक्ष कर} + \text{मूल्यहास} \\ &[\text{मूल्यहास} = \text{सकल घरेलू पूँजी निर्माण} - \text{निवल घरेलू पूँजी निर्माण}] \end{aligned}$$

$$= 2700 + 250 + [(700 + 50) - 650]$$

GDP = 3050 करोड़ रु.

(b) विदेशों से कारक आय $FIFA$

$$GNP_{FC} = GDP_{MP} - \text{निवल अप्रत्यक्ष कर} + \text{विदेशों से निवल कारक आय (NFIA)}$$

$$2800 = 3050 - 250 + \text{विदेशों से कारक आय} - \text{विदेशों को कारक आय}$$

$$2800 = 2800 + (\text{विदेशों से कारक आय} - 120)$$

$$120 \text{ करोड़ रु.} = \text{विदेशों से कारक आय}$$

6. बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद (GVA_{MP})

$$\begin{aligned} &= \text{बिक्री} + \text{स्टॉक में परिवर्तन} - \text{मध्यवर्ती उपभोग} \\ &= (300 + 100 + 50) + 60 - [110 + 70 + 30] \\ &= 510 - 210 \\ &= 300 \text{ करोड़ रु.} \end{aligned}$$

7. (a) घरेलू आय = (ii) + (vi) + (ix) + (xi) - (iii)

$$\begin{aligned} &= 10 + 400 + 50 + 100 - 50 \\ &= 510 \text{ करोड़ रु.} \end{aligned}$$

(b) कर्मचारियों का पारिश्रमिक

$$\begin{aligned} &= \text{घरेलू आय} - (iv) - (viii) - (vii) - (x) - (xii) - (xiii) \\ &= 510 - 20 - 30 - 10 - 22 - 5 - 23 \\ &= 400 \text{ करोड़ रु.} \end{aligned}$$

8. राष्ट्रीय आय (NNP_{FC}) (आय विधि द्वारा)

$$\begin{aligned} &= (7) + (6) + (8) + (9) + (10) + (14) - (12) \\ &= 600 + 55 + 20 + 200 + 25 + 130 - 30 \\ &= 1000 \text{ करोड़ रु.} \end{aligned}$$

राष्ट्रीय आय (व्यय विधि द्वारा)

$$\begin{aligned} \text{NNP}_{\text{FC}} &= (1) + (2) + (3) + (4) + (5) - (13) + (11) - (12) \\ &= 100 + 110 + 800 + 70 - 60 + 10 - 30 \\ &= 1000 \text{ करोड़ रु.} \end{aligned}$$

9. उत्पादन का मूल्य

NVA_{FC} = उत्पादन का मूल्य – मध्यवर्ती उपभोग – निवल अप्रत्यक्ष कर – मूल्यहास

$$\begin{aligned} \text{उत्पादन का मूल्य} &= \text{NVA}_{\text{FC}} + \text{मध्यवर्ती उपभोग} + \text{NIT} + \text{मूल्यहास} \\ &= 100 + 75 + (20 - 5) + 10 \\ &= 200 \text{ करोड़ रु.} \end{aligned}$$

10. (अ) साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद

$$\begin{aligned} \text{GDP}_{\text{FC}} &= (i) + (ii) + (v) + (vi) + [(vii + ix) - viii] \\ &= 800 + 200 + 150 + 100 + [(200 + 50) - 200] \end{aligned}$$

$$\text{GDP}_{\text{FC}} = 1300 \text{ करोड़ रु.}$$

(ब) विदेशों को कारक आय

$\text{GNP}_{\text{MP}} = \text{GDP}_{\text{FC}} + \text{निवल अप्रत्यक्ष कर} + \text{विदेशों से निवल कारक आय}$

$1400 = 1300 + 120 + \text{विदेशों से कारक आय} - \text{विदेशों को कारक आय}$

$1400 = 1300 + 120 + 60 - \text{विदेशों को कारक आय}$

$1400 - 1480 = - \text{विदेशों को कारक आय}$

रु. 80 करोड़ = विदेशों को कारक आय

परीक्षा उपयोगी प्रश्नोत्तर

अति लघु उत्तर वाले प्रश्न (1 अंक)

प्र. 1. चक्रीय प्रवाह के दो प्रकार कौन से हैं?

उत्तर. चक्रीय प्रवाह के दो प्रकार हैं : (i) वास्तविक प्रवाह (ii) मौद्रिक प्रवाह

प्र. 2. स्टॉक चर क्या है?

उत्तर. स्टॉक चरों से अभिप्राय उन चरों से होता है जिन्हें एक निश्चित समय बिन्दु पर मापा जाता है।

प्र. 3. उपभोग वस्तुओं को परिभाषित कीजिए।

उत्तर. उपभोग वस्तुओं से अभिप्राय उन वस्तुओं से है जो उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं को प्रत्यक्ष रूप से संतुष्ट करती है।

प्र. 4. चालू हस्तांतरण को परिभाषित कीजिए।

उत्तर. चालू हस्तांतरण से अभिप्राय उस हस्तांतरण से है जो अदाकर्ता की चालू आय में से किये जाते हैं और प्राप्तकर्ता की चालू आय में जोड़े जाते हैं।

प्र. 5. पूँजी निर्माण को परिभाषित कीजिए।

उत्तर. पूँजी निर्माण से अभिप्राय एक अर्थव्यवस्था के पूँजीगत स्टॉक में वृद्धि से होता है।

प्र. 6. मिश्रित आय किसे कहते हैं?

उत्तर. मिश्रित आय से अभिप्राय स्व-लेखा श्रमिकों और अनिगमित उद्यमों द्वारा सृजित आय से होता है।

प्र. 7. निर्यात को घरेलू आय में क्यों जोड़ा जाता है?

उत्तर. निर्यात को देश की घरेलू सीमा के अंदर उत्पादित किया जाता है इसलिए यह घरेलू आय में जोड़ा जाता है

- प्र. 8.** वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद क्या है?
- उत्तर.** जब एक दिए गए वर्ष की सकल घरेलू उत्पाद की गणना आधार वर्ष की कीमत के आधार पर की जाती है तब इसे वास्तविक GDP कहते हैं।
- प्र. 9.** कब उत्पादन का मूल्य, मूल्य वृद्धि के बराबर होता है?
- उत्तर.** उत्पादन का मूल्य, मूल्य वृद्धि के बराबर जब होता है, तब मध्यवर्ती लागतें शून्य होती हैं।
- प्र. 10.** राष्ट्रीय आय को परिभाषित कीजिए।
- उत्तर.** राष्ट्रीय आय से अभिप्राय देश के सामान्य निवासियों द्वारा एक वर्ष की समयावधि में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के शुद्ध मौद्रिक मूल्य से है।

3-4 अंक वाले प्रश्न

प्र. 1.	कारक (साधन) लागत पर सकल मूल्य वृद्धि ज्ञात कीजिए।	
(i)	उत्पादन इकाइयों की बिक्री (इकाई)	1000
(ii)	कीमत प्रति उत्पादन इकाई (रु.)	30
(iii)	मूल्यहास (रु.)	1000
(iv)	मध्यवर्ती लागत (रु.)	12000
(v)	अन्तिम स्टॉक (रु.)	3000
(vi)	आरम्भिक स्टॉक (रु.)	2000
(vii)	उत्पादन शुल्क (रु.)	2500
(viii)	बिक्री कर (रु.)	3500

उत्तर. कारक लागत पर सकल मूल्य वृद्धि =

$$\begin{aligned}
 GVA_{FC} & (i \times ii) + (v - vi) - (iv) - (vii + viii) \\
 & = (1000 \times 30) + [3000 - 2000] - 12000 - [2500 + 3500] \\
 & = \text{रु. } 13000
 \end{aligned}$$

प्र. 2. कारक लागत पर निवल मूल्य वृद्धि ज्ञात कीजिए-

(i)	अचल पूँजी का उपभोग (रु.)	600
(ii)	आयात शुल्क (रु.)	400
(iii)	उत्पादन बिक्री (इकाई)	2000
(iv)	कीमत प्रति उत्पादन इकाई (रु.)	10
(v)	स्टॉक में शुद्ध वृद्धि (रु.)	(-)50
(vi)	मध्यवर्ती लागत (रु.)	10000
(vii)	आर्थिक सहायता (रु.)	50

उत्तर. कारक लागत पर निवल मूल्य वृद्धि $NVA_{FC} = (iii \times iv) + v - vi - ii + vii - i$
 $= (2000 \times 10) + (-50) - 10000 - 400 + 500 - 600$
 $= \text{रु. } 9450.$

प्र. 3. बाजार कीमत पर निवल मूल्य वृद्धि ज्ञात कीजिए-

(i)	उत्पादन की बिक्री (इकाई)	800
(ii)	उत्पादन की प्रति इकाई कीमत (रु.)	20
(iii)	उत्पादन शुल्क (रु.)	1600
(iv)	आयात शुल्क (रु.)	400
(v)	स्टॉक में शुद्ध वृद्धि (रु.)	(-)500
(vi)	मूल्यहास (रु.)	1000
(vii)	मध्यवर्ती लागत (Rs.)	8000

उत्तर. बाजार मूल्य पर निवल मूल्य वृद्धि (NVA_{MP}) = $(i \times ii) + v - vii - vi$
 $= (800 \times 20) + (-500) - 8000 - 1000 = \text{Rs. } 6500.$

प्र. 4. यदि वास्तविक आय रु. 200 करोड़ है और कीमत सूचकांक 135 हो तो मौद्रिक आय का परिकलन कीजिए।

उत्तर. वास्तविक आय = $\frac{\text{मौद्रिक आय}}{\text{कीमत सूचकांक}} \times 100$

$$\text{मौद्रिक आय} = \frac{\text{वास्तवित आय} \times \text{कीमत सूचकांक}}{100}$$

$$\text{मौद्रिक आय} = \frac{200 \times 135}{100}$$

$$= 270 \text{ करोड़ रु.}$$

प्र. 5. यदि मौद्रिक आय रु. 375 करोड़ हो और कीमत सूचकांक 125 हो तो वास्तविक आय का परिकलन कीजिए।

उत्तर. वास्तविक आय = $\frac{\text{मौद्रिक आय}}{\text{कीमत सूचकांक}} \times 100$

$$= \frac{375 \times 100}{125}$$

$$\text{वास्तविक आय} = 300 \text{ करोड़ रु.}$$

प्र. 6. यदि वास्तविक सकल देशीय उत्पाद रु. 200 हो और मौद्रिक सकल देशीय उत्पाद रु. 210 हो तो कीमत सूचकांक (आधार = 100) का परिकलन कीजिए।

उत्तर. कीमत सूचकांक = $\frac{\text{मौद्रिक सकल देशीय उत्पाद}}{\text{वास्तविक सकल देशीय उत्पाद}} \times 100$

$$= \frac{210}{200} \times 100$$

$$= 105$$

प्र. 7. कारण बताते हुए निम्नलिखित को मध्यवर्ती उत्पाद व अन्तिम उत्पाद में वर्गीकृत कीजिए।

- (i) स्कूल द्वारा खरीदा गया कम्प्यूटर
- (ii) स्कूल कैंटीन द्वारा शीतल पेय की खरीद

उत्तर. (i) यह अन्तिम उत्पाद है क्योंकि खरीदा गया फर्नीचर लम्बे समय तक सेवा देने के कारण निवेश है।

(ii) शीतल पेय की खरीद मध्यवर्ती उत्पाद है क्योंकि यह उसी वर्ष पुनः बिक्री के लिए उपलब्ध है।

प्र. 8. कारण बताते हुए समझाइए कि राष्ट्रीय आय का आंकलन करते समय निम्नलिखित के साथ क्या व्यवहार किया जाता है-

(i) परिवार के सदस्य, परिवार के खेत में मुफ्त में कार्य करें।

(ii) सामान्य सरकार द्वारा लिए गए उधार पर ब्याज का भुगतान।

उत्तर. (i) परिवार के सदस्यों का आरोपित वेतन राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाएगा, क्योंकि उन्होंने कृषि में अपना योगदान दिया है।

(ii) चूँकि सरकार द्वारा लिया गया ऋण उपभोग कार्यों के लिए माना जाता है इसलिए इस ऋण पर ब्याज राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं होगा।

प्र. 9. कारण बताते हुए समझाइए कि राष्ट्रीय आय का आंकलन करते समय निम्नलिखित के साथ क्या व्यवहार किया जाता है-

(i) अभिभावक द्वारा बच्चों को दिया जाने वाला जेब खर्च

(ii) मालिकों द्वारा कर्मचारियों को ब्याज रहित ऋण।

उत्तर. (i) शामिल नहीं किया जाएगा क्योंकि यह अभिभावकों द्वारा बच्चों को दिया गया हस्तांतरण भुगतान है।

(ii) शामिल किया जाएगा क्योंकि यह कर्मचारियों को भुगतान का एक तरीका है। यह कर्मचारियों के पारिश्रमिक में शामिल होता है।

प्र. 10. वस्तुओं को मध्यवर्ती तथा अन्तिम वस्तुओं में वर्गीकरण के आधार पर व्याख्या कीजिए। उचित उदाहरण भी दीजिए।

उत्तर. **मध्यवर्ती वस्तुएँ :** ऐसी वस्तुएँ जो एक उत्पादन इकाई द्वारा दूसरी उत्पादन इकाई से खरीदी जाती है। जैसे-कच्चा माल।

अन्तिम वस्तुएँ : वे वस्तुएँ जो उपभोक्ताओं द्वारा उपभोग के लिए या उत्पादकों द्वारा निवेश के लिए प्रयुक्त होती हैं अन्तिम वस्तुएँ कहलाती हैं; जैसे - फैक्ट्री में मशीन लगाना।

- प्र. 11.** कारण देते हुए निम्नलिखित को मध्यवर्ती व अन्तिम वस्तुओं में वर्गीकृत कीजिए। (i) मशीन के डीलर द्वारा खरीदी गई मशीन (ii) एक गृहस्थ द्वारा खरीदी गई कार।
- उत्तर.** (i) यह एक मध्यवर्ती वस्तु है क्योंकि इसे बाजार में पुनः बिक्री के लिए खरीदा गया है।
(ii) यह अन्तिम वस्तु है क्योंकि इसे अन्तिम उपभोग के लिए खरीदा गया है।
- प्र. 12.** राष्ट्रीय आय की गणना करते समय आप निम्नलिखित के साथ क्या व्यवहार करेंगे? अपने उत्तर के लिए कारण दीजिए।
- (i) शेयर धारक द्वारा कम्पनी से प्राप्त शेयरों का मूल्य।
(ii) भारत में विदेशी कम्पनी को दिए गए ऋण से प्राप्त ब्याज।
- उत्तर.** (i) यह राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं होगा क्योंकि यह वित्तीय पूँजी की वापसी है वस्तु या सेवा नहीं।
(ii) यह शामिल किया जाएगा क्योंकि ब्याज देशीय आय की कारक आय है।
- प्र. 13.** सरकार बाल टीकाकरण कार्यक्रम पर व्यय करती है। इसके घरेलू उत्पाद और कल्याण पर प्रभाव समझाइए।
- उत्तर.** सरकार द्वारा बाल टीकाकरण कार्यक्रम पर व्यय करने से (GDP) सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होगी क्योंकि यह सरकारी अंतिम उपभोग व्यय है। यह लोगों के कल्याण को भी बढ़ाता है क्योंकि इस कार्यक्रम से लोगों के स्वास्थ्य में सुधार आयेगा जिससे लोगों की कार्यकुशलता में भी वृद्धि होगी।
- प्र. 14.** पैट्रोल तथा डीजल कारों की बिक्री, विशेषतया बड़े शहरों में निरंतर बढ़ रही है। इसके सकल घरेलू उत्पाद और कल्याण पर पड़ने वाले प्रभावों की व्याख्या कीजिए।
- उत्तर.** कारों की बिक्री से सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होगी। क्योंकि ये अंतिम उत्पाद हैं। कारों से यातायात सुलभ होता है लेकिन इनसे वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण तथा ट्रैफिक जाम की समस्या उत्पन्न हो रही है जिससे लोगों के कल्याण में कमी आती है क्योंकि प्रदूषण लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा/प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

6 अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. भारत की राष्ट्रीय आय की गणना करते समय आप निम्न के साथ क्या व्यवहार करेंगे?

- उत्तर. (1) एक भारतीय द्वारा विदेशी कम्पनी के शेयरों में निवेश से प्राप्त लाभांश।
- (2) एक भारतीय परिवार द्वारा उनके विदेशों में कार्यरत सम्बन्धियों से प्राप्त धन।
- (3) एक मित्र को कार खरीदने के लिए दिए गए ऋण पर प्राप्त ब्याज।
- (4) एक विदेशी को एक भारतीय कम्पनी के अंशों में किए गए निवेश से प्राप्त लाभांश।
- (5) कनाडा में एक भारतीय बैंक की शाखा द्वारा अर्जित लाभ।
- (6) एक विदेशी कम्पनी द्वारा भारत में पढ़ रहे भारतीय विद्यार्थियों को दी गई छात्रवृत्ति।
- (7) विद्यार्थियों से प्राप्त शुल्क।
- (8) एक व्यक्ति द्वारा कार खरीदने के लिए दिए गए ऋण पर ब्याज भुगतान।
- (9) एक फर्म में मशीन की स्थापना पर व्यय।
- (10) गलियों में प्रकाश व्यवस्था पर सरकारी व्यय।
- (11) एक कम्पनी के शेयरों की कीमतों में वृद्धि।
- (12) भारतीय निवासी द्वारा विदेश में कार्यरत फर्मों से ब्याज की प्राप्ति।
- (13) भारत में स्थित विदेशी बैंक की शाखा में कार्यरत भारतीयों द्वारा प्राप्त वेतन।
- (14) एक भारतीय बैंक की विदेश में स्थित शाखा द्वारा अर्जित लाभ।
- (15) भारत में जापान दूतावास द्वारा निवासी भारतीयों को दिया गया किराया।
- (16) स्वकाबिज मकान का आरोपित किराया।
- (17) ऋण-पत्रों पर प्राप्त ब्याज।

- (18) बाढ़ पीड़ितों को प्राप्त आर्थिक सहायता।
- (19) विदेशी पर्यटकों द्वारा किया गया व्यय।
- (20) नए मकान का निर्माण
- उत्तर.**
- (1) यह विदेशों से अर्जित साधन आय है अतः राष्ट्रीय आय में शामिल होगा।
 - (2) यह धनराशि भारत की राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं होगी क्योंकि यह मात्र अन्तरण आय है।
 - (3) शामिल नहीं होगा क्योंकि ऋण उपभोग कार्य के लिए दिया गया है उत्पादन में प्रयोग नहीं किया गया।
 - (4) यह लाभांश भारत की राष्ट्रीय आय में शामिल होगा। (एक ऋणात्मक घटक के रूप में), क्योंकि यह विदेशों को भारत से कारक आय है।
 - (5) शामिल होगा क्योंकि यह विदेशों से कारक आय है।
 - (6) शामिल नहीं होगी, क्योंकि यह मात्र अन्तरण भुगतान है।
 - (7) शामिल किया जाएगा, क्योंकि यह निजी उपभोग व्यय है।
 - (8) शामिल नहीं होगा क्योंकि लिया गया ऋण उपभोग के लिए है, उत्पादन के लिए नहीं।
 - (9) शामिल होगा, पूँजी निर्माण पर व्यय है।
 - (10) शामिल होगा, क्योंकि यह सरकार द्वारा मुफ्त सेवाएँ देने पर होने वाला व्यय है।
 - (11) शामिल नहीं होगा क्योंकि यह पूँजीगत लाभ है तथा इसका उत्पादन से कोई सम्बन्ध नहीं है।
 - (12) शामिल होगा, क्योंकि यह विदेशों से कारक आय है।
 - (13) शामिल किया जाएगा क्योंकि यह भारतीय घरेलू सीमा का भाग है।
 - (14) शामिल होगा क्योंकि यह विदेशों से कारक आय है।
 - (15) शामिल किया जाएगा, क्योंकि यह विदेशों से प्राप्त कारक आय है।
 - (16) शामिल किया जाएगा, क्योंकि यह कारक आय है।

- (17) शामिल किया जाएगा, क्योंकि ऋणपत्रों पर ब्याज कारक आय है।
- (18) शामिल नहीं किया जाएगा, क्योंकि यह अन्तरण आय है।
- (19) शामिल किया जाएगा, क्योंकि यह देश का निर्यात है।
- (20) शामिल किया जाएगा, क्योंकि यह एक चालू उत्पाद है।

Q. 2. कारण बताते हुए समझाइए कि क्या निम्नलिखित भारत की घरेलू (देशीय) आय में शामिल होंगे?

- (1) गैर निवासी भारतीयों द्वारा भारत में स्थित इनके परिवारों को भेजी गई धनराशि।
- (2) भारत में जापान के दूतावास द्वारा निवासी भारतीयों को दिया गया किराया।
- (3) भारत में विदेशी बैंक की शाखा द्वारा अर्जित लाभ।
- (4) भारत में स्थित दूतावास द्वारा अपने स्टॉफ को वेतन की अदायगी।
- (5) भारतीय सरकार द्वारा विदेश में कार्यरत फर्मों से ब्याज की प्राप्ति।
- (6) भारत सरकार द्वारा छात्रों को दी गई छात्रवृत्तियाँ।

उत्तर. (1) भारत की घरेलू आय में शामिल नहीं होगी क्योंकि यह भारत की घरेलू सीमा में सृजित नहीं हुई है।

- (2) शामिल नहीं किया जाएगा क्योंकि किराया जापानी दूतावास से प्राप्त हुआ है। जो जापान की घरेलू सीमा का भाग है।
- (3) शामिल किया जाएगा क्योंकि यह लाभ भारत की घरेलू सीमा में सृजित किया गया है।
- (4) नहीं, क्योंकि भारत में दूतावास भारत की घरेलू सीमा का भाग नहीं है।
- (5) नहीं, क्योंकि ब्याज रूपी साधन आय विदेश में सृजित हुई है, भारत की घरेलू सीमा में नहीं।
- (6) नहीं, क्योंकि यह हस्तांतरण भुगतान हैं।

प्र. 3. कारण बताते हुए समझाइए कि बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद का अनुमान लगाते समय निम्नलिखित के साथ क्या व्यवहार करना चाहिए?

- (i) फर्म द्वारा मैकेनिक को फीस का भुगतान।
 - (ii) बैंक से लिए गए कार ऋण पर एक व्यक्ति द्वारा किया गया ब्याज का भुगतान।
 - (iii) फर्म द्वारा अपने प्रयोग के लिए कार खरीदने पर व्यय।
- उत्तर.
- (i) फर्म द्वारा मैकेनिक को फीस का भुगतान सकल घरेलू उत्पाद में शामिल नहीं किया जाता है क्योंकि फर्म के लिए यह एक मध्यवर्ती लागत है।
 - (ii) यह शामिल नहीं किया जाता क्योंकि यह ऋण उपभोग व्यय के लिए लिया गया है। इसलिए ऋण पर दिया गया ब्याज कारक भुगतान नहीं है।
 - (iii) यह शामिल किया जाएगा, क्योंकि कार पर किया गया व्यय, एक निवेश व्यय है अतः एक अंतिम व्यय है और राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाएगा।

इकाई-VI

मुद्रा एवं बैंकिंग

स्मरणीय बिन्दु

- **मुद्रा :** मुद्रा को ऐसी वस्तु के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो विनियम के माध्यम, मूल्य के मापक, स्थगित भुगतानों के माप तथा मूल्य संचय हेतु, संचय रूप से स्वीकार की जाती है।
- मुद्रा की आपूर्ति = जनता के पास करेंसी + बैंकों के पास मांग जमाएं + रिजर्व बैंक के पास अन्य जमाएं

$$M = C + DD$$

- **मांग जमा :** ये वे जमाएं हैं जो किसी भी समय मांगने पर बैंक से निकलवाइ जा सकती हैं या जिन्हें चैक द्वारा भी निकलवाया जा सकता है।
- **व्यावसायिक बैंक का अर्थ :** व्यापारिक बैंक वह वित्तीय संस्था है जो मुद्रा तथा साख में व्यापार करती है। व्यावसायिक बैंक ऋण प्रदान करने के उद्देश्य से जनता से जमाएँ स्वीकार करते हैं तथा अपने लिए लाभ का सृजन करती हैं।
- **व्यावसायिक बैंकों द्वारा साख निर्माण / मुद्रा निर्माण**
- साख निर्माण से तात्पर्य बैंकों की उस शक्ति से है जिसके द्वारा वे प्राथमिक जमाओं का विस्तार करते हैं। बैंकों द्वारा साख सृजन की प्रक्रिया तथा वैधानिक आरक्षित अनुपात (LRR) में विपरीत सम्बन्ध होता है।

$$\text{जमा गुणक या साख गुणक} = \frac{1}{LRR}$$

$$\text{जमा सृजन} = \text{प्रारम्भिक जमा} \times \text{जमा गुणक}।$$

$$\text{शुद्ध/निवल साख का सृजन} = \text{जमा सृजन} - \text{प्रारम्भिक जमा}।$$

- **केन्द्रीय बैंक :** एक देश की बैंकिंग व वित्तीय प्रणाली में सर्वोच्च संस्था है

जो देश के मौद्रिक व बैंकिंग ढाँचे का संचालन, नियंत्रण, निर्देशन एवं नियमन करती है तथा देश के हित में मौद्रिक नीति का निर्माण करती है।

□ केन्द्रीय बैंक के कार्य

1. नोट निर्गमन का एकाधिकार / जारीकर्ता बैंक
 2. सरकार का बैंकर, अधिकर्ता एवं सलाहकार
 3. बैंकों का बैंक तथा पर्यवेक्षक
 4. साख नियंत्रक
- रेपो दर :** वह ब्याज दर जिस पर केन्द्रीय बैंक व्यावसायिक बैंकों को अल्पकाल के लिए ऋण प्रदान करता है, रेपो दर कहलाता है।
- रिवर्स रेपो दर :** वह दर जिस पर व्यावसायिक बैंक केन्द्रीय बैंक के पास अपना अतिरिक्त फंड जमा करते हैं।
- नकद आरक्षित अनुपात (CRR) :** प्रत्येक व्यापारिक बैंक को अपने पास कुल जमा राशियों का एक न्यूनतम अनुपात केन्द्रीय बैंक के पास कानूनन जमा करना होता है। इसे नकद आरक्षित अनुपात कहते हैं।
- वैधानिक तरलता अनुपात (SLR) :** SLR से अभिप्राय वाणिज्यिक बैंकों की तरल परिसंपत्तियों से है जो उन्हें अपनी कुल जमाओं के न्यूनतम प्रतिशत के रूप में अपने पास रखने की आवश्यकता होती है।
- खुले बाजार की क्रियाएँ (Open Market Operations)—** देश के केंद्रीय बैंक (रिजर्व बैंक) द्वारा खुले बाजार में प्रतिभूतियों (Securities) के खरीदने अथवा बेचने से संबंधित क्रिया को खुले बाजार की क्रिया कहते हैं। जब रिजर्व बैंक (केंद्रीय बैंक) बाजार में प्रतिभूतियों को बेचना प्रारंभ करता है तो वाणिज्य बैंकों के नकदी कोषों में कमी आ जाती है, इसके परिणामस्वरूप बैंकों की साख निर्माण क्षमता घट जाती है। इस प्रकार, प्रतिभूतियों की बिक्री साख की उपलब्धता को कम कर देती है।
- बैंक दर (Bank Rate)–** जिस दर पर देश का केंद्रीय बैंक वाणिज्य बैंकों को ऋण देता है या वाणिज्य बैंकों की प्रथम श्रेणी के विनिमय बिलों व सरकारी प्रतिभूतियों पर कटौती काटता है, उसे बैंक दर या कटौती कहा जाता है।

बहु-वैकल्पिक प्रश्न

1. रिजर्व बैंक के नोट जारी करने के गुण को देखा जा सकता है-
(a) नोट जारी करने में एकरूपता (b) मुद्रा में स्थिरता
(c) साख पर नियंत्रण (d) उपरोक्त सभी
2. मुद्रा पूर्ति में शामिल है
(a) जनता के पास करेन्सी (b) माँग जमा
(c) दोनों जनता के पास करेन्सी व माँग जमाएँ
(d) इनमें से कोई नहीं।
3. इनमें से कौन गुणात्मक उपाय है-
(a) नगद आरक्षित अनुपात (b) रेपो दर
(c) नैतिक दबाव (d) खुले बाजार की प्रक्रियाएँ
4. इनमें कौन विधि ग्राह्य मुद्रा है-
(a) चेक (b) क्रेडिट कार्ड
(c) रूपया (d) डिमांड ड्राफ्ट
5. स्फीतिक अंतराल के समय रिजर्व बैंक को करना चाहिए-
(a) मुद्रा जारी करना (b) बैंक दर में वृद्धि
(c) नगद आरक्षित अनुपात में कमी
(d) वैधानिक आरक्षित अनुपात में कमी।

उत्तर

1. (d); 2. (c); 3. (c); 4. (c); 5. (b).

3-4 अंक वाले प्रश्न

1. खुले बाजार की प्रक्रियाएँ क्या हैं? साख की उपलब्धि पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?
2. रेपो दर एवं रिवर्स रेपो दर में अंतर कीजिए।
3. SLR तथा CRR में अंतर स्पष्ट कीजिए। ये साख नियंत्रण में क्या भूमिका अदा करते हैं?
4. ‘सरकार का बैंक’ के रूप में केन्द्रीय बैंक के कार्य लिखिए।
5. वैधानिक तरलता अनुपात क्या है? इसकी दर में वृद्धि का साख निर्माण पर क्या प्रभाव पड़ता है? वर्णन कीजिए।
6. केन्द्रीय बैंक के कार्यों ‘मुद्रा जारी करना’ तथा ‘साख का नियंत्रण’ का वर्णन कीजिए।
7. बैंक दर में वृद्धि के व्यापारिक बैंकों द्वारा किये जाने वाले साख निर्माण पर प्रभाव समझाइए।
8. खुले बाजार की क्रियाएँ साख निर्माण को कैसे प्रभावित करती हैं? वर्णन कीजिए।
9. SLR को परिभाषित कीजिए। SLR में होने वाले परिवर्तन का साख निर्माण पर क्या प्रभाव पड़ता है, समझाइए।
10. CRR से क्या अभिप्राय है? CRR को परिवर्तित करके किस प्रकार केन्द्रीय बैंक साख निर्माण को प्रभावित कर सकता है?
11. मुद्रा आपूर्ति से क्या अभिप्राय है? इसके प्रमुख घटक लिखिए।

6 अंक वाले प्रश्न

1. केन्द्रीय बैंक को परिभाषित कीजिए तथा इसके प्रमुख कार्यों का वर्णन कीजिए।

2. वाणिज्यिक बैंक द्वारा साख निर्माण / मुद्रा निर्माण की प्रक्रिया की व्याख्या संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से कीजिए।
3. वाणिज्यिक बैंक द्वारा किए जाने वाली साख निर्माण को केन्द्रीय बैंक खुली बाजार कार्यवाही द्वारा कैसे प्रभावित करता हैं?

परीक्षा उपयोगी प्रश्न

एक अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. ‘मांग जमाएं’ क्या है?

उत्तर. वे जमाएँ जिनका आहरण (withdrawal) चैक द्वारा किया जा सकता है।

प्र. 2. नगद निधि अनुपात (CRR) को परिभाषित कीजिए।

उत्तर. यह व्यापारिक बैंक की कुल जमाओं का वह अनुपात है जिसे व्यापारिक बैंक को अनिवार्य रूप से केन्द्रीय बैंक के पास जमा करना पड़ता है।

प्र. 3. ‘मुद्रा आपूर्ति’ से क्या अभिप्राय है?

उत्तर. मुद्रा पूर्ति से अभिप्राय एक निश्चित समय पर देश में जनता के पास कुल मुद्रा के स्टॉक से है।

प्र. 4. मुद्रा आपूर्ति के घटक लिखिए।

उत्तर. (1) जनता के पास करेंसी (सिक्के व नोट). (2) मांग जमाएँ।

प्र. 5. बैंक दर क्या है? यह रेपो दर से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर. वह दर जिस पर किसी देश का केन्द्रीय बैंक व्यापारिक बैंकों को दीर्घकालीन उद्देश्यों के लिए उधार देता है जबकि रेपो दर वह दर है जिस पर केन्द्रीय बैंक व्यापारिक बैंकों को उनके अल्पकालीन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उधार देता है।

3-4 अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. केन्द्रीय बैंक के कार्य ‘मुद्रा जारी करना’ की व्याख्या कीजिए।

उत्तर. मुद्रा जारी करना केन्द्रीय बैंक का प्राथमिक और बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। आजकल प्रत्येक देश में केन्द्रीय बैंक और इसलिए हमारे देश में रिजर्व बैंक को नोट-निर्गमन का एकाधिकार प्राप्त है इस कार्य का इतना अधिक महत्व हो गया है कि केन्द्रीय बैंक को ‘निर्गमन बैंक’ (Bank of Issue) ही कहा जाने लगा है। नोट जारी करने की दृष्टि से केन्द्रीय बैंक तीन मुख्य बातों को ध्यान में रखता है: एकरूपता, लोचशीलता (आवश्यकता के अनुसार मुद्रा की मात्रा तय करना), और सुरक्षा। रिजर्व बैंक मुद्रा की वृद्धि को एक सीमा के भीतर ही बनाए रखने का प्रयत्न करता है और इस प्रकार, स्फीतिकारी दबावों को नियंत्रण में रखता है।

प्र. 2. केन्द्रीय बैंक के कार्य “बैंकों का बैंक” की व्याख्या कीजिए।

उत्तर. केन्द्रीय बैंक बैंकों का बैंक है। केन्द्रीय बैंक का अन्य व्यवसायिक बैंकों के साथ वैसा ही संबंध होता है, जैसा एक साधारण बैंक का अपने ग्राहकों के साथ होता है। केन्द्रीय बैंक व्यवसायिक बैंकों के कोषों का संरक्षक होता है तथा आवश्यकता पड़ने पर व्यापारिक बैंकों को ऋण प्रदान करता है।

प्र. 3. सीमांत आवश्यकता से क्या अभिप्राय है? यह साख के नियंत्रण में क्या भूमिका निभाती है?

उत्तर. सीमांत आवश्यकता से अभिप्राय बैंक द्वारा प्रतिभूति के आधार पर दिए गए ऋण तथा प्रतिभूति के वर्तमान मौद्रिक मूल्य के अंतर से है। यदि अर्थव्यवस्था में साख की मात्रा को नियंत्रित करना हो केन्द्रीय बैंक सीमांत आवश्यकता को बढ़ा देता है, जिससे ऋण की मांग में कमी आने से साख का विस्तार कम हो जाता है। इसके विपरीत साख विस्तार हेतु सीमांत आवश्यकता को कम कर दिया जाता है।

प्र. 4. केन्द्रीय बैंक के कार्य ‘सरकार का बैंक’ की व्याख्या कीजिए।

उत्तर. केन्द्रीय बैंक वे सभी बैंकिंग सुविधाएँ सरकार को प्रदान करता है, जो व्यापारिक बैंक द्वारा अपने ग्राहकों को प्रदान की जाती हैं। केन्द्रीय बैंक सरकार के बैंक एजेंट व वित्तीय सलाहकार के रूप में सरकार के लिए कोषों की व्यवस्था करता है। एक एजेंट के रूप में केन्द्रीय बैंक सरकार के लिए प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय तथा सार्वजनिक ऋण का प्रबन्ध करता है। साथ ही यह सरकार को उचित मौद्रिक नीतियों के निर्माण हेतु उपयोगी परामर्श प्रदान करता है।

6 अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. मुद्रा/साख निर्माण से क्या अभिप्राय है? एक संचात्मक उदाहरण की सहायता से व्यापारिक बैंकों द्वारा किये जाने वाले मुद्रा निर्माण की प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. मुद्रा निर्माण को ऐसी प्रक्रिया के रूप में व्यक्त किया जाता है जिसके अन्तर्गत एक व्यापारिक बैंक अपने निक्षेपों के आधार पर कई गुणा ऋण प्रदान करके अर्थव्यवस्था में मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि करता है। व्यापारिक बैंक द्वारा किया जाने वाला मुद्रा निर्माण मुख्यतः दो बातों पर निर्भर करता है।

1. प्राथमिक जमाएँ

2. वैधानिक कोष अनुपात (LRR)

$$\text{साख गुणक} = \frac{1}{\text{LRR}}$$

मुद्रा निर्माण की व्याख्या

माना अर्थव्यवस्था में (1) प्रारम्भिक जमाएँ-1000 रु. हैं। (2) वैध आरक्षित अनुपात 20% या 0.2 है। (3) अर्थव्यवस्था में कुल व्यय राशि पुनः बैंकों में जमा कर दी जाती है।

मान लीजिए प्राथमिक जमा 1000 रु. हैं। बैंक इस जमा से 200 रु. रिजर्व के रूप में रखकर 800 रु. उधार दे देंगे। ये 800 रु. अर्थव्यवस्था में होने के पश्चात् पुनः बैंक में वापिस जमा होंगे। व्यापारिक बैंक कुल जमाओं 800 रु.

का 20% अर्थात् 160 रु. रिजर्व रखकर 640 उधार दे देंगे। यह कार्य पुनः बैंक की जमाओं में वृद्धि करेगा और यह प्रक्रिया निरंतर जारी रहेगा। कुल निर्माण कितना होगा यह मुद्रा गुणक द्वारा निर्धारित होगा।

मुद्रा गुणक

$$\begin{aligned}\text{कुल मुद्रा निर्माण} &= \text{प्रारम्भिक जमाएँ} \times \text{साख गुणांक} \\ &= 1000 \times \frac{1}{0.2} = 5,000 \text{ रु.}\end{aligned}$$

इकाई-VII

आय और रोजगार का निर्धारण

स्मरणीय बिन्दु

- एक अर्थव्यवस्था के समस्त क्षेत्रों द्वारा एक दिए हुए आय स्तर पर एवं एक निश्चित समयावधि में समस्त अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के नियोजित क्रय के कुल मूल्य को समग्र मांग कहते हैं। एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं व सेवाओं की कुल मांग को समग्र मांग (AD) कहते हैं इसे कुल व्यय के रूप में मापा जाता है।
- समग्र मांग के मुख्य घटक निम्नलिखित हैं-
 - (i) उपभोग व्यय (C).
 - (ii) निवेश व्यय (I)
 - (iii) सरकारी व्यय (G).
 - (iv) शुद्ध निर्यात ($X - M$).

$$\text{इस प्रकार, } AD = C + I + G + (X - M)$$

दो क्षेत्र वाली अर्थव्यवस्था में $AD = C + I$.

- एक अर्थव्यवस्था की सभी उत्पादक इकाईयों द्वारा एक निश्चित समयावधि में सभी अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के नियोजित उत्पादन के कुल मूल्य को समग्र पूर्ति कहते हैं। समग्र पूर्ति के मौद्रिक मूल्य को ही राष्ट्रीय आय कहते हैं। अर्थात् राष्ट्रीय आय सदैव समग्र पूर्ति के समान होती है।

$$AS = C + S$$

- समग्र पूर्ति देश के राष्ट्रीय आय को प्रदर्शित करती है।

$$AS = Y \text{ (राष्ट्रीय आय)}$$

- उपभोग फलन आय (Y) और उपभोग (C) के बीच फलनात्मक सम्बन्ध को दर्शाता है।

$$C = f(Y)$$

$$\text{यहाँ} \quad C = \text{उपभोग}$$

$$Y = \text{आय}$$

$$f = \text{फलनात्मक सम्बन्ध}$$

उपभोग फलन की समीकरण :

$$C = \bar{C} + MPC \cdot Y$$

स्वायत्त उपभोग (\bar{C}) : आय के शून्य स्तर पर जो उपभोग होता है उसे स्वायत्त उपभोग कहते हैं। जो आय में परिवर्तन होने पर भी परिवर्तित नहीं होता है, अर्थात् यह आय बेलोचदार होता है।

- उपभोग फलन (उपभोग प्रवृत्ति) दो प्रकार की होती है-
 - (1) औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC)
 - (2) सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC)
- **औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC) :** औसत प्रवृत्ति को कुल उपभोग तथा कुल आय के बीच अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है।

$$APC = \text{कुल उपभोग (C)} / \text{कुल आय (Y)}$$

APC के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण बिन्दु

- (i) APC इकाई से अधिक रहता है जब तक उपभोग राष्ट्रीय आय से अधिक होता है। समविच्छेद बिन्दु से पहले, $APC > 1$.
- (ii) $APC = 1$ समविच्छेद बिन्दु पर यह इकाई के बराबर होता है जब उपभोग और आय बराबर होता है। $C = Y$
- (iii) आय बढ़ने के कारण APC लगातार घटती है।
- (iv) APC कभी भी शून्य नहीं हो सकती, क्योंकि आय के शून्य स्तर पर भी स्वायत्त उपभोग होता है।

- **सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC)** : उपभोग में परिवर्तन तथा आय में परिवर्तन के अनुपात को, सीमांत उपभोग प्रवृत्ति कहते हैं।

$$MPC = \frac{\text{उपभोग में परिवर्तन}}{\text{आय में परिवर्तन}} = \frac{\Delta C}{\Delta Y}$$

- MPC का मान शून्य तथा एक के बीच में रहता है। लेकिन यदि सम्पूर्ण अतिरिक्त आय उपभोग हो जाती है तब $\Delta C = \Delta Y$, अतः $MPC = 1$. इसी प्रकार यदि सम्पूर्ण अतिरिक्त आय की बचत कर ली जाती है तो $\Delta C = 0$, अतः $MPC = 0$.
- **बचत फलन** : बचत और आय के फलनात्मक सम्बन्ध को दर्शाता है।

$$S = f(Y)$$

यहाँ S = बचत

Y = आय

f = फलनात्मक सम्बन्ध

- **बचत फलन का समीकरण :**

$$S = -\bar{S} + MPS \cdot Y$$

- बचत प्रवृत्ति दो प्रकार की होती है :- APS तथा MPS
- **औसत बचत प्रवृत्ति (APS)** : कुल बचत तथा कुल आय के बीच अनुपात को APS कहते हैं।

$$APS = \frac{\text{बचत}}{\text{आय}} = \frac{S}{Y}$$

- **औसत बचत प्रवृत्ति APS की विशेषताएँ**

1. APS कभी भी इकाई या इकाई से अधिक नहीं हो सकती क्योंकि कभी भी बचत आय के बराबर तथा आय से अधिक नहीं हो सकती।
2. APS शून्य हो सकती है: समविच्छेद बिन्दु पर जब $C = Y$ है तब $S = 0$.
3. APS ऋणात्मक या इकाई से कम हो सकता है। समविच्छेद बिन्दु से नीचे स्तर पर APS ऋणात्मक होती है। क्योंकि अर्थव्यवस्था में अबचत

(Dissavings) होती है तथा $C > Y$.

4. APS आय के बढ़ने के साथ बढ़ती हैं

- **सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS)** : आय में परिवर्तन के फलस्वरूप बचत में परिवर्तन के अनुपात को सीमांत बचत प्रवृत्ति कहते हैं।

$$MPS = \frac{\text{बचत में परिवर्तन}}{\text{आय में परिवर्तन}} = \frac{\Delta S}{\Delta Y}$$

- MPS का मान शून्य तथा इकाई (एक) के बीच में रहता है। लेकिन यदि
 - (i) यदि सम्पूर्ण अतिरिक्त आय की बचत की ली जाती है, तब $\Delta S = \Delta Y$, अतः $MPS = 1$.
 - (ii) यदि सम्पूर्ण अतिरिक्त आय, उपभोग कर ली जाती है, तब $\Delta S = 0$, अतः $MPS = 0$.

- **औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC) तथा औसत प्रवृत्ति (APS)** में सम्बन्ध सदैव $APC + APS = 1$ यह सदैव ऐसा ही होता है, क्योंकि आय को या तो उपभोग किया जाता है या फिर आय की बचत की जाती है।

प्रमाण: $Y = C + S$

दोनों पक्षों का Y से भाग देने पर

$$\frac{Y}{Y} = \frac{C}{Y} + \frac{S}{Y}$$

$$1 = APC + APS$$

अथवा $APC = 1 - APS$ या $APS = 1 - APC$ । इस प्रकार APC तथा APS का योग हमेशा इकाई के बराबर होता है।

- **सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) तथा सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS)** में सम्बन्ध सदैव $MPC + MPS = 1$; MPC हमेशा सकारात्मक होती है तथा 1 से कम होती है। इसलिए MPS भी सकारात्मक तथा 1 से कम होनी चाहिए। प्रमाण $\Delta Y = \Delta C + \Delta S$.

दोनों पक्षों को ΔY से भाग करने पर

$$\frac{\Delta Y}{\Delta Y} = \frac{\Delta C}{\Delta Y} + \frac{\Delta S}{\Delta Y}$$

$1 = MPC + MPS$ अथवा

$MPC = 1 - MPS$ अथवा

$MPC = 1 - MPC$

- एक अर्थव्यवस्था में एक वित्तीय वर्ष में पूँजीगत वस्तुओं के स्टॉक में वृद्धि को पूँजी निर्माण / निवेश कहते हैं।
 - (i) प्रेरित निवेश
 - (ii) स्वतंत्र निवेश
- **प्रेरित निवेश :** प्रेरित निवेश वह निवेश है जो लाभ कमाने की भावना से प्रेरित होकर किया जाता है। प्रेरित निवेश का आय से सीधा सम्बन्ध होता है।
- **स्वतंत्र (स्वायत्त) निवेश :** स्वायत्त निवेश वह निवेश है जो आय के स्तर में परिवर्तन से प्रभावित नहीं होता अर्थात् आय निरपेक्ष होता है।
- **नियोजित बचत :** एक अर्थव्यवस्था के सभी गृहस्थ (बचतकर्ता) एक निश्चित समय अवधि में आय के विभिन्न स्तरों पर जितनी बचत करने की योजना बनाते हैं, नियोजित बचत कहलाती है।
- **नियोजित निवेश :** एक अर्थव्यवस्था के सभी निवेशकर्ता आय के विभिन्न स्तरों पर जितना निवेश करने की योजना बनाते हैं, नियोजित निवेश कहलाती है।
- **वास्तविक बचत :** अर्थव्यवस्था में दी गई अवधि के अंत में आय में से उपभोग व्यय घटाने के बाद, जो कुछ वास्तव में शेष बचता है, उसे वास्तविक बचत कहते हैं।
- **वास्तविक निवेश :** किसी अर्थव्यवस्था में एक वित्तीय वर्ष में किए गए कुल निवेश को वास्तविक निवेश कहा जाता है। इसका आंकलन अवधि के समाप्ति पर किया जाती है।
- **आय का संतुलन स्तर :** आय का वह स्तर है जहाँ समग्र माँग, उत्पादन के स्तर (समग्र पूर्ति) के बराबर होती है अतः $AD = AS$ या $S = I$.
- **पूर्ण रोजगार :** इससे अभिप्राय अर्थव्यवस्था की ऐसी स्थिति से है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति जो योग्य है तथा प्रचलित मौद्रिक मजदूरी की दर पर काम करने को तैयार है, को रोजगार मिल जाता है।

- **ऐच्छिक बेरोजगारी** : ऐच्छिक बेरोजगारी से अभिप्रायः उस स्थिति से है, जिसमें बाजार में प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य उपलब्ध होने के बावजूद योग्य व्यक्ति कार्य करने को तैयार नहीं है।
- **अनैच्छिक बेरोजगारी** : अर्थव्यवस्था की ऐसी स्थिति है जहाँ कार्य करने के इच्छुक व योग्य व्यक्ति प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य करने के लिए इच्छुक हैं लेकिन उन्हें कार्य नहीं मिलता।
- **निवेश गुणक** : निवेश में परिवर्तन के फलस्वरूप आय में परिवर्तन के अनुपात को निवेश गुणक कहते हैं।

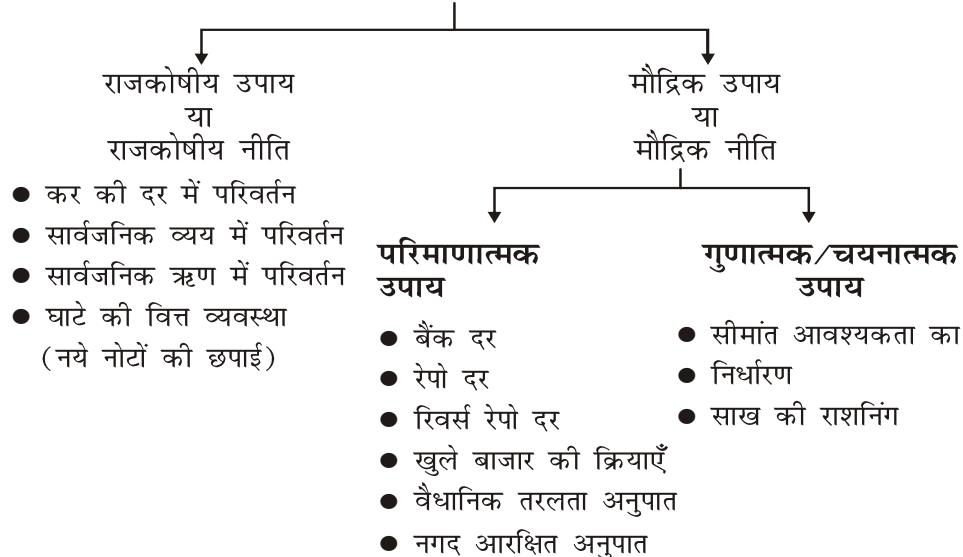
$$K = \frac{\Delta Y}{\Delta I} \text{ या गुणक} = \frac{\text{आय में परिवर्तन}}{\text{निवेश में परिवर्तन}} \text{ अथवा } K = \frac{1}{1 - MPC}$$

अथवा $K = \frac{1}{MPS}$. इसका अधिकतम मान अनंत तथा न्यूनतम मान एक होता है।

- जब समग्र मांग (AD), पूर्ण रोजगार स्तर पर समग्र पूर्ति (AS) से अधिक हो जाए तो उसे अत्यधिक मांग कहते हैं।
- जब समग्र मांग (AD), पूर्ण रोजगार स्तर पर समग्र पूर्ति (AS) से कम होती है, उसे अभावी माँग कहते हैं।
- स्फीति अंतराल, वास्तविक समग्र मांग और पूर्ण रोजगार संतुलन को बनाए रखने के लिए आवश्यक समग्र मांग के बीच का अंतर होता है। यह समग्र मांग के आधिक्य का माप है। यह अर्थव्यवस्था में स्फीतिकारी प्रभाव उत्पन्न करता है।
- अवस्फीति अंतराल, वास्तविक समग्र मांग और पूर्ण रोजगार संतुलन को बनाए रखने के आवश्यक समग्र मांग के बीच का अंतर होता है। यह समग्र मांग में कमी का माप है। यह अर्थव्यवस्था अवस्फीति (मंदी) उत्पन्न करता है।

अधिमांग (स्फीतिक अंतराल) तथा अभावी मांग (अवस्फीतिक अंतराल)

के नियंत्रित करने की विधियाँ



बहुविकल्पीय प्रश्न (1 अंक)

1. जब सभी योग्य एवं इच्छुक व्यक्ति किसी प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य करना चाहते हैं, परन्तु उन्हें कार्य नहीं मिलता है तो उन्हें कहते हैं-
 - (a) ऐच्छिक बेरोजगार
 - (b) अनैच्छिक बेरोजगार
 - (c) अल्प बेरोजगार
 - (d) उपरोक्त में से कोई नहीं।
2. निम्न में से किसका मान ऋणात्मक हो सकता है-
 - (a) APC
 - (b) APS
 - (c) MPC
 - (d) MPS
3. उपभोग फलन, निम्न में से किसके बीच सम्बन्ध दर्शाता है-
 - (a) आय तथा बचत के बीच
 - (b) कीमत स्तर तथा उपभोग के बीच
 - (c) आय तथा उपभोग के बीच
 - (d) आय, बचत तथा उपभोग के बीच

4. निवेश गुणक का मान प्रत्यक्षतः MPC पर निर्भर करता है, जबकि अप्रत्यक्षतः निम्न पर

(a) APC (b) MPS
(c) APS (d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

5. अभावी मांग के निम्नलिखित में से कौन से परिणाम होते हैं-

(a) अनैच्छिक बेरोजगारी में वृद्धि
(b) उत्पादन व रोजगार के स्तर में कमी
(c) दोनों (a) व (b) (d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

6. निम्न में कौन-सा मौद्रिक नीति का मात्रात्मक उपाय है-

(a) रेपो रेट (b) खुले बाजार की क्रियाएँ
(c) एस.एल.आर. (d) उपरोक्त सभी।

7. जब पूर्ण रोजगार उत्पाद स्तर पर समग्र मांग, समग्र पूर्ति से कम हो जाता है, तो उसे कहते हैं-

(a) मांग आधिक्य (b) अभावी मांग
(c) स्फीति अंतराल (d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

8. जब MPC का मान 0.75 हो तो गुणक का मान क्या होगा?

(a) $K = 4$ (b) $K = 5$
(c) $K = 2$ (d) $K = 3$

9. सम-विच्छेद बिन्दु पर होता है-

(a) $APC = 1$ (b) $C = Y$
(c) $S = 0$ (d) उपरोक्त सभी

10. K का मान 5 से अधिक होगा, जब

(a) $MPC = MPS = 0.5$ (b) $MPC \leq 0.8$
(c) $MPC \geq 0.8$ (d) $MPS < 0.2$

11. $APC = MPC$, जब

- (a) आय में % परिवर्तन > उपभोग में % परिवर्तन
- (b) आय में % परिवर्तन = उपभोग में % परिवर्तन
- (c) आय में % परिवर्तन < उपभोग में % परिवर्तन
- (d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

3-4 अंक वाले प्रश्न

1. समग्र मांग को परिभाषित कीजिए तथा इसके घटकों के बारे में लिखिए।
2. एक संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से औसत उपभोग प्रवृत्ति तथा सीमांत उपभोग प्रवृत्ति में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
3. पूर्ण रोजगार, ऐच्छिक बेरोजगारी तथा अनैच्छिक बेरोजगारी को परिभाषित करो।
4. निवेश गुणक क्या है? सीमांत उपभोग प्रवृत्ति एवं निवेश गुणक के बीच सम्बन्ध का वर्णन कीजिए।
5. उत्पादन, रोजगार तथा कीमत पर अत्यधिक मांग के प्रभाव की संक्षेप में व्याख्या कीजिए।
6. निम्नलिखित कथन सही है या गलत कारण सहित लिखिए।
 - (अ) निवेश गुणक जब 1 होता है तो सीमांत उपभोग प्रवृत्ति का मूल्य शून्य होता है।
 - (ब) औसत बचत प्रवृत्ति का मूल्य कभी भी 1 से अधिक नहीं होता है।
7. कारण सहित बताइए कि निम्नलिखित कथन सत्य है या असत्य :
 1. जब सीमांत उपभोग प्रवृत्ति शून्य होती है तो गुणक का मूल्य भी शून्य होता है।
 2. औसत बचत प्रवृत्ति का मूल्य कभी भी 1 से कम नहीं हो सकता।
8. किसी अर्थव्यवस्था में साख की उपलब्धता को प्रभावित करने में बैंक दर की भूमिका की व्याख्या कीजिए।

9. अत्यधिक मांग क्या है? अत्यधिक मांग को नियंत्रित करने के लिए किन्हीं दो राजकोषीय उपायों की व्याख्या कीजिए।
10. खुले बाजार की क्रियाएँ अर्थव्यवस्था में साख की उपलब्धता को कैसे प्रभावित करती है।
11. निवेश गुणक तथा MPS में सम्बन्ध की व्याख्या करो।
12. संक्षेप में सीमांत उपभोग प्रवृत्ति तथा सीमांत बचत प्रवृत्ति के सम्बन्धों की व्याख्या कीजिए।
13. यदि सीमांत बचत प्रवृत्ति 0.8 हो तो निवेश में 125 करोड़ रूपये की वृद्धि राष्ट्रीय आय में कितनी वृद्धि लाएगी? परिकलन कीजिए।
14. आय का संतुलन स्तर ज्ञात कीजिए जब निवेश 60 रूपये तथा $S = -40 + 0.25 Y$.
15. क्या बेरोजगारी की स्थिति में एक अर्थव्यवस्था संतुलन में हो सकता है? व्याख्या कीजिए।
16. सीमांत आवश्यकता में परिवर्तन करके अत्यधिक मांग तथा न्यून (अभावी) मांग को किस प्रकार नियंत्रित किया जा सकता है? संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

आंकिक अभ्यास

1. यदि प्रयोज्य आय 2000 रूपये तथा उपभोग व्यय 1500 रूपये हैं, तो औसत बचत प्रवृत्ति तथा औसत उपभोग प्रवृत्ति ज्ञात कीजिए।
2. यदि व्यय योग्य आय 1000 रूपये तथा उपभोग व्यय 750 रूपये हैं तो औसत बचत प्रवृत्ति तथा औसत उपभोग प्रवृत्ति ज्ञात कीजिए।
3. यदि $MPS = MPC$, तो गुणक (K) का मान ज्ञात कीजिए तथा K का अधिकतम तथा न्यूनतम मान लिखो।
4. यदि MPC का मान 0.9 है तो MPS का मान ज्ञात कीजिए।
5. निम्नलिखित आंकड़ों से APS व MPC के मानों की गणना कीजिए।
6. सारणी को पूरा कीजिए-

आय (रु. 000) :	MPC	बचत	APS
0	—	—	—
100	0.6	—	—
200	0.6	—	—
300	0.6	—	—

6 अंक वाले प्रश्न

1. आय तथा उत्पादन के संतुलन स्तर पर समग्र मांग तथा समग्र पूर्ति क्यों बराबर होनी चाहिए? एक रेखाचित्र की सहायता से व्याख्या कीजिए।
2. बचत तथा निवेश वक्रों की सहायता से आय के संतुलन स्तर की व्याख्या कीजिए। यदि नियोजित बचत नियोजित निवेश से अधिक हो जाए, तो इनमें समानता कैसे स्थापित होगी?
3. एक संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से निवेश गुणक की प्रक्रिया की व्याख्या कीजिए।
4. क्या अल्परोजगार की अवस्था में संतुलन हो सकता है? एक रेखाचित्र की सहायता से स्पष्ट कीजिए।
5. स्फीति अंतराल तथा अवस्फीति अंतराल में अंतर बताओ। अवस्फीति अंतराल को रेखाचित्र द्वारा दिखाइए। व्याख्या कीजिए।
6. एक अर्थव्यवस्था में बचत फलन $S = -50 + 0.5Y$ (जहाँ S = बचत और Y = राष्ट्रीय आय) और निवेश व्यय 700 है। इससे निम्नलिखित का परिकलन कीजिए।
 - (i) राष्ट्रीय आय का संतुलन स्तर
 - (ii) राष्ट्रीय आय के संतुलन स्तर पर उपयोग व्यय
7. $C = 100 + 0.75Y$ है। (जहाँ C = उपभोग व्यय तथा Y = राष्ट्रीय आय) और निवेश व्यय 800 है। इस सूचना के आधार पर निम्नलिखित का परिकलन कीजिए-
 - (i) राष्ट्रीय आय का संतुलन स्तर
 - (ii) राष्ट्रीय आय के संतुलित स्तर पर बचत।

8. एक अर्थव्यवस्था में निम्न उपभोग फलन दिया गया है-

$$C = 100 + 0.5 Y$$

एक संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से दिखाइए कि इस अर्थव्यवस्था में जब आय में वृद्धि होती है तो APC में कमी होती है।

उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल H.O.T.S.

9. एक अर्थव्यवस्था के लिए बचत की सीधी रेखा खींचिए। इस रेखा से उपभोग वक्र की व्युत्पत्ति कीजिए। एवं व्युत्पन्न की पद्धति का वर्णन कीजिए। यह दर्शाइए कि उपभोग वक्र के ऊपर किस बिन्दु पर औसत उपभोग प्रवृत्ति एक होती है।
10. एक रेखाचित्र की सहायता से अल्प (अपूर्ण) रोजगार की धारणा को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए। निवेश में वृद्धि पूर्ण रोजगार संतुलन को प्राप्त करने में कैसे सहायता करती है?
11. समष्टि अर्थशास्त्र में अभावी मांग का क्या अर्थ है? इसे रेखाचित्र के द्वारा दर्शाइए? खुले बाजार की क्रियाएँ इस समस्या के समाधान में क्या भूमिका निभाती हैं।
12. उन चरणों की व्याख्या कीजिए जिनके द्वारा उपभोग वक्र से बचत वक्र प्राप्त किया जा सकता है।
13. यदि अर्थव्यवस्था में $MPC = 0.8$ है तो निम्नलिखित सारिणी को पूरा कीजिए-

आय (रु.) (Y)	उपभोग (रु.) (C)	बचत (रु.) (S)	निवेश (रु.) (I)	<i>AD</i> (रु)	<i>AS</i> (रु)
0		-60	40		
100			40		
200			40		
300			40		
400			40		
500			40		
600			40		
700			40		

14. यदि एक अर्थव्यवस्था में उपभोग फलन $C = 75 + 0.9Y$ तथा निवेश व्यय रु. 400 करोड़ है तो गणना कीजिए।
- (अ) आय का संतुलन स्तर
 (ब) आय के संतुलन स्तर पर बचत।
15. मुद्रा स्फीति अन्यायपूर्ण और मुद्रा अवस्फीति अनुपयुक्त। परन्तु दोनों में अधिक खराब मुद्रा अवस्फीति है। कथन के पक्ष में तर्क दें।

बहुविकल्पीय प्रश्नों का उत्तर

- 1. (b); 2. (b); 3. (c); 4. (b); 5. (c); 6. (d); 7. (b); 8. (a); 9. (d); 10. (d); 11. (b).**

3-4 अंक वाले प्रश्नों के हल

$$1. \quad APC = \frac{1500}{2000} = 0.75$$

$$APS = 1 - APC = 0.25$$

$$2. \quad APC = \frac{750}{1000} = 0.75$$

$$APS = 1 - APC = 0.25$$

3. $K = 2$, K का अधिकतम मान अनंत तथा न्यूनतम मान एक होता है।

$$4. \quad MPS = 1 - MPC = 1 - 0.9 = 0.1$$

5.

आय (Rs. 1000)	उपभोग (Rs. 1000)	MPC (DC/DY)	APS (S/Y)
0	40	—	—
100	120	-0.2	0.8
200	200	0	0.8
300	280	0.067	0.8
400	360	0.1	0.8

6.

<i>Income</i>	<i>MPC</i>	<i>Savings</i>	<i>APS</i>
0	—	-90	—
100	0.6	-50	-0.5
200	0.6	-10	-0.05
300	0.6	-30	0.1

6 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

1.

आय (Y)	उपभोग (C)	बचत (S)	निवेश (I)	AD (C+I)	AS (C+S)
0	60	-60	40	100	0
100	140	-40	40	180	100
200	220	-20	40	260	200
300	300	0	40	340	300
400	380	20	40	420	400
500	460	40	40	500	500
600	540	60	40	580	600
700	620	80	40	660	700

18. (a)

$$AD = C + I$$

$$AD = 75 + 0.9Y + 400$$

$$AD = 475 + 0.9Y$$

संतुलन में

$$AS = AD$$

$$Y = 475 + 0.9Y$$

$$0.1Y = 475$$

$$Y = 4750 \text{ रुपये}$$

(b)

$$C = 75 + 0.9Y$$

$$= 0.75 + 0.9 (4750)$$

$$= 75 + 4275$$

$$= 4350 \text{ रुपये।}$$

$$S = Y - C$$

$$= 4750 - 4350 = 400$$

$$S = 400$$

बहुविकल्पीय प्रश्न (1 अंक)

1. आय तथा रोजगार के निर्धारण का सिद्धान्त आधारित है-

(a) प्रायोजित चर	(b) वास्तविक चर
(c) दोनों (a) तथा (b)	(d) उपरोक्त में से कोई नहीं।
2. MPS बराबर है -

(a) $\frac{S}{Y}$	(b) $\frac{C}{Y}$
(c) $\frac{\Delta S}{\Delta Y}$	(d) $\frac{\Delta C}{\Delta Y}$
3. निम्नलिखित में से कौन-सी बेरोजगारी को देश के श्रम बल में शामिल नहीं किया जाता है-

(a) अदृश्य बेरोजगारी
(b) अनैच्छिक बेरोजगारी
(c) ऐच्छिक बेरोजगारी
(d) मौसमी बेरोजगारी
4. अतिरेग माँग से होती है-

(a) रोजगार के स्तर में वृद्धि
(b) रोजगार के स्तर में कमी
(c) रोजगार के स्तर में कोई परिवर्तन नहीं
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

5. उपभोग वक्र एक सीधी रेखा होती है जब
- APC घटता है तथा MPC बढ़ता है।
 - APC तथा MPC दोनों घटते हैं।
 - APC घटता है परन्तु MPC स्थिर रहता है।
 - APC स्थिर रहता है तथा MPC बढ़ता है।
6. केन्द्रीय बैंक द्वारा स्फीतिक अन्तराल को नियन्त्रित किया जाता है-
- बैंक दर में वृद्धि द्वारा
 - सरकारी प्रतिभूतियों के बिक्री द्वारा
 - एल.आर.आर. में वृद्धि द्वारा
 - उपरोक्त सभी द्वारा।
7. पूर्ण रोजगार स्तर पर AD तथा AS के बीच अन्तराल को नियन्त्रित करने का रोजकोषीय उपाय है-
- खुले बाजार की क्रियाएँ
 - सीमान्त आवश्यकता
 - सार्वजनिक व्यय
 - बैंक दर
8. यदि पूर्ण रोजगार सन्तुलन के पूर्व AD तथा AS में समता स्थापित हो जाए तो उसे कहते हैं-
- अधिपूर्ण रोजगार सन्तुलन
 - अल्प रोजगार सन्तुलन
 - सन्तुलन स्थिर रहेगा
 - दोनों (a) तथा (b)
9. यदि निवेश में 1000 करोड़ रूपये वृद्धि से राष्ट्रीय आय में 5000 करोड़ रूपये की वृद्धि होती है तो निवेश गुणक का मान होगा।
- 4
 - 3
 - 5
 - 2
10. नकद कोषानुपात में वृद्धि का प्रभाव होगा:
- समग्र मांग में कमी

- (b) समग्र माँग में वृद्धि
- (c) समग्र माँग में कोई परिवर्तन नहीं
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

उत्तर

1. (a); 2. (c); 3. (c); 4. (c); 5. (c); 6. (d); 7. (c); 8. (b); 9. (c); 10. (a).

अति लघु उत्तर वाले प्रश्न (1 अंक)

- प्र. 1.** समष्टि अर्थशास्त्र में 'समग्र आपूर्ति' से क्या अभिप्राय है?
- उत्तर.** एक अर्थव्यवस्था की सभी उत्पादक इकाईयों द्वारा एक निश्चित समयावधि में सभी अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के नियोजित उत्पादन के कुल मूल्य को समग्र पूर्ति कहते हैं।
- प्र. 2.** सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति की परिभाषा दीजिए।
- उत्तर.** उपभोग में परिवर्तन तथा आय में परिवर्तन के अनुपात को, सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति कहते हैं।
- प्र. 3.** पूर्ण रोजगार का अर्थ बताइए।
- उत्तर.** इससे अभिप्राय अर्थव्यवस्था की ऐसी स्थिति से है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति जो योग्य है तथा प्रचलित मौद्रिक मजदूरी की दर पर काम करने को तैयार है, को रोजगार मिल जाता है।
- प्र. 4.** आरक्षित नगदी निधि (CRR) अनुपात की परिभाषा दीजिए।
- उत्तर.** CRR (आरक्षित नगदी) निधि वाणिज्यिक बैंकों की जमाओं का वह अनुपात है जो उन्हें केन्द्रीय बैंक के पास रखना होता है।
- प्र. 5.** रेपो दर की परिभाषा दीजिए।
- उत्तर.** केन्द्रीय बैंक जिस ब्याज दर वाणिज्यिक बैंकों को अल्पकालीन ऋण देते हैं, उसे रेपो दर कहते हैं।
- प्र. 6.** सीमांत उपभोग प्रवृत्ति का मूल्य एक से अधिक क्यों नहीं हो सकता?

- उत्तर. क्योंकि उपभोग में परिवर्तन, आय में परिवर्तन से अधिक नहीं हो सकता।
- प्र. 7.** समविच्छेद बिंदु या समता बिंदु या समस्तर बिन्दु किसे कहते हैं?
- उत्तर. समविच्छेद बिन्दु वहाँ प्राप्त होता है जहाँ बचत शून्य ($S = 0$) होती है तथा उपभोग(C) = आय (Y).

3-4 अंक वाले प्रश्न

- प्र. 1.** ऐच्छिक व अनैच्छिक बेरोजगारी के बीच अन्तर बताइए।
- उत्तर. **ऐच्छिक बेरोजगारी :** यह बेरोजगारी का वह रूप है जिसमें योग्य व्यक्ति मजदूरी की प्रचलित दर पर रोजगार या कार्य उपलब्ध होने के बावजूद काम करने को तैयार नहीं है।
अनैच्छिक बेरोजगारी : यह बेरोजगारी का वह रूप है जहाँ योग्य व्यक्ति बाजार में प्रचलित मजदूरी दर पर काम करने के लिए तैयार है, लेकिन रोजगार नहीं मिलता है।
- प्र. 2.** एक अर्थव्यवस्था में सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC) 0.75 है। अर्थव्यवस्था में निवेश व्यय में रुपये 75 करोड़ की वृद्धि हाती है। राष्ट्रीय आय में कुल वृद्धि ज्ञात कीजिए।

उत्तर. $K = \frac{1}{1 - MPC} = \frac{1}{1 - 0.75}$
 $K = 4$

$$K = \frac{\Delta Y}{\Delta I}$$

$$4 = \frac{\Delta Y}{75}$$

$$\Delta Y = 4 \times 75 = 300 \text{ Crore.}$$

- प्र. 3.** एक अर्थव्यवस्था सन्तुलन में है। इसका उपभोग फलन = $300 + 0.8Y$ है तथा निवेश रु. 700 करोड़ हो तो राष्ट्रीय आय ज्ञात कीजिए।
- उत्तर. $C = 300 + 0.8Y$
 $Y = C + I$

$$Y = 300 + 0.8Y + 700$$

$$0.2Y = 1000$$

$$Y = 5000$$

राष्ट्रीय आय = Rs. 5000

Q. 4. कारण सहित बताइए कि निम्न कथन सत्य हैं या असत्य?

1. जब सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति शून्य है तो निवेश गुणक का मान भी शून्य होगा।
2. औसत बचत प्रवृत्ति का मान कभी भी शून्य से कम नहीं होता है।
3. जब $MPC > MPS$ तथा निवेश गुणक का मान 5 से अधिक होगा।
4. सीमान्त बचत प्रवृत्ति (MPS) का मान कभी भी ऋणात्मक नहीं होता है।
5. जब निवेश गुणक एक होता है तो सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC) शून्य होती है।
6. औसत बचत प्रवृत्ति का मान 1 से अधिक नहीं हो सकता है।

- उत्तर.**
1. असत्य, क्योंकि जब $MPC = 0$, $K = 1/(1 - MPC) = 1/1 - 0 = 1$,
अतः निवेश गुणक का मान एक होता है।
 2. असत्य, क्योंकि जब अर्थव्यवस्था में बचतें होती हैं तो APS ऋणात्मक होती है।
 3. सत्य, यदि $MPC, 0.8$ से अधिक हो

या

असत्य, यदि $MPC, 0.5$ से अधिक हो लेकن 0.8 से अधिक न हो।

4. सत्य, क्योंकि $MPS = \Delta S / \Delta Y$ होता है और आय में वृद्धि होने पर बचतों में कभी भी कमी नहीं हो सकता।
5. सत्य, क्योंकि $K = 1/(1 - MPC) = 1 / (1 - 0) = 1$.
6. सत्य, क्योंकि बचत, आय से अधिक नहीं हो सकती।

प्र. 5. निवेश गुणक तथा सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति में सम्बन्ध की व्याख्या कीजिए।

उत्तर. $K = 1/(1 - MPC)$, प्रदर्शित करता है कि MPC तथा निवेश गुणक में सीधा सम्बन्ध होता है। यदि बढ़ी हुई आय का अधिक भाग उपभोग पर व्यय किया जाएगा, तो निवेश गुणक का मान भी अधिक होगा। अर्थात् MPC का मान जितना अधिक होगा, गुणक का मान भी उतना ही अधिक होगा और विलोमशः। उदाहरण : MPC = 0.5, K = 2; MPC = 0.75, K = 4; MPC = 0.8, K = 5.

प्र. 6. एक अर्थव्यवस्था का बचत वक्र रु. 30 करोड़ का ऋणात्मक, अंतः खण्ड बनाता है और अतिरिक्त आय का 20% भाग बचाया जाता है। बचत तथा उपभोग फलन ज्ञात कीजिए।

Ans. $\bar{C} = 30 \text{ करोड़ रु.}$

$$MPS = 0.2$$

$$\text{अतः बचत फलन} / S = -\bar{C} + (1 - b)y$$

$$= -30 + 0.2Y$$

$$\text{उपभोग फलन} MPC = 1 - 0.2 = 0.8$$

$$C = \bar{C} + by$$

$$C = 30 + 0.8Y$$

6 अंक वाले प्रश्न

प्र. 1. अर्थव्यवस्था में 'अभावी मांग' दूर करने में निम्नलिखित की भूमिका समझाइए।

1. खुली बाजार कार्यवाही (क्रियाएँ)

2. बैंक दर

उत्तर. 1. केन्द्रीय बैंक द्वारा खुले बाजार में सरकारी प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय को खुले बाजार की क्रियाएँ कहते हैं।

अभावी मांग की स्थिति में केन्द्रीय बैंक प्रतिभूतियों को खरीदता है परिणाम स्वरूप उतने मूल्य की नकद राशि से वाणिज्य बैंक की ऋण देने की क्षमता बढ़ जाती है। अंततः समग्र मांग बढ़ जाती है और अभावी मांग ठीक हो जाती है।

2. बैंक दर वह ब्याज की दर है जिस पर केन्द्रीय बैंक वाणिज्यिक बैंकों को दीर्घकालीन उधार देता है। अभावी मांग की स्थिति में केन्द्रीय बैंक, बैंक दर घटा देता है। इससे वाणिज्यिक बैंक ऋणों पर ब्याज दर घटाने को प्रोत्साहित होते हैं, फलस्वरूप लोग अधिक ऋण लेते हैं जिससे समग्र मांग बढ़ती है।

प्र. 2. अर्थव्यवस्था में ‘मांग अधिक्य’ करने में निम्नलिखित की भूमिका समझाइए।

1. बैंक दर 2. खुले बाजार की क्रियाएँ।

उत्तर. 1. मांग अधिक्य की स्थिति ठीक करने के लिए केन्द्रीय बैंक, बैंक दर बढ़ा देता है, जिससे वाणिज्यिक बैंक जिस दर पर ऋण देते हैं उसे बढ़ाने को मजबूर होते हैं। फलस्वरूप लोग कम ऋण लेते हैं और समग्र मांग घटती है।
2. जब मांग अधिक्य की स्थिति होती है तो केन्द्रीय बैंक सरकारी प्रतिभूतियों को बेचता है। ऐसी स्थिति में वाणिज्यिक बैंकों से मुद्रा केन्द्रीय बैंक के पास चली जाती है। इससे बैंकों की जमाएँ कम हो जाती हैं और ऋण देने का सामर्थ्य कम हो जाता है। कम ऋण दिया जाता है इससे समग्र मांग घटती है।

प्र. 3. एक अर्थव्यवस्था में अस्फीतिकारी अन्तराल दूर करने में निम्नलिखित की भूमिका समझाइए।

1. सार्वजनिक व्यय 2. वैद्य आरक्षित अनुपात (LRR)

उत्तर. 1. अस्फीतिकारी अन्तराल अथवा अभावी मांग की स्थिति में सरकार को सार्वजनिक खर्च में वृद्धि करनी चाहिए जैसे भवन निर्माण, पुलों व सड़कों का निर्माण आदि। इससे रोजगार के स्तर में वृद्धि होगी। फलस्वरूप आय में वृद्धि होगी और अंततः क्रय शक्ति में वृद्धि होगी और समग्र मांग बढ़ेगी।
2. वैद्य आरक्षित अनुपात से अभिप्राय जमाओं के एक न्यूनतम प्रतिशत से है जिसे व्यापारिक बैंक अनिवार्य रूप से नकदी के रूप में केन्द्रीय बैंक के पास या अपने पास रिजर्व रखते हैं। अस्फीतिकारी अन्तराल की स्थिति में केन्द्रीय बैंक LRR कम कर देता है। फलस्वरूप बैंकों द्वारा ऋण देने के लिए कोष की उपलब्धता बढ़ जाती है। और समग्र मांग बढ़ती है।

प्र. 4. अस्फीतिकारी अन्तराल दूर करने में सीमान्त आवश्यकता का क्या योगदान है? वर्णन कीजिए।

उत्तर. सीमान्त आवश्यकता से अभिप्राय ऋणी द्वारा जमानत का मार्जिन या सीमा है। जब मार्जिन कम होता है तो उधार लेने की सीमा बढ़ जाती है। अवस्फीतिकारी अन्तर दूर करने के लिए केन्द्रीय बैंक मार्जिन कम कर देता है जिससे ऋणी की उधार की क्षमता बढ़ जाती है व समग्र मांग में भी वृद्धि हो जाती है।

प्र. 5. एक अर्थव्यवस्था में बढ़ी हुई आय का 75% उपभोग पर व्यय किया जाता है। यदि निवेश में वृद्धि रु. 1000 हो तो ज्ञात करो-

1. आय में कुल वृद्धि
2. उपभोग व्यय में कुल वृद्धि

उत्तर. $MPC = 75\% = 75/100 \text{ अर्थात् } 3/4.$

$$MPS = 1 - 3/4 = 1/4 \quad K = 1/MPS = 1/(1/4) = 4$$

1. $\Delta Y = \Delta I \times K$
 $\Delta Y = 1000 \times 4$
 $= 4000 \text{ रूपये}$
2. $Y = C + I$
 $C = Y - I$
 $= 4000 - 1000$
 $= 3000 \text{ रूपये}$

प्र. 6. एक अर्थव्यवस्था में आय का संतुलन स्तर 12000 करोड़ रु. है। सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति तथा सीमान्त बचत प्रवृत्तियों का अनुपात 3:1 है। अर्थव्यवस्था के नए संतुलन स्तर 20000 करोड़ रु. के लिए कितने अतिरिक्त निवेश की आवश्यकता होगी?

उत्तर. दिया है $Y = 12000 \text{ करोड़ रु.}$

$$MPC : MPS = 3 : 1$$

$$MPC = \frac{3}{4}, \quad MPS = \frac{1}{4}$$

$$\Delta I = ?$$

$$\text{नई संतुलन आय} = 20000 \text{ करोड़ रु.}$$

$$\Delta Y = 20000 - 12000 = 8000 \text{ Crores रु.}$$

$$K = 1/MPS = 4$$

$$K = \Delta Y / \Delta I ; \quad 4 = 8000 / \Delta I$$

$$\Delta I = 8000 / 4 = 2000 \text{ करोड़ रु.}$$

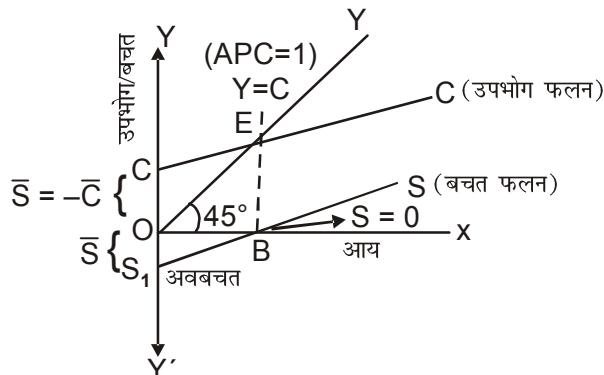
प्र. 7. रेपो दर और बैंक दर में अन्तर दीजिए।

उत्तर. रेपो दर और बैंक दर दोनों का अर्थ है, वह दर जिस पर केन्द्रीय बैंक वाणिज्यिक बैंकों को ऋण देता है। लेकिन रेपो दर का सम्बन्ध अल्पकालीन ऋणों से होता है और इस पर अल्पकालीन ब्याज दर लागू होती है, जबकि बैंक दर का सम्बन्ध दीर्घकालीन ऋणों से होता है और इस पर दीर्घकालीन ब्याज दर लागू होती है।

प्र. 8. दिए बचत वक्र से उपभोग वक्र प्राप्त करने में, लिए जाने वाले चरण लिखिए। रेखांचित्र का प्रयोग करें।

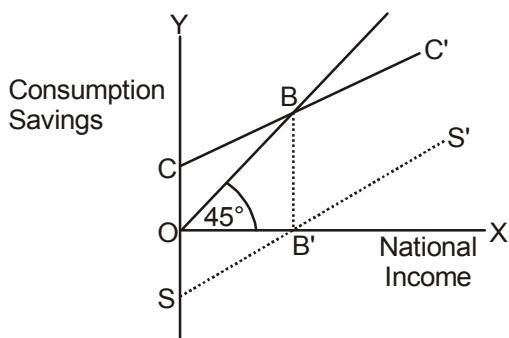
उत्तर. दिए बचत वक्र दिया गया है। इस वक्र के आधार पर उपभोग फलन प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित चरण हैं।

1. सर्वप्रथम मूल बिन्दु से गुजरती हुई 45° रेखा का निर्माण कीजिए।
2. फिर Y अक्ष के धनात्मक भाग पर OS_1 के बराबर OC लीजिए जोकि उपभोग वक्र का प्रारम्भिक बिन्दु है।
3. X -अक्ष पर, B बिन्दु शून्य बचत को दर्शाता है। इस बिन्दु से एक लम्ब खींचिए, जो 45° रेखा को E बिन्दु पर काटे। इस बिन्दु पर $C = Y$ है। इस प्रकार E बिन्दु उपभोग वक्र पर स्थित दूसरा बिन्दु प्राप्त हो जाता है।
4. अंत में, C और E बिन्दु को मिलाते हुए इसे आगे तक ले जाइए। इस प्रकार, CC वांछित उपभोग वक्र प्राप्त हो जाएगा।



प्र. 9. उपभोग वक्र से बचत वक्र प्राप्त करने में लिए जाने वाले चरण लिखिए।
रेखाचित्र का प्रयोग कीजिए।

उत्तर.



1. CC' उपभोग वक्र है
2. OC के बराबर OS हो
3. OX अक्ष पर 0 बिन्दु से 45° की रेखा खींचों जो CC' को बिन्दु B पर काटती है।
4. B बिन्दु से OX पर एक लम्ब खींचों जो OX को B' पर काटता है।
5. S और B' को मिलाते हुए एक रेखा SS' खींचों
6. SS' बचत वक्र है।

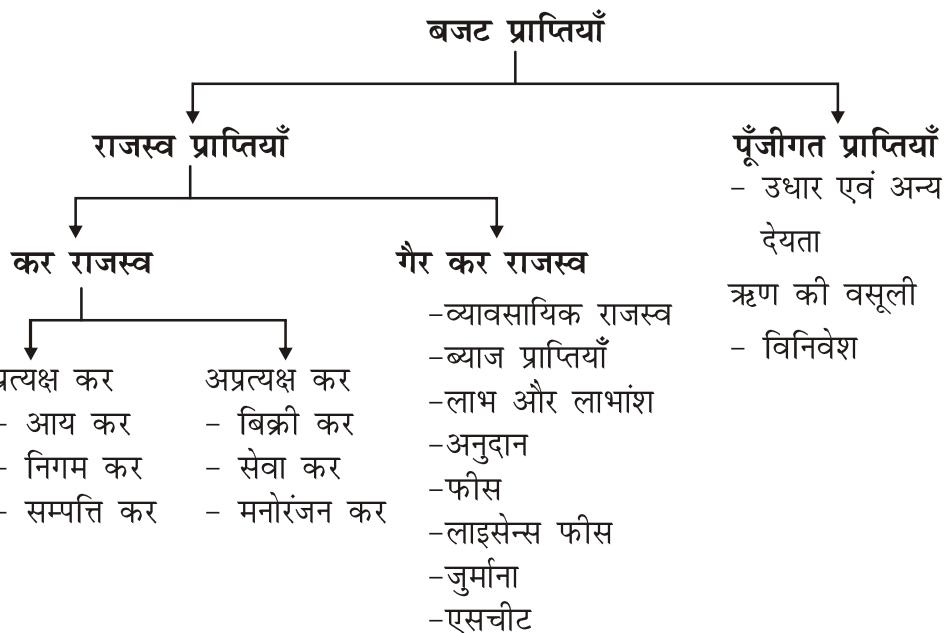
इकाई-VIII

सरकारी बजट वं अर्थव्यवस्था

स्मरणीय बिन्दु

- **बजट :** यह आगामी वित्तीय वर्ष के लिए सरकार की अनुमानित प्राप्तियों एवं अनुमानित व्ययों का वित्तीय विवरण है।
- **बजट के मुख्य उद्देश्य**
 - (i) संसाधनों का पुनः वितरण
 - (ii) आय व धन का पुनः वितरण
 - (iii) आर्थिक स्थिरता
 - (iv) सार्वजनिक उद्यमों का प्रबन्ध
 - (v) आर्थिक विकास
 - (vi) निर्धनता एवं बेरोजगारी उन्मूलन
- **बजट के घटक**
 - (a) राजस्व बजट
 - (b) पूँजीगत बजट

राजस्व बजट सरकार की राजस्व प्राप्तियों तथा व्ययों का विवरण है।
- **बजट को दो भागों में बाँटा जाता है-**
 1. **बजट प्राप्तियाँ :** इससे तात्पर्य एक वित्तीय वर्ष की अवधि में सरकार की सभी स्रोतों से अनुमानित मौद्रिक प्राप्तियों से है। बजट प्राप्तियों को निम्न दो उप-वर्गों में बाँटा जा सकता है- राजस्व प्राप्तियाँ तथा पूँजीगत प्राप्तियाँ।



प्रत्यक्ष कर : प्रत्यक्ष कर वह कर है जो उसी व्यक्ति द्वारा दिया जाता है जिस पर वह कानूनी रूप में लगाया जाता है। इस कर का भार अन्य व्यक्तियों पर नहीं टाला जा सकता है।

उदाहरण - आय कर, सम्पत्ति कर।

अप्रत्यक्ष कर : अप्रत्यक्ष कर वे कर हैं जो लगाए तो किसी एक व्यक्ति पर जाते हैं किंतु इनका आंशिक या पूर्ण रूप से भुगतान किसी अन्य व्यक्ति को करना पड़ता है। इस कर का भार अन्य व्यक्तियों पर टाला जा सकता है।
उदाहरण - बिक्री कर, मूल्य वृद्धि कर (VAT)

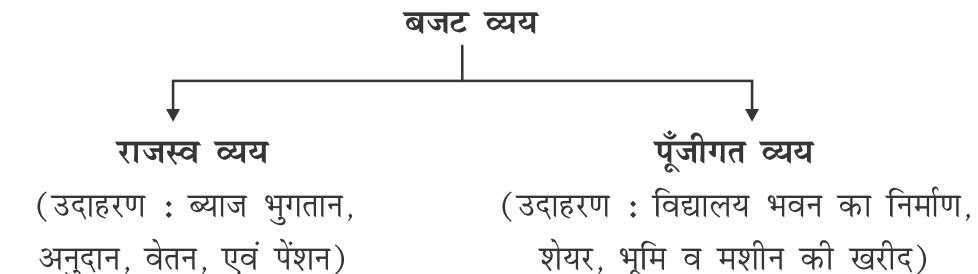
राजस्व प्राप्तियाँ

1. ये सरकार की परिसम्पत्तियों को कम नहीं करती हैं।
2. ये सरकार के दायित्वों में वृद्धि नहीं करती है।

पूँजीगत प्राप्तियाँ

- (i) ये सरकार की परिसम्पत्तियों को कम कर देती है।
- (ii) ये सरकार के दायित्वों में वृद्धि करती है।

2. **बजट व्यय** : इससे तात्पर्य एक वित्तीय वर्ष की अवधि में सरकार द्वारा विभिन्न मदों के ऊपर की जाने वाली आनुमानित व्यय से है। बजट व्यय को निम्न दो मुख्य उप वर्गों में बाँटा जाता है, राजस्व व्यय तथा पूँजीगत व्यय।



राजस्व व्यय

- (i) ये सरकार की परिसम्पत्तियों में वृद्धि नहीं करते हैं।
- (ii) ये सरकार के दायित्वों में कोई कमी नहीं करते हैं। जैसे- ब्याज का भुगतान, आर्थिक सहायता, कानून व्यवस्था बनाये रखने पर व्यय आदि।

पूँजीगत व्यय

- (i) ये सरकार की परिसम्पत्तियों में वृद्धि करते हैं।
- (ii) सरकार के दायित्वों में कमी करते हैं। जैसे विद्यालय भवनों का निर्माण, पुराने ऋण का भुगतान, वित्तीय परिसम्पत्तियों का क्रय इत्यादि।

राजस्व घाटा : जब सरकार के कुल राजस्व व्यय उसकी कुल राजस्व प्राप्तियों से अधिक हो।

राजस्व घाटे के प्रभाव :

- (i) यह सरकार की भावी देनदारियों में वृद्धि करता है।
- (ii) यह सरकार के अनावश्यक व्ययों की जानकारी देता है।
- (iii) यह ऋणों के बोझ को बढ़ाता है।

राजकोषीय घाटा : कुल व्यय की उधार रहित प्राप्तियों पर अधिकता।

राजकोषीय घाटा : कुल व्यय - उधार के बिना कुल बजट प्राप्तियाँ

राजकोषीय घाटे के प्रभाव

- (i) यह मुद्रा स्फीति को बढ़ाता है।

(ii) देश ऋण - जाल में फँस जाता है।

(iii) यह देश के भावी विकास तथा प्रगति को कम करता है।

- प्राथमिक घाटा :** राजकोषीय घाटे में से ब्याज अदायगियों को घटाने से प्राथमिक घाटे का पता चलता है।
- प्राथमिक घाटा :** राजकोषीय घाटा - ब्याज अदायगियाँ
- प्राथमिक घाटे के प्रभाव**
 1. इससे पता चलता है कि भूतपूर्व नीतियों का भावी पीढ़ी पर क्या भार पड़ेगा।
 2. शून्य या प्राथमिक घाटे से अभिप्राय है कि सरकार पुराने ऋणों का ब्याज चुकाने के लिए उधार लेने को मजबूर है।
 3. यह ब्याज अदायगियों रहित राजकोषीय घाटे को पूरा करने के लिए सरकार की उधार जरूरतों को दर्शाता है।
- बजटीय घाटा :** जब सरकार का कुल बजट व्यय, बजट प्राप्तियों से अधिक होता है।
- बजटीय घाटा :** कुल बजट व्यय - कुल बजट प्राप्तियाँ।

बहुविकल्पीय प्रश्न (1 अंक)

1. सरकार द्वारा विनिवेश का अर्थ है -
 - (a) अपनी अचल पूँजीगत परिसम्पत्तियाँ बेचना
 - (b) अपने सार्वजनिक उद्यमों के शेयर बेचना
 - (c) अपने भवन बेचना
 - (d) उपरोक्त सभी
2. इनमें प्रत्यक्ष कर है?

(a) सम्पत्ति कर	(b) सेवा कर
(c) उत्पाद शुल्क	(d) मनोरंजन कर

3. अगर बजटीय घाटा शून्य हो तथा उधार व अन्य देयतायें 70 करोड़ रु. की हो तो राजकोषीय घाटा होगा-
- (a) 10 करोड़ रु. (b) शून्य
(c) 70 करोड़ रु. (d) उपरोक्त में से कोई नहीं
4. ब्याज का भुगतान है-
- (a) राजस्व व्यय (b) पूँजीगत व्यय
(c) राजस्व घाटा (d) राजकोषीय घाटा
5. उधार व अन्य देयताओं को बजटीय घाटे में जोड़ने से मिलता है-
- (a) प्राथमिक घाटा (b) राजकोषीय घाटा
(c) राजस्व घाटा (d) इनमें से कोई नहीं
6. पूँजीगत प्राप्तियाँ आती हैं-
- (a) बाजार ऋण से (b) भविष्य निधि कोष से
(c) ऋणों की वसूली से (d) उपरोक्त सभी से
7. कौन-सा सरकार का पूँजीगत व्यय है?
- (a) कर्मचारियों का वेतन (b) ब्याज का भुगतान
(c) मशीन का क्रय (d) आर्थिक सहायता
8. यदि बजट में, राजस्व घाटा रु. 50,000 है तथा उधर तथा अन्य देयताएँ रु. 75,000 करोड़ हैं, राजकोषीय घाटा कितना होगा?
- (a) 50,000 करोड़ रु. (b) 75,000 करोड़ रु.
(c) 25,000 करोड़ रु. (d) 1,25,000 करोड़ रु.
9. निम्न में से कौन सा गैर-कर राजस्व प्राप्ति का उदाहरण है?
- (a) सरकारी उपक्रम से लाभ (b) विनिवेश
(c) उत्पाद शुल्क (d) ऋणों की वसूली

10. राजकोषीय घाटे का निहितार्थ है-
- (a) उधार में वृद्धि (b) स्फीतिकारी दबाव
 (c) ब्याज भुगतान में वृद्धि (d) उपरोक्त सभी
11. सरकारी बजट में ऋण से अभिप्रायः है-
- (a) राजस्व घाटा (b) राजकोषीय घाटा
 (c) प्राथमिक घाटा (d) करों में कमी

उत्तर

1. (d); 2. (a); 3. (c); 4. (a); 5. (b); 6. (d); 7. (c); 8. (b); 9. (a); 10. (d); 11. (b).

3-4 अंक वाले प्रश्न

- सरकारी बजट का 'संसाधनों का आबंटन' (नियतन) उद्देश्य समझाइए?
- राजस्व बजट तथा पूँजीगत बजट में क्या अंतर है?
- राजस्व प्राप्तियों से क्या अभिप्राय है? राजस्व प्राप्तियों के स्रोतों की व्याख्या कीजिए?
- प्रत्यक्ष कर तथा अप्रत्यक्ष कर में अंतर लिखिए?
- पूँजीगत प्राप्तियों से आप क्या समझते हैं? पूँजीगत प्राप्तियों के मुख्य स्रोत क्या हैं?
- पूँजीगत घाटे तथा राजकोषीय घाटे का अर्थ लिखिए। राजकोषीय घाटा क्या दर्शाता है?
- राजस्व व्यय तथा पूँजीगत व्यय में क्या अन्तर है? प्रत्येक का एक-एक उदाहरण देकर समझाइए?
- सरकारी बजट के 'आय का पुनर्वितरण उद्देश्य' की व्याख्या कीजिए।
- बजट के 'आर्थिक स्थिरता' उद्देश्य की व्याख्या कीजिए।

10. किन परिस्थितियों में घाटे का बजट अर्थव्यवस्था के लिए अनुकूल होता है?
11. क्या राजकोषीय घाटा अनिवार्य रूप से मुद्रा स्फीति को बढ़ाता है? अपने मत के पक्ष में कारण दीजिए।
12. बचत के बजट को मुद्रास्फीति की स्थिति में कैसे प्रयोग किया जा सकता है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (6 अंक)

13. कारण देते हुए निम्नलिखित को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष करां में विभाजित कीजिए?

(i) मनोरंजन कर	(ii) निगम कर
(iii) उत्पाद शुल्क	(iv) पूँजी लाभ कर
14. सरकारी बजट के बारे में निम्नलिखित आंकड़ों से (क) राजस्व घाटा (ख) राजकोषीय घाटा और (ग) प्राथमिक घाटा ज्ञात कीजिए-

(अरब रु.)	
(i) योजनागत पूँजीगत व्यय	120
(ii) राजस्व व्यय	100
(iii) गैर-योजनागत पूँजीगत व्यय	80
(iv) राजस्व प्राप्तियाँ	70
(v) उधार छोड़कर पूँजीगत प्राप्तियाँ	140
(vi) ब्याज भुगतान	30
15. निम्नलिखित में भेद कीजिए-
 - (i) पूँजीगत व्यय और राजस्व व्यय
 - (ii) राजकोषीय घाटा और प्राथमिक घाटा
16. राजकोषीय घाटा उधार के बराबर क्यों होता है?

17. निम्न को राजस्व प्राप्तियों तथा पूँजीगत प्राप्तियों में वर्गीकृत कीजिए। कारण भी दीजिए।
- भारतीय तेल निगम द्वारा सरकार को दिया गया लाभांश
 - अमेरिका से आधारभूत विकास के लिए लिया गया ऋण
 - बिल गेट्स फाउंडेशन द्वारा दिया अनुदान।
 - एक सरकारी उपक्रम द्वारा दिया गया लाभ।
 - जनता से सरकार द्वारा राष्ट्रीय बचत पत्र द्वारा लिया गया उधार।
 - भारत सरकार द्वारा वर्ष 2014–15 में लाइसेंस तथा कोर्ट फीस की प्राप्ति।
18. निम्न को राजस्व व्यय तथा पूँजीगत व्यय से वर्गीकृत कीजिए। कारण भी दीजिए।
- विश्व बैंक को ऋणों की वापसी
 - आर्मी अफसरों को दिया गया वेतन
 - राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज
 - प्रधानमंत्री ग्रामीण सङ्क योजना के अन्तर्गत सङ्कों का निर्माण
 - नेपाल को भूकंप त्रासदी के लिए दी गई वित्तीय सहायता
 - बुलेट ट्रेन के निर्माण पर किया गया व्यय।
19. बेमौसम बरसात के कारण आवश्यक खाद्य पदार्थों की फसल बर्बाद हो चुकी है जिसके कारण इनकी कीमत ऊँची बनी रहेगी। इनकी कीमतों में कमी के लिए आप किन बजटीय उपायों का समर्थन करेंगे?
20. प्रत्येक वर्ष के बजट में वित्त मंत्री शराब तथा तम्बाकू पदार्थों पर उत्पाद शुल्क बढ़ा देते हैं क्योंकि ये पदार्थ हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। शुल्क बढ़ाने से वित्त मंत्री बजट के किस उद्देश्य को प्राप्त करना चाहते हैं?

3-4 अंक वाले प्रश्नों के लिए संकेत

13. (i) अप्रत्यक्ष कर (ii) प्रत्यक्ष कर
(iii) अप्रत्यक्ष कर (iv) प्रत्यक्ष कर

15. (a) राजस्व घाटा 30 अरब रु.
(b) राजकोषीय घाटा 90 अरब रु.
(c) प्राथमिक घाटा 60 अरब रु.

6 अंक वाले प्रश्नों के लिए संकेत

17. (a) राजस्व प्राप्तियाँ (b) पूँजीगत प्राप्तियाँ
(c) राजस्व प्राप्तियाँ (d) राजस्व प्राप्तियाँ
(e) पूँजीगत प्राप्तियाँ (f) राजस्व प्राप्तियाँ

18. (i) पूँजीगत व्यय (ii) राजस्व व्यय
(iii) राजस्व व्यय (iv) पूँजीगत व्यय
(v) राजस्व व्यय (vi) पूँजीगत व्यय

परीक्षा उपयोगी प्रश्न

एक अंक वाले प्रश्न (उत्तर सहित)

- प्र. 1.** ऋणों की वापसी पूँजीगत व्यय क्यों है?
- उ. इससे सरकार की देयता में कमी आती है।
- प्र. 2.** ऋणों की वसूली पूँजीगत प्राप्ति क्यों मानी जाती है?
- उ. क्योंकि इससे सरकार की परिसंपत्ति में वृद्धि होती है।
- प्र. 3.** राजस्व प्राप्तियों के दो उदाहरण दीजिए?
- उ. (i) कर की प्राप्तियाँ (ii) सरकारी उद्यम से प्राप्त आय
- प्र. 4.** बजट की परिभाषा लिखिए?
- उ. बजट आगामी वित्तीय वर्ष में सरकार की अनुमानित आय और अनुमानित व्यय का ब्यौरा है।
- प्र. 5.** राजस्ट बजट को परिभाषित कीजिए?
- उ. राजस्व बजट सरकार की वित्तीय वर्ष में अनुमानित राजस्व प्राप्तियों व राजस्व व्यय का ब्यौरा है।
- प्र. 6.** विनिवेश को परिभाषित कीजिए?
- उ. सरकार द्वारा सार्वजनिक उपक्रमों के शेयरों की बिक्री विनिवेश है।
- प्र. 7.** पूँजीगत व्यय क्या है?
- उ. पूँजीगत व्यय सरकार की एक वित्तीय वर्ष में अनुमानित पूँजीगत प्राप्तियों व पूँजीगत व्यय को दर्शाता है।
- प्र. 8.** प्रत्यक्ष कर क्या है उदाहरण देकर समझाइए।
- उ. प्रत्यक्ष कर, वे कर होते हैं जिसमें कर अदा करने की देनदारी और कर का भार एक ही (उसी) व्यक्ति पर पड़ता है।
- उदाहरण- आय कर, निगम कर

- प्र. 9.** अप्रत्यक्ष कर की परिभाषा दीजिए।
- उ. अप्रत्यक्ष कर, कर अदा करने की देनदारी और कर का भार अलग-अलग व्यक्तियों पर पड़ना अप्रत्यक्ष कर कहलाता है।
 उदाहरण : (i) सेवा कर, (ii) उत्पादन कर, बिक्री कर

3-4 अंक वाले प्रश्न

- प्र. 1.** सरकारी बजट का 'आय का पुनर्वितरण' उद्देश्य समझाइए।

अथवा

सरकारी बजट की सहायता से आप की असमानताओं को किस प्रकार कम किया जा सकता है? समझाइए।

- उ. अर्थव्यवस्था में आय के पुनर्वितरण अथवा आय व धन की असमानताओं को कम करने हेतु बजटीय नीतियाँ एक उपयोगी माध्यम हैं। इसके लिए सरकार अपनी कर नीति तथा सार्वजनिक व्यय जैसे उपकरणों में अपेक्षित परिवर्तन करती है। अमीरों पर अधिक कर का भार डालकर सरकार उनकी आय व सम्पत्ति को कम कर सकती है तथा गरीबों के कल्याण पर किए जाने वाले सार्वजनिक व्यय में वृद्धि करके सरकार गरीबों के रहन-सहन के स्तर व क्रय शक्ति को बढ़ा सकती है जिससे आय व धन की असमानताओं में कमी आएगी।
- प्र. 2.** सरकारी बजट का संसाधनों का पुनः आबंटन उद्देश्य समझाइए।
- उ. सरकार अर्थव्यवस्था में अधिकतम लाभ तथा सामाजिक कल्याण के बीच सन्तुलन स्थापित करने के लिए बजट की सहायता से संसाधनों का पुनः आबंटन करने का प्रयास करती है। संसाधनों के पुनः आबंटन हेतु सरकार अलाभदायक क्षेत्रों में निवेश वृद्धि हेतु करों में छूट तथा आर्थिक सहायता प्रदान कर सकती है। सरकार स्वयं भी ऐसी वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन कर सकती हैं जिनके उत्पादन में निजी क्षेत्र की रुचि न हो। सरकार सामाजिक जीवन पर दुष्प्रभाव छोड़ने वाली वस्तुओं के उत्पादन पर कर भार में वृद्धि करके इन क्षेत्रों में निवेश को हतोत्साहित कर सकती है।
- प्र. 3.** राजस्व प्राप्ति तथा पूँजीगत प्राप्ति के बीच उदाहरण की सहायता से अन्तर कीजिए।

उ. राजस्व प्राप्तियाँ

1. ये वे प्राप्तियाँ हैं, जिनसे सरकार की परिसम्पत्तियों कम नहीं होती।
2. ये प्राप्तियाँ, सरकार के दायित्वों को उत्पन्न नहीं करती।
3. **उदाहरण-** कर, सरकारी विभागों के उत्पादन की बिक्री से आय।

पूँजीगत प्राप्तियाँ-

1. इन प्राप्तियों से सरकार की परिसम्पत्तियों में कमी आती है।
2. ये प्राप्तियाँ सरकार के दायित्वों में वृद्धि करती हैं।
3. **उदाहरण-** सरकारी ऋण, ऋणों की वसूली।

प्र. 4. राजस्व व्यय तथा पूँजीगत व्यय के बीच अन्तर उदाहरण की सहायता से कीजिए।

उ. राजस्व व्यय-

- (1) इन व्ययों से सरकारी परिसम्पत्तियों में कोई वृद्धि नहीं होती।
- (2) इन व्ययों से सरकार के दायित्वों में कमी नहीं होती।
- (3) **उदाहरण-** प्रतिरक्षा व्यय, आर्थिक सहायता पर व्यय।

पूँजीगत व्यय-

- (1) इन व्ययों से सरकारी परिसम्पत्तियों में वृद्धि होती है।
- (2) ये व्यय सरकारी दायित्वों को कम करते हैं।
- (3) **उदाहरण-** ऋणों की अदायगी, निर्माण पर व्यय।

प्र. 5. प्रत्यक्ष कर तथा अप्रत्यक्ष कर में उदाहरण की सहायता से अन्तर कीजिए।

उ. प्रत्यक्ष कर-

- (1) इस कर के भुगतान का दायित्व ओर वास्तविक भार एक ही व्यक्ति पर पड़ता है।
- (2) इस कर के भार को आगे टाला नहीं जा सकता।
- (3) **उदाहरण-** आयकर, सम्पत्ति कर।

अप्रत्यक्ष कर-

(1) इस कर के भुगतान का दायित्व और वास्तविक भार अलग-अलग व्यक्तियों पर पड़ता है।

(2) इस कर के भार को आगे टाला जा सकता है।

(3) उदाहरण- उत्पाद कर, बिक्री कर।

प्र. 6. राजकोषीय घाटे का अर्थ स्पष्ट कीजिए। इसके अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रमुख प्रभावों का उल्लेख कीजिए।

उ. राजकोषीय घाटा कुल बजट व्यय की उधार छोड़कर कुल बजट प्राप्तियों पर अधिकता को दर्शाता है। अर्थात् राजकोषीय घाटा मुख्यतः सरकार द्वारा सार्वजनिक व्ययों की पूर्ति हेतु लिए गए उधार के बराबर होता है।

राजकोषीय घाटा- कुल बजट व्यय - उधार छोड़कर कुल बजट प्राप्तियाँ

राजकोषीय घाटे का प्रभाव-

1. राजकोषीय घाटा से अर्थव्यवस्था में मुद्रा की पूर्ति बढ़ जाती है।

2. अर्थव्यवस्था पर ऋणों का भार बढ़ जाता है।

3. सामान्य कीमत बढ़ जाती है।

प्र. 7. राजस्व घाटा किसे कहते है? इसका निहितार्थ स्पष्ट कीजिए।

उ. **राजस्व घाटा:-** जब सरकार की कुल राजस्व व्यय उसकी कुल राजस्व प्राप्तियों से अधिक हो।

अर्थात् राजस्व घाटा, राजस्व व्यय की राजस्व प्राप्तियों पर अधिकता है।

निहितार्थ : 1. इसका अर्थ है कि सरकार पिछली बचतों को खर्च कर रही है।

2. इसका अर्थ है कि सरकार का वर्तमान व्यय उसके वर्तमान आय से अधिक है।

3. उच्च राजस्व घाटा सरकार को चेतावनी देता है कि या तो सरकार अपना व्यय कम करें अथवा सरकार राजस्व बढ़ाएं।

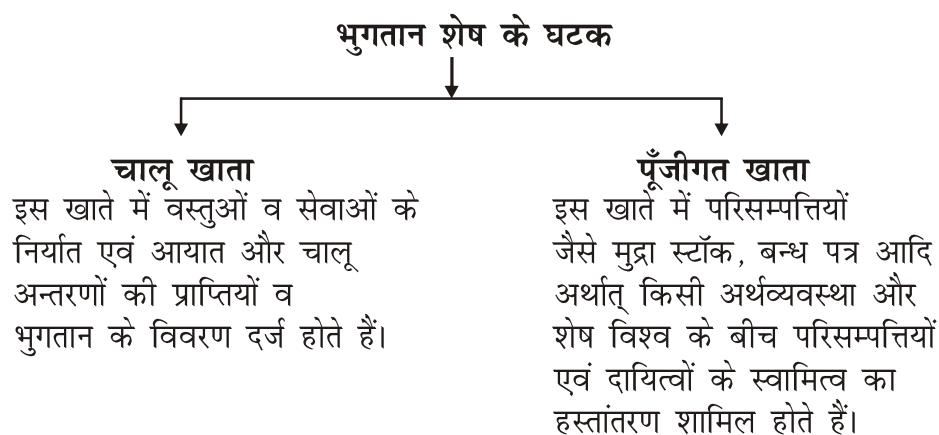
प्र. 8. निम्नलिखित आंकड़ों से (1) राजस्व घाटा (2) राजकोषीय घाटा (3) प्राथमिक घाटा ज्ञात करें।

1.	उधार को छोड़कर पूंजीगत प्राप्तियाँ	95
2.	राजस्व व्यय	100
3.	ब्याज भुगतान	10
4.	राजस्व प्राप्तियाँ	80
5.	पूंजीगत व्यय	110
उ.	1. राजस्व घाटा = राजस्व व्यय – राजस्व प्राप्तियाँ = $100 - 80 = \text{रु. } 20 \text{ करोड़}$	
2.	राजकोषीय घाटा = (राजस्व व्यय + पूंजीगत व्यय) – राजस्व प्राप्तियाँ – उधार को छोड़कर पूंजीगत प्राप्तियाँ = $100 + 110 - 80 - 95 = \text{रु. } 35 \text{ करोड़ } \text{रु.}$	
3.	प्राथमिक घाटा = राजकोषीय घाटा – ब्याज भुगतान = $35 - 10 = \text{रु. } 25 \text{ करोड़}$	

भुगतान शेष

स्मरणीय बिन्दु

- भुगतान शेष एक वर्ष की अवधि में किसी देश के सामान्य निवासियों और शेष विश्व के बीच समस्त आर्थिक लेन-देनों का एक विस्तृत एवं व्यवस्थित विवरण होता है। इसे विदेशी विनियय के वार्षिक अन्तः प्रवाह तथा बाह्य प्रवाह का लेखा भी कहा जाता है।



चालू खाते की मदें

1. दृश्य मदें (वस्तुओं का आयात-निर्यात)
2. अदृश्य मदें (सेवाओं का व्यापार)
3. एक पक्षीय अन्तरण

पूँजीगत खाते की मद

1. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, पोर्टफोलियों निवेश
2. विदेशी ऋण
3. विदेशी मुद्रा कोष में परिवर्तन

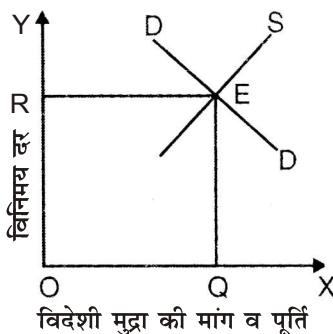
पूँजीगत खाते की मदें सम्पत्ति व दायित्वों में परिवर्तन लाती हैं।

- व्यापार सन्तुलन किसी देश के सामान्य निवासियों ओर शेष विश्व के बीच दृश्य मदों (वस्तुओं) के आयात तथा निर्यात का अन्तर होता है।
- **स्वायत्त सौदों** से अभिप्राय उन आर्थिक लेन देनों से है जिन्हें लाभ के उद्देश्य से किया जाता है। इनका उद्देश्य भुगतान शेष खाते में सन्तुलन बनाए रखना नहीं होता। इन्हे रेखा के ऊपर की मदें कहा जाता है।
- **समायोजन मदें** वे आर्थिक सौदें हैं जिन्हें किसी देश की सरकार द्वारा भुगतान शेष को सन्तुलित बनाए रखने के लिए किया जाता है, इनका उद्देश्य भुगतान शेष खाते के असन्तुलन को दूर करना होता है, इन्हें रेखा के नीचे की मदें भी कहा जाता है।
- **भुगतान शेष में घाटा-** जब स्वायत्त प्राप्तियों का मूल्य, स्वायत्त भुगतान के मूल्य से कम हो जाता है तो भुगतान शेष में घाटा कहते हैं।
- **विनिमय दर** एक देश की करेन्सी का जिस दर पर दूसरे देश की करेन्सी से विनिमय किया जाता है उसे विदेशी विनिमय दर कहते हैं।
- **स्थिर विदेशी विनिमय दर-** वह विदेशी विनिमय दर जिसका निर्धारण या तो देश की सरकार या मौद्रिक अर्थात् बैंक (केन्द्रीय बैंक) करें उसे स्थिर विदेशी विनिमय दर कहते हैं।
- **लोचशील या नम्य विनिमय दर** का निर्धारण विदेशी विनिमय की मांग तथा पूर्ति की शक्तियों पर निर्भर करता है। विदेशी मुद्रा की मांग तथा नम्य विनिमय दर में विपरीत सम्बन्ध होता है। यदि विनिमय दर ऊँची है तो विदेशी मुद्रा की मांग कम होगी और विलोमशः इसके विपरीत विदेशी विनिमय दर व विदेशी मुद्रा की पूर्ति में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। यदि विदेशी विनिमय दर अधिक है, तो विदेशी मुद्रा की पूर्ति अधिक होगी।
- **विदेशी मुद्रा मांग के स्रोत**
 - (i) विदेशों में वस्तुओं व सेवाएँ खरीदने के लिए
 - (ii) विदेशों में वित्तीय परिसम्पत्तियां (जैसे बांड, शेयर) खरीदने के लिए
 - (iii) विदेशी मुद्राओं के मूल्यों पर सट्टेबाजी के लिए
 - (iv) विदेशों में प्रत्यक्ष निवेश (जैसे- दुकान, मकान, फैक्टरी खरीदना) के लिए

- विदेशी मुद्रा की पूर्ति के स्रोत
 - (i) विदेशियों द्वारा घरेलू बाजार में प्रत्यक्ष (वस्तुओं व सेवाओं की) खरीद
 - (ii) विदेशियों द्वारा प्रत्यक्ष निवेश
 - (iii) विदेशी पर्यटकों का हमारे देश में भ्रमण
 - (iv) विदेशों में रहने वाले अनिवासी भारतीय द्वारा भेजा गया धन या प्रेषणाएँ
(एक पक्षीय हस्तातंरण)
 - (v) वस्तुओं एवं सेवाओं का निर्यात
- नम्य विनिमय दर के गुण
 - (i) विदेशी मुद्राओं के भण्डार की आवश्यकता नहीं
 - (ii) संसाधनों का सर्वोत्तम आबंटन
 - (iii) भुगतान सन्तुलन खाते में स्वतः समायोजन
 - (iv) व्यापार और पूँजी के आवागमन में आने वाली रुकावटों को दूर करना
- नम्य विनिमय दर के दोष
 - (i) विदेशी विनिमय दर में अस्थिरता
 - (ii) सट्टेबाजी को बढ़ावा
- नम्य विनिमय दर का निर्धारण

नम्य विनिमय दर प्रणाली के अन्तर्गत, विदेशी विनिमय दर का निर्धारण बाजार शक्तियों द्वारा होता है। दूसरे शब्दों में सन्तुलन विनिमय दर का निर्धारण विदेशी मुद्रा की मांग तथा उसकी पूर्ति द्वारा होता है।

विदेशी विनिमय की मांग तथा विनिमय दर में विपरीत सम्बन्ध होता है। इसलिए विदेशी विनिमय की मांग वक्र ऋणात्मक ढाल की होती है। विदेशी विनिमय की पूर्ति तथा विनिमय दर में धनात्मक (प्रत्यक्ष) सम्बन्ध होता है। इसलिए विदेशी विनिमय की पूर्ति वक्र धनात्मक ढाल की होती है। दोनों वक्रों के अतः क्रिया द्वारा सन्तुलन विदेशी विनिमय दर का निर्धारण होता है।



- **सन्तुलन विनिमय दर** वह विदेशी विनिमय दर जिस पर विदेशी विनिमय की मांग और पूर्ति दोनों बराबर होते हैं उसे सन्तुलन विदेशी विनिमय दर कहते हैं। चित्र में OR सन्तुलन विनिमय दर है।
- **प्रबंधित तरणशीलता**: एक ऐसी प्रणाली है, जिसमें केन्द्रीय बैंक विदेशी विनिमय दर के निर्धारण को बाजार शक्तियों पर छोड़ देता है परन्तु समय-समय पर आवश्यकता के अनुसार दर को प्रभावित करने के लिए हस्तक्षेप भी करता है। जब विदेशी विनिमय की दर अत्यधिक निम्न हो केन्द्रीय बैंक विदेशी विनिमय का क्रय करना शुरू कर देता है और जब विदेशी विनिमय की दर अधिक हो तो विदेशी विनिमय का विक्रय शुरू कर देता है।
- **अवमूल्यन**: जब देश की सरकार अथवा केन्द्रीय बैंक घरेलू मुद्रा का बाह्य मूल्य घटाती है तो उसे अवमूल्यन कहते हैं। इससे आयात महंगी तथा निर्यात सस्ती हो जाती है।
- **मुद्रा का अधिमूल्यन**: जब सरकार अथवा केन्द्रीय बैंक घरेलू मुद्रा के बाह्य मूल्य को बढ़ाती है तो मुद्रा का अधिमूल्यन कहलाता है। यह स्थिर विनिमय दर में होता है।
- **मुद्रा का मूल्यहास**: जब नम्य विनिमय दर में मुद्रा की माँग तथा पूर्ति के फलस्वरूप घरेलू मुद्रा के मूल्य में विदेशी मुद्रा के मूल्य की अपेक्षा गिरावट आती है तो यह मुद्रा को मूल्यहास कहलाता है।
- **मुद्रा की मूल्यवृद्धि** : जब विनिमय दर में मुद्रा की माँग तथा पूर्ति के फलस्वरूप घरेलू मुद्रा के मूल्य में विदेशी मुद्रा की अपेक्षा बढ़ोतारी होती है तो यह मुद्रा की मूल्यवृद्धि कहलाती है।

1 अंक वाले प्रश्न बहुविकल्पीय प्रश्न

1. इसमें से कौन सी अदृश्य मद हैं?
(a) अनाजों का निर्यात (b) तेल का आयात
(c) सेवाओं का निर्यात (d) स्टील का आयात।
2. निम्न में से कौन कर्ज व दावों को बताता है?
(a) पूँजी खाते का भुगतान सन्तुलन
(b) व्यापार खाते का सन्तुलन
(c) चालू खाते का सन्तुलन
(d) सेवाओं का सन्तुलन
3. पूँजी खाते हैं-
(a) निजी पूँजी (b) बैंकिंग पूँजी
(c) सरकारी पूँजी (d) उपरोक्त सभी
4. चालू खाते का भुगतान सन्तुलन निम्न में किस आर्थिक सौदे का व्यौरा है?
(a) वस्तुओं का आदान प्रदान (b) सेवाओं का आदान-प्रदान
(c) एक पक्षीय हस्तान्तरण (d) उपरोक्त सभी
5. मूल्यहास में-
(a) घरेलू मुद्रा के मूल्य में कमी होती है।
(b) घरेलू मुद्रा के मूल्य पर कोई प्रभाव नहीं
(c) घरेलू मुद्रा के मूल्य में वृद्धि
(d) वस्तुओं के उत्पादन में कमी।
6. मूल्यहास की स्थिति में निर्यात पर क्या प्रभाव पड़ेगा-
(a) बढ़ जाएगा (b) घट जाएगा
(c) स्थिर रहेगा (d) कोई नहीं

7. सरकार द्वारा घरेलू मुद्रा के मूल्य में वृद्धि कहलाती है।
- | | |
|---------------|-----------------|
| (a) मूल्यहास | (b) अवमूल्यन |
| (c) अधिमूल्यन | (d) मूल्यवृद्धि |

उत्तर

- 1. (c); 2. (a); 3. (d); 4. (d); 5. (a); 6. (a); 7. (c)**

3-4 अंक वाले प्रश्न

1. व्यापार शेष तथा भुगतान शेष में अन्तर लिखिए।
2. भुगतान शेष के चालू एवं पूँजी खाते में अन्तर बताइए।
3. भुगतान शेष खाते में स्वप्रेरित तथा समायोजन मदों में क्या अन्तर है?
4. विदेशी विनिमय की पूर्ति की मांग के तीन कारण दें।
5. विदेशी विनिमय की पूर्ति के प्रमुख स्रोत लिखिए।
6. विदेशी विनिमय दर तथा इसकी मांग में सम्बन्ध की व्याख्या कीजिए।
7. विदेशी विनिमय दर तथा इसकी पूर्ति के सम्बन्ध की व्याख्या कीजिए।
8. विदेशी विनिमय दर में वृद्धि होने पर विदेशी मुद्रा की मांग में कमी क्यों होती है?
9. विदेशी विनिमय दर में वृद्धि होने पर विदेश मुद्रा की पूर्ति क्यों बढ़ती है?
10. विनिमय दर में कमी विदेशी विनिमय की मांग में क्यों वृद्धि करती है?
11. नम्य विनिमय दर के गुण तथा दोष लिखिए।
12. स्थिर विनिमय दर के गुण तथा दोष लिखिए।
13. अवमूल्यन तथ मूल्यहास में अंतर स्पष्ट कीजिए।
14. घरेलू मुद्रा के अवमूल्यन का अर्थव्यवस्था के आयात तथा निर्यात पर क्या प्रभाव पड़ता है?
15. नम्य विनिमय दर, का मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था में कैसे निर्धारण किया जाता है?

16. स्थिर विनिमय दर, नम्य विनिमय दर तथा प्रबंधित तरणशीलता विनिमय दर का अर्थ समझाइए।
17. घरेलू मुद्रा के अधिमूल्यन का देश के निर्यात पर क्या प्रभाव पड़ता है?

6 अंक वाले प्रश्न

1. भुगतान संतुलन में स्वायत्त संव्यवहार और समायोजित संव्यवहार के बीच अन्तर समझाइए। इस सन्दर्भ में भुगतान संतुलन में 'घाटा' की अवधारणा भी समझाइए।
2. निम्न सौदों को भारत के भुगतान शेष के चालू खाते में शामिल करेंगे अथवा पूँजीगत खाते में, वर्गीकृत करते हुए कारण भी दीजिए।
 - (a) विदेशी निवासी द्वारा TISCO कंपनी के शेयरों को खरीद
 - (b) भारतीय स्कर्ट की जर्मनी में बिक्री
 - (c) इफोसिस कंपनी द्वारा अमेरिकी बैंक से लिया गया ऋण।
 - (d) एक भारतीय द्वारा कनाडा में रहने वाले अपने मित्र को भेजी गई मुद्रा
 - (e) इंग्लैंड में खरीदी गई भूमि।
 - (f) अमेरिका में रहने वाले संबंधी द्वारा भेजा गया तोहफा

उत्तर

- | | |
|------------------|---------------|
| (a) पूँजीगत खाता | (b) चालू खाता |
| (c) पूँजीगत खाता | (d) चालू खाता |
| (e) पूँजीगत खाता | (f) चालू खाता |
3. अभी हाल ही में भारत ने भूकंप से प्रभावित नेपाल को वित्तीय सहायता प्रदान की। इसका भारत के भुगतान शेष खाते पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
 4. पिछले छः सात महीने से भारतीय मुद्रा में अमेरिकन डॉलर के मुकाबले मूल्यवृद्धि हुई है भारत सरकार के आयात तथा राजकोषीय घाटे पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा?
 5. पिछले कुछ महीनों से अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में काफी गिरावट आयी है इसका भारत के चालू खाते के घाटे पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

परीक्षाप्रयोगी प्रश्न (1 अंक वाले प्रश्न)

- प्र. 1.** विदेशी विनिमय किसे कहते हैं?
- उ. घरेलू मुद्रा के अतिरिक्त कोई भी विदेशी मुद्रा विदेशी विनिमय कहलाती है।
- प्र. 2.** विदेशी विनिमय दर को परिभाषित कीजिए।
- उ. विदेशी विनिमय दर वह दर है जिस पर एक देश की मुद्रा, दूसरे देश की मुद्रा में परिवर्तित हो जाती है।
- उदाहरण- $1\$ = ₹ 62$
- इसका अर्थ है कि IUS\$ को लेने के लिए हमें ₹ 62 देने पड़ेगें।
- प्र. 3.** विदेशी विनिमय की माँग के तीन स्रोत लिखिए।
- उ. विदेशी विनिमय की माँग के तीन स्रोत निम्न हैं।
1. आयात हेतु
 2. अन्तर्राष्ट्रीय ऋणों का भुगतान
 3. विदेशों में निवेश
- प्र. 4.** विदेशी विनिमय की पूर्ति के तीन स्रोत बताइए।
- उ.
1. नियात
 2. शेष विश्व से निवेश
 3. शेष विश्व से ऋण
- प्र. 5.** भुगतान शेष किसे कहते हैं?
- उ. एक देश का भुगतान शेष उस देश के निवासियों तथा शेष विश्व के निवासियों के बीच किए गए सभी अर्थीक सौदों का क्रमबद्ध लेखा है जो एक समय अवधि में (एक वर्ष) में किया जाता है।

- प्र. 6.** व्यापार शेष में घाटे का क्या अर्थ है?
- उ. व्यापार शेष में घाटे का यह अर्थ है कि वस्तुओं का आयात वस्तुओं के निर्यात से अधिक है।
- प्र. 7.** स्थिर विनिमय दर क्या है?
- उ. जब विनिमय दर सरकार द्वारा निर्धारित की जाती है।
- प्र. 8.** भुगतान शेष में घाटे का क्या अर्थ है? समझाइए।
- उ. जब स्वायत्त विदेशी विनिमय का भुगतान स्वायत्त विदेशी विनिमय की प्राप्तियों से अधिक होता है तो इनके अंतर को ही भुगतान शेष घाटा कहते हैं।
- प्र. 9.** नम्य विनिमय दर को परिभाषित कीजिए।
- उ. नम्य विनिमय दर वह दर है जो विदेशी मुद्रा बाजार में माँग तथा पूर्ति शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है।
- प्र. 10.** प्रबंधित तरणशीलता किसे कहते हैं?
- उ. यह वह प्रणाली है जिसमें विनिमय दर अंतराष्ट्रीय मुद्रा बाजार में पूर्ति तथा मांग की शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है परंतु सरकार अथवा केन्द्रीय बैंक विनिमय दर को प्रबंधित करने के लिए इसमें हस्तक्षेप करती है जब आवश्यकता पड़ती है।

3-4 अंक वाले प्रश्न

- प्र. 1.** भुगतान शेष के चालू खाते की मदों के नाम लिखिए।
- उ.
1. वस्तु का निर्यात व आयात
 2. सेवाओं का निर्यात व आयात
 3. एक पक्षीय हस्तांतरण
- प्र. 2.** घरेलू मुद्रा के अवमूल्यन तथा मूल्यहास में भेद कीजिए।
- उ. जब सरकार द्वारा अपनी घरेलू मुद्रा का मूल्य विदेशी मुद्रा के रूप में जानबूझकर गिराया जाता है तो उसे घरेलू मुद्रा का अवमूल्यन कहते हैं। जबकि घरेलू मुद्रा का मूल्यहास तब होता है जब इसका मूल्य विदेशी विनिमय बाजार में मांग व पूर्ति में परिवर्तन के कारण, विदेशी मुद्रा की तुलना में गिर जाता है।

- प्र. 3.** जब विदेशी मुद्रा की कीमत अधिक होती है तो उसकी पूर्ति में भी वृद्धि होती है। समझाइए, ऐसा क्यों?
- उ. जब विदेशी मुद्रा की कीमत (देशीय मुद्रा में) बढ़ती है तो निर्यात सस्ता हो जाता है। अर्थात् विदेशियों को आयात के लिए कम मुद्रा देनी पड़ती है। फलस्वरूप वे अधिक मांग करते हैं अर्थात् देशी निर्यात बढ़ जाता है जिससे विदेशी मुद्रा की पूर्ति बढ़ जाती है।
- प्र. 4.** भुगतान संतुलन खाते की स्वायत्त मदें तथा समायोजक मदें में अन्तर स्पष्ट कीजिए तथा प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दीजिए।
- उ. स्वायत्त मदें वे आर्थिक सौदे हैं जिन्हे लाभ के उद्देश्य से किया जाता है। इनका उद्देश्य भुगतान शेष खाते में संतुलन बनाए रखना नहीं होता। इन्हें रेखा के ऊपर की मदें कहा जाता है।

उदाहरण-निर्यात

समायोजक मदें वे आर्थिक सौदे हैं जिन्हें किसी देश की सरकार द्वारा भुगतान शेष को संतुलित बनाए रखने के लिए किया जाता है, इसका उद्देश्य भुगतान शेष खाते के असंतुलन को दूर करना होता है, इन्हें रेखा के नीचे की मदें भी कहा जाता है।

उदाहरण: IMF से उधार

- प्र. 5.** भुगतान शेष के पूँजी खाते के घटकों के नाम लिखिए।
- उ.
- विदेशों से और विदेशों को ऋण
 - विदेशों द्वारा निवेश और विदेशों में निवेश
 - विदेशी विनियम कोष में परिवर्तन
- प्र. 6.** व्यापार शेष में क्या लेन-देन होता है? अनुकूल व्यापार शेष कब हाता है।
- उ. व्यापार शेष में केवल वस्तुओं का आयात व निर्यात शामिल होता है। जब वस्तुओं के निर्यात का मूल्य वस्तुओं के आयात के मूल्य से अधिक होता है तो उसे अनुकूल व्यापार शेष कहते हैं।

- प्र. 7.** भारतीय निवेशक विदेशों में उधार देते हैं। निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए।
- (a) भुगतान संतुलन लेखा के किस उपलेखा और किस पक्ष में यह उधार दर्ज होगा? कारण दीजिए।
- (b) इस उधार का बाजार विनियय दर पर प्रभाव समझाइए।
- उ.(a)** भारतीय निवेशक विदेशों में उधार देते हैं यह भुगतान संतुलन लेखा के पूँजीखाते के नाम (Debit) पक्ष में दर्ज किया जाएगा क्योंकि इससे विदेशी विनिमय परिसम्पत्तियों में वृद्धि होगी तथा विदेशी विनिमय का बाह्य प्रवाह होगा।
- (b) विदेशों में दिया गया उधार विदेशी विनिमय की मांग में वृद्धि करेगा जबकि विदेशी विनिमय की पूर्ति अप्रभावित रहेगी जिससे विदेशी विनिमय दर बढ़ जाएगी।

आदर्श प्रश्न-पत्र

अर्थशास्त्र

समय: 3 घंटे

अधिकतम अंक 100

निर्देश:

- (i) दोनों खंडों के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
 - (ii) प्रश्नों के अंक प्रत्येक प्रश्न के सामने दिए गए हैं।
 - (iii) प्रश्न सं. 1 से 4 तथा 13 से 16 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं, प्रत्येक एक अंक का है।
 - (iv) प्रश्न सं. 5 से 6 तथा 17 से 18 लघुउत्तरीय प्रश्न हैं। जिनके अंक 3 हैं। इनके उत्तर 60 शब्दों से अधिक न हों।
 - (v) प्रश्न सं. 7 से 9 तथा 19 से 21 भी लघुउत्तरीय प्रश्न हैं। जिनके अंक 4 हैं। इनके उत्तर 70 शब्दों से अधिक न हों।
 - (vi) प्रश्न सं. 10 से 12 तथा 22 से 24 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं जिनके अंक 6 हैं। इनके उत्तर 100 शब्दों से अधिक न हों।
 - (vii) उत्तर संक्षिप्त ओर विषयानुरूप हों तथा निर्धारित समय सीमा का पालन किया जाए।
-

खण्ड- (अ)

1. अर्थव्यवस्था को परिभाषित कीजिए।
2. जब सीमांत उपयोगिता शून्य होती है, तो कुल उपयोगिता
 - (अ) शून्य होती है
 - (ब) न्यूनतम होती है

- (स) अधिकतम होती है
- (द) नकारात्मक होती है
3. एक उपभोक्ता केवल दो वस्तुओं का उपयोग करता है। यदि दोनों में से एक वस्तु की कीमत गिरती है, तो अधिमान वक्र
- (अ) ऊपर की ओर खिसकता है
- (ब) नीचे की ओर खिसकता है
- (स) ऊपर और नीचे दोनों ओर खिसक सकता है
- (द) नहीं खिसकता है
4. माँग का नियम बताइए।
5. आर्थिक समस्या क्यों उत्पन्न होती है? समझाइए।

अथवा

- उत्पादन संभावना वक्र मूल-बिन्दु की ओर नतोदर (अवतल) क्यों होता है? समझाइए।
6. सीमांत सम्प्राप्ति (आगम) और औसत सम्प्राप्ति (आगम) के बीच संबंध बताइए।
7. परिवर्ती अनुपातों के नियम में कुल उत्पाद के व्यवहार के विभिन्न चरणों को समझाइए।
8. पूर्ण प्रतियोगिता की “बाजार के बारे में पूर्ण ज्ञान” विशेषता की व्याख्या कीजिए।

अथवा

- एक अल्पाधिकार बाजार में फर्मों को परस्पर निर्भर क्यों कहा जाता है? समझाइए।
9. एक वस्तु की कीमत रु 20 प्रति इकाई से घटकर रु 15 प्रति इकाई हो जाती है। इसकी माँग 600 से बढ़कर 750 इकाई हो जाती है। इसकी माँग की कीमत लोच का परिकलन कीजिए।
10. अनधिमान वक्र विश्लेषण में उपभोक्ता सतुंलन की शर्तें समझाइए।
11. निम्नलिखित तालिका को पूरा कीजिए :

उत्पादन	औसत	सीमांत	औसतपरिवर्ती	औसत
1	60	20	—	—
2	—	—	19	—
3	20	—	18	—
4	—	18	—	—
5	12	—	—	31

अथवा

निम्नलिखित कथन गलत है या सही अपने उत्तर के लिए कारण दीजिएः

- (अ) कारक के हासमान प्रतिफल के अन्तर्गत सीमांत उत्पाद और कुल उत्पाद दोनों ही घटती दर से बढ़ती हैं।
- (ब) जब सीमांत लागत बढ़ती है तो औसत लागत भी बढ़ती है।
- (स) सीमांत सम्प्राप्ति (आगम) कभी ऋणात्मक नहीं हो सकती।
12. उच्चतम कीमत सीमा और न्यूनतम कीमत सीमा के अर्थ और निहितार्थ समझाइए।

खण्ड- (ब)

13. मुद्रा पूर्ति को परिभाषित कीजिए।
- 14- पुनर्खरीद (रेपो दर) वह दर है जिस पर
- (अ) वाणिज्यिक बैंक केन्द्रीय बैंक से सरकारी प्रतिभूतिया खरीदते हैं।
- (ब) वाणिज्यिक बैंक केन्द्रीय बैंक से ऋण ले सकते हैं।
- (स) वाणिज्यिक बैंक अपनी जमाएँ केन्द्रीय बैंक के पास रख सकते हैं।
- (द) वाणिज्यिक बैंकों द्वारा अल्पावधि के लिए ऋण दिए जाते हैं।
15. जब समग्र माँग समग्र पूर्ति से अधिक होती है, तो स्टॉक
- (अ) घटते हैं
- (ब) बढ़ते हैं
- (स) परिवर्तित नहीं होते हैं
- (द) पहले घटते हैं, फिर बढ़ते हैं

16. अल्प-रोजगार संतुलन का अर्थ बताइए।
17. भुगतान संतुलन लेखा के चालू खाता और पूँजीगत खाता के मध्य भेद कीजिए।

अथवा

भुगतान संतुलन लेखा के स्वतंत्र (स्वायत्त) सौदों और समायोजन हेतु सौदों के बीच भेद कीजिए।

18. स्थिर (नियत) विनिमय दर और लचीली (नम्य) विनिमय दर से क्या अभिप्राय है?
19. वास्तविक सकल देशीय उत्पाद से क्या अभिप्राय है? सकल देशीय उत्पाद की एक आर्थिक कल्याण के सूचक के रूप में तीन सीमाएं बताइए।

अथवा

आय के चक्रीय प्रवाह की व्याख्या कीजिए।

20. केन्द्रीय बैंक का “जारीकर्ता बैंक” कार्य समझाइए। 4
21. एक अर्थव्यवस्था संतुलन में है। निम्नलिखित से निवेश व्यय का परिकलन कीजिए: 4

राष्ट्रीय आय = 800

सीमांत बचत प्रवृत्ति = 0.3

स्वायत उपभोग = 100

22. अभावी माँग से क्या अभिप्राय है? इसको दूर करने में ‘बैंक दर’ की भूमिका समझाइए।

अथवा

‘अति माँग’ (अधिमाँग) से क्या अभिप्राय है? इसको दूर करने में ‘प्रति पुनर्खरीद दर’ (रिवर्स-रीपोर्डर) की भूमिका समझाइए।

23. आय असमानताएँ कम करने में सरकार बजटीय नीति का कैसे प्रयोग कर सकती है? 6

24. निम्नलिखित आँकड़ों से (अ) साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद तथा (ब) विदेशों को कारक आय ज्ञात करो—

6

(करोड़ Rs.)

(i)	कर्मचारियों का पारिश्रमिक	800
(ii)	लाभ	200
(iii)	लाभांश	50
(iv)	बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद	1400
(v)	किराया	150
(vi)	ब्याज	100
(vii)	सकल घरेलू स्थिर पूँजी निर्माण	200
(viii)	निवल पूँजी निर्माण	200
(ix)	स्टॉक में परिवर्तन	50
(x)	विदेशों से कारक आय	60
(xi)	निवल अप्रत्यक्ष कर	120

अंक योजना ‘अ’

1. अर्थव्यवस्था वह प्रणाली है जो लोगों को आजीविका अर्जित करने के साधन और जीविका प्रदान करती है।
2. (c)
3. (d)
4. अन्य बातें समान रहने पर वस्तु की कीमत तथा माँगी गई मात्रा के बीच विपरीत संबंध पाया जाता है।
5. आर्थिक समस्या असीमित आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु वैकल्पिक उपयोग वाले सीमित संसाधनों के उपयोग के चयन की समस्या है।

अथवा

उत्पादन संभावना वक्र के नतोदर होने का अर्थ है कि जैसे-जैसे हम वक्र पर नीचे की ओर आते हैं, सीमांत रूपांतरण दर बढ़ती जाती है।

सीमांत रूपांतरण दर इस मान्यता के आधार पर बढ़ती है कि कोई भी संसाधन सभी वस्तुओं के उत्पादन में समान रूप से सक्षम नहीं होता। जैसे-जैसे संसाधनों का एक वस्तु के उत्पादन से अन्य वस्तु के उत्पादन में हस्तान्तरण किया जाता है तो कम क्षमता वाले संसाधनों का प्रयोग करना पड़ता है। इससे लागत बढ़ती है और सीमांत रूपान्तरण दर बढ़ती जाती है।

6. जब $MR < AR$, AR घटता है।

जब $MR = AR$, AR स्थिर होता है।

जब $MR > AR$, AR बढ़ता है।

7. प्रथम चरण : TP बढ़ती दर से बढ़ता है।

द्वितीय चरण : TP घटती दर से बढ़ता है।

तृतीय चरण : TP घटने लगता है।

8. पूर्ण प्रतियोगी बाजार में, सभी क्रेताओं और विक्रेताओं को बाजार कीमत की पूर्ण जानकारी होती है। अतः कोई भी फर्म बाजार कीमत से अधिक कीमत नहीं ले सकती और कोई भी क्रेता बाजार कीमत से अधिक कीमत नहीं देगा। अतः बाजार में एक ही कीमत रहेगी।

अथवा

फर्मों की परस्पर निर्भरता का कारण यह है कि कोई भी फर्म कीमत और उत्पादन के बारे में कोई निर्णय विरोधी फर्मों की प्रतिक्रिया को ध्यान में रखकर ही लेती है।

$$9. Ed = \frac{\Delta Q}{OP} \times \frac{P}{Q}$$

$$= \frac{150}{-5} \times \frac{20}{600}$$

$$Ed = -1$$

10. उपभोक्ता के सन्तुलन की दो शर्तें हैं—

(1) सीमान्त प्रतिस्थापन दर = कीमतों का अनुपात ($MRS = Px/Py$)

(2) सीमान्त प्रतिस्थापन दर निरन्तर घटती है।

व्याख्या :

(i) मान लीजिए दो वस्तुएँ x तथा y हैं। कि उपभोक्ता के पहली शर्त है कि

$$MRS = \frac{Px}{Py}.$$

यदि $MRS > Px/Py$ है तो इसका अर्थ है कि उपभोक्ता x वस्तु की बाजार में जो कीमत है उसमें अधिक देने को तैयार हैं अतः वह x की अधिक मात्रा खरीदेगा। इससे MRS घटेगी और ऐसा तब तक होता रहेगा जब तक कि $MRS = Px/Py$.

यदि $MRS < \frac{Px}{Py}$ है तो इसका अर्थ है कि उपभोक्ता X वस्तु की बाजार में जो कीमत है उसमें अधिक देने को तैयार हैं अतः वह X की अधिक मात्रा खरीदेगा। इससे MRS बढ़ेगी और ऐसा तब तक होता रहेगा जब तक कि

$$MRS = \frac{Px}{Py}.$$

(2) सीमान्त प्रतिस्थापन दर निरन्तर घटेगी जब तक कि सन्तुलन की स्थिति स्थापित नहीं हो जाती।

11. AFC : 60, 30, 20, 15, 12

MC : 20, 18, 16, 18, 23

AVC: 20, 19, 18, 18, 19

AC : 80, 49, 38, 33, 31

अथवा

(a) गलत, क्योंकि जब MP घटता है तो TP घटती दर से बढ़ता है।

(b) गलत, AC केवल जब बढ़ता है जब $MC > AC$

(c) गलत, जब कोई फर्म अपना उत्पाद कीमत कम करके ही बेचती है तब यह संभव है कि सीमांत सम्प्राप्ति (MR) ऋणात्मक हो।

12. जब सरकार किसी वस्तु की अधिकतम कीमत, संतुलित कीमत से कम पर निर्धारित करती है, तो उसे उच्चतम निर्धारित कीमत कहते हैं।

निहितार्थ : इसके फलस्वरूप बाजार में माँग अधिक्षय की स्थिति उत्पन्न होती है तथा इससे बाजार में कालाबाजारी शुरू हो जाती है।

- 12 जब सरकार किसी वस्तु की न्यूनतम कीमत, संतुलन कीमत से अधिक निर्धारित करती है तो इसे न्यूनतय कीमत सीमा कहते हैं।

निहितार्थ : इसके फलस्वरूप बाजार में पूर्ति अधिक्य की स्थिति उत्पन्न होती है तथा इससे कुछ उत्पादक न्यूनतम कीमत से कम कीमत पर भी अपने उत्पाद को बेचने में विवश हो जाते हैं।

खण्ड 'ब'

13. मुद्रा पूर्ति से अभिप्राय एक निश्चित समय बिंदु पर देश में जनता के पास कुल मुद्रा के स्टॉक से है।
14. (b)
15. (a)
16. जब समग्र माँग समग्र पूर्ति से, पूर्ण रोजगार से कम रोजगार स्तर पर बराबर होती है तो यह अल्प रोजगार संतुलन कहलाता है।
17. भुगतान शेष के चालू खाते में वस्तुओं तथा सेवाओं के आयात-निर्यात तथा एक पक्षीय हस्तांतरणों का व्योरा होता है।
पूँजी खाते में वे सभी अतर्राष्ट्रीय लेन-देन दर्ज किए जाते हैं जो किसी देश की सरकार और निवासियों की परिसंपत्तियों और दायित्वों में परिवर्तन लाते हैं।

अथवा

‘स्वायत्त’ मदों या सौदों से अभिप्राय उन अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक लेन-देनों से है जो लाभ-कमाने के लिए किए जाते हैं तथा देश की भुगतान शोच की स्थिति से स्वतंत्र होते हैं।

‘समायोजक’ मदों या सौदों से अभिप्राय उन लेन-देनों से है जो सरकार द्वारा भुगतान शेष को संतुलित बनाए रखने के लिए किए जाते हैं।

18. स्थिर विनिमय दर वह दर है जिसका निर्धारण देश की सरकार द्वारा किया जाता है तथा यह बाजार शक्तियों माँग तथा पूर्ति से प्रभावित नहीं होती।

नम्य (लचीली) विनिमय दर वह दर है जिसका निर्धारण विदेशी विनिमय बाजार में विदेशी मुद्रा की माँग तथा पूर्ति द्वारा होता है। यह माँग तथा पूर्ति से प्रभावित होती है।

19. जब (GDP) सकल घरेलू उत्पाद का मूल्यांकन आधार वर्ष अथवा स्थिर कीमतों पर किया जाता है तो उसे वास्तविक सकल देशीय (घरेलू) उत्पाद कहा जाता है।

सीमाएँ :

- (1) यह देश में आय के वितरण को प्रकट नहीं करता।
- (2) इसमें आर्थिक कल्याण को बढ़ाने वाले कई गैर-मौद्रिक सौदों को शामिल नहीं किया जाता।
- (3) इसमें बाह्य प्रभावों को शामिल नहीं किया जाता।

अथवा

आय के चक्रीय प्रवाह: अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के बीच वस्तुओं एवं सेवाओं एवं साधन सेवाओं तथा मौद्रिक आय के सतत् प्रवाह को आय का चक्रीय प्रवाह कहते हैं। इसकी प्रकृति चक्रीय होती है। क्योंकि न तो इसका कोई आरम्भिक बिन्दु है और न ही कोई अन्तिम बिन्दु। वास्तविक प्रवाह उत्पादित सेवाओं तथ वस्तुओं और साधन सेवाओं का प्रवाह दर्शाता है। मौद्रिक प्रवाह उपभोग व्यय और साधन भुगतान के प्रवाह को दर्शाता है।

20. केन्द्रीय बैंक देश में करेंसी जारी करने का एकाधिकार रखता है तथा देश में करेंसी जारी करता है इससे देश में वित्तीय कुशलता बढ़ती है इससे मुद्रा में एकरूपता आती है तथा केन्द्रीय बैंक इस कार्य द्वारा देश में मुद्रा आपूर्ति को नियन्त्रित कर पाता है।

$$\begin{aligned} 21. \quad y &= \bar{C} + MPC(y) + 1 \\ 800 &= 100 + (1 - 0.3) 800 + 1 \\ 1 &= 800 - 100 - 560 \\ 1 &= 140 \end{aligned}$$

22. जब समग्र माँग, पूर्ण रोजगार स्तर के अनुरूप समग्र पूर्ति से कम होती है तो उसे अभावी माँग कहते हैं। इससे कीमत स्तर में कमी आती है। 'बैंक दर' वह दर है, जिस पर केन्द्रीय बैंक वाणिज्यिक बैंकों को दीर्घकाल के लिए ऋण देता है।

केन्द्रीय बैंक बैंक दर में कमी करके अभावी माँग को दूर करता है क्योंकि जब केन्द्रीय बैंक, बैंक दर को कम करता है। तो वाणिज्यिक बैंक भी व्याज दरों में कटौती करते हैं, जिससे ऋण की लागत कम हो जाती है और लोग ज्यादा ऋण लेते हैं इस प्रकार से अभावों माँग को कम किया जाता है।

अथवा

अधिमाँग : जब समग्र माँग पूर्ण रोजगार स्तर के उत्पादन से अधिक होती है तो इसे अधिमाँग करते हैं इससे कीमत स्तर में वृद्धि होती है।

प्रति पुनर्खेरीद दर (रिवर्स रेपो दर) वह दर है, जिस पर वाणिज्यिक बैंक अपनी अतिरिक्त जमा केन्द्रीय बैंक के पास जमा करते हैं। अधिमाँग को दूर करने के लिए केन्द्रीय बैंक इस दर को बढ़ाता है, जिसके परिणामस्वरूप वाणिज्यिक बैंक अपनी अतिरिक्त जमा को केन्द्रीय बैंक में जमा करने के लिए प्रोत्साहित होगे तथा उनकी ऋण देने की शक्ति कम होती है, जिससे वाणिज्यिक बैंकों द्वारा जनता को ऋण का प्रवाह कम होता है तथा अधिमाँग की स्थिति को ठीक करने में मदद मिलती है।

23. अर्थव्यवस्था में आय के पुनर्वितरण अथवा आय व धन की असमानताओं को कम करने हेतु बजटीय नीतियाँ एक उपयोगी माध्यम हैं। इसके लिए सरकार अपनी कर नीति तथा सार्वजनिक व्यय जैसे उपकरणों में अपेक्षित परिवर्तन करती है अमीरों पर अधिक कर का भार डालकर सरकार उनकी आय व सम्पत्ति को कम कर सकती है तथा गरीबों के कल्याण पर किए जाने वाले सार्वजनिक व्यय में वृद्धि करके सरकार गरीबों के रहन-सहन के स्तर व क्रय शक्ति को बढ़ा सकती है जिससे आय व धन की असमानताओं में कमी आएगी।
24. (अ) साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद

$$GDP_{FC} = (i) + (ii) + (v) + (vi) + [(vii + ix) - viii]$$

$$= 800 + 200 + 150 + 100 + [(200 + 50) - 200]$$

$$GDP_{FC} = 1300 \text{ करोड़ रु.}$$

(ब) विदेशों को कारक आय

$$GNP_{MP} = GDP_{FC} + \text{निवल अप्रत्यक्ष कर} + \text{विदेशों से निवल कारक आय}$$

$$1400 = 1300 + 120 + \text{विदेशों से कारक आय} - \text{विदेशों को कारक आय}$$

$$1400 = 1300 + 120 + 60 - \text{विदेशों को कारक आय}$$

$$1400 - 1480 = -\text{विदेशों को कारक आय}$$

$$RS. 80 \text{ करोड़} = \text{विदेशों को कारक आय}$$

मॉडल प्रश्न पत्र – 1

समय–3 घंटे

M.M - 80

प्र. 1.	अर्थव्यवस्था की परिभाषा दीजिए।	1
प्र. 2.	मान लीजिए कि एक वस्तु की अधिकाधिक इकाइयाँ बेचने पर कुल सम्प्राप्ति (आगम) स्थिर दर से बढ़ती है। ऐसी स्थिति में सीमांत सम्प्राप्ति (सही विकल्प चुनिए)	
	(अ) औसत सम्प्राप्ति से अधिक होगी	
	(ब) औसत सम्प्राप्ति के समान होगी	
	(स) औसत सम्प्राप्ति से कम होगी	
	(द) बढ़ रही होगी	1
प्र. 3.	पूर्ति मात्रा में परिवर्तन का अर्थ बताइए।	1
प्र. 4.	औसत संप्राप्ति और कीमत सदा बराबर होते हैं: (सही विकल्प चुनिए)	
	(अ) केवल पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत	
	(ब) केवल एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता के अन्तर्गत	
	(स) केवल एकाधिकार के अन्तर्गत	
	(द) सभी प्रकार के बाजार में	1
प्र. 5.	“कैसे उत्पादन करे” की समस्या समझाइए।	3
प्र. 6.	दो वस्तुओं X और Y की कीमत लोच क्रमशः -2 और -3 है इनमें से किसकी कीमत माँग लोच अधिक है और क्यों?	3
प्र. 7.	समझाइए कि किसी वस्तु की माँग उसकी संबंधित वस्तुओं को कीमतों से कैसे प्रभावित होती है। उदाहरण दीजिए	4
प्र. 8.	पूर्ति की लोच को प्रभावित करने वाले तत्व समझाइए	4
प्र. 9.	“अल्पाधिकार में फर्म अतंनिर्भर होती है” इस कथन को समझाए।	4
प्र. 10.	एक वस्तु का बाजार संतुलन में है उस वस्तु की माँग में वृद्धि हो जाती है। इस परिवर्तन के कारण होने वाले प्रभावों की श्रृखला की व्याख्या कीजिए। अनुसूची का प्रयोग करें।	6

प्र. 11.	एक पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में निम्नलिखित के परिणाम समझाइएः	
	(अ) पूर्ण ज्ञान	
	(ब) फर्मों का प्रवेश और निकासी की स्वतंत्रता	6
प्र. 12.	निम्नलिखित तालिका को पूरा करें –	
	उत्पादन सीमान्त औसत कुल लागत औसत	
	इकाइय लागतrs. परिवर्ती लागत स्थिर लागत	
1	60 – 120 –	
2	– – 174 –	
3	– 54 – –	–
4	54 – – 15	
5	– 57 345 –	
प्र. 13.	राजकोषीय घटा इसके समान होता हैः (सही विकल्प चुनिए)	
	(अ) ब्याज भुगतान	
	(ब) ऋण	
	(स) ब्याज भुगतान घटा ऋण	
	(द) ऋण घटा ब्याज भुगतान	1
प्र. 14.	राजस्व व्यय से क्या अभिप्राय है?	1
प्र. 15.	भुगतान संतुलन घाटा: (सही विकल्प चुनिए)	
	(अ) चालू लेखा भुगतान का चालू लेखा प्राप्ति पर अधिक्य	
	(ब) पूँजी लेखा भुगतान का पूँजी लेखा प्राप्ति पर आधिक्य	
	(स) स्वतंत्र भुगतान का स्वतंत्र प्राप्ति पर आधिक्य	
	(द) समायोजन हेतु भुगतान का समायोजन हेतु प्राप्ति पर आधिक्य	1
प्र. 16.	प्रबंधित तिरती विनिमय दर का अर्थ बताइए।	1
प्र. 17.	निम्नलिखित से उपभोग व्यय ज्ञात कीजिएः	
	स्वायत्त उपभोग = 100 RS.	
	सीमांत उपभोग प्रवृत्ति = 0.70	
	राष्ट्रीय आय= 2000(₹)	3
	अथवा	
	उपभोग फलन समीकरण और बचत फलन समीकरण के बीच अंतर बताइए।	
		3
प्र. 18.	अधिमाँग को कम करने में कराधान की भूमिका समझाइए	3

प्र. 19. निम्नलिखित आँकड़ो से बिन्द्री का परिकलन कीजिए

(रु (लाखों में)

(i) कारक लागत पर निवल मूल्य वृद्धि	560
(ii) मूल्यहास	60
(iii) स्टॉक में परिवर्तन	-(30)
(iv) मध्यवर्ती लागत	1000
(v) निर्यात	200
(vi) अप्रत्यक्ष कर	60

अथवा

स्टॉक और प्रवाह में अन्तर स्पष्ट कीजिए 4

प्र. 20. समझाइए किस प्रकार सरकारी बजट आय वितरण को प्रभावित कर सकता है। 4

प्र. 21. विदेशों को मशीन बेचना भुगतान संतुलन खाते में कहाँ दर्ज किया जाएगा?
कारण बताइए 4

प्र. 22. उपभोग वक्र से बचत वक्र प्राप्त कीजिए और इस प्रक्रिया में लिए जाने वाले चरण बताइए। रेखाचित्र का प्रयोग करें

प्र. 23. व्यावसायिक बैंक साख निर्माण कैसे करते हैं? 6

प्र. 24. निम्नलिखित आँकड़ों से (i) आय विधि और (ii) व्यय विधि द्वारा कारक लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद का परिकलन कीजिए।

(रु. करोड़ों में)

(i) निवल देशीय पूँजी निर्माण	500
(ii) कर्मचारियों का पारिश्रमिक	1850
(iii) स्थायी पूँजी का उपयोग	100
(iv) सरकारी अंतिम उपभोग व्यय	1100
(v) निजी अंतिम उपभोग व्यय	2600
(vi) किराया	400

(vii) लाभांश	200
(viii) व्याज	500
(ix) निवल निर्यात	(-) 100
(X) लाभ	1100
(xi) विदेशों से निवल कारक आय	- 50
(xii) निवल अप्रत्यक्ष कर	250

मॉडल प्रश्न पत्र - 2

अंक-80

समय-3 घंटे

खण्ड - अ

- प्र. 1. अवसर लागत को परिभाषित कीजिए। 1
- प्र. 2. जब AP अधिकतम होता है तो MP बराबर होता है: (सही विकल्प चुनिए)
- | | |
|--------|-----------|
| (a) AP | (c) शून्य |
| (b) TP | (d) इकाई |
- प्र. 3. दी गई वस्तु की कीमत में परिवर्तन से होगा: (सही विकल्प चुनिए)
- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| (a) पूर्ति का विस्तार | (c) या तो (a) या (c) |
| (b) पूर्ति में संकुचन | (d) न तो (a) न ही (b) |
- प्र. 4. सीमांत आगम को परिभाषित कीजिए। 1
- प्र. 5. कुल आगम और सीमांत आगम के बीच संबंध को समझाइए 3
- प्र. 6. उत्पादन संभावना वक्र को परिभाषित कीजिए। समझाइए कि यह बायें से दायें नीचे की ओर गिरता हुआ क्यों होता है। 3

अथवा

‘क्या उत्पादन करें’ की केन्द्रीय समस्या को समझाइए।

प्र. 7. घटती सीमांत उपयोगिता का नियम क्या है? एक संख्यात्मक उदाहरण दीजिए।

4

प्र. 8. निम्न तालिका को पूरा करें:

उत्पादन (इकाइयाँ)	AFC(₹)	AC(₹)	AVC(₹)	MC(₹)
1.	—	140	—	50
2.	—	—	45	40
3.	—	—	—	45
4.	22.5	70.5	48	—
5.	18	70	52	68 4

अथवा

पूर्ति में कमी व पूर्ति में सकुचन में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

प्र. 9. 'संगठनात्मक' और 'गैर संगठनात्मक' अल्पाधिकार में अन्तर कीजिए। 4

प्र. 10. अनधिमान वक्र विश्लेषण की सहायता से उपभोक्ता संतुलन की शर्तों को समझाइए। 6

प्र. 11. परिवर्ती अनुपातों के नियम को दोनों कुल उत्पाद और सीमांत उत्पाद के व्यवहार के द्वारा समझाइये। चित्र द्वारा स्पष्ट कीजिए

अथवा

जब कीमत एक समान रहती है तब उत्पादक के संतुलन के निर्धारण की MR और MC विधि की व्याख्या कीजिए।

(केवल दृष्टिहीन विद्यार्थियों के लिए प्रश्न न. 11 के स्थान पर)

पूर्ति की लोच को प्रभावित करने वाले तत्वों की व्याख्या कीजिए।

प्र. 12. अपने उपभोक्ताओं के लिए X एक सामान्य वस्तु है। उनकी आय बढ़ जाती है। संतुलन कीमत X की माँग और पूर्ति पर इसके श्रृंखला प्रभावों को समझाइये।

6

खण्ड 'ब'

- प्र. 13. यदि MPC का मूल्य 0.6 है तो निवेश गुणक का मान होगा: (सही विकल्प चुनिए)
- | | |
|----------|---------|
| (अ) 1.67 | (ब) 2.5 |
| (स) 6 | (द) 04 |
- 1
- प्र. 14 गैर कर राजस्व को परिभाषित कीजिए। 1
- प्र. 15 सरकारी कॉलेज की फीस एक राजस्व प्राप्ति है क्योंकि
- (अ) यह सरकार की देयतायें उत्पन्न करती है।
 - (ब) यह न तो देयताये उत्पन्न करती है न ही सरकार की परिसंपत्तियों में कमी करती है।
 - (स) यह न तो परिसंपत्तियों को उत्पन्न करती है न ही सरकार की देयताओं में कमी करती है।
 - (द) यह सरकार की परिसंपत्तियों में वृद्धि करती है। 1
- प्र. 16. स्वायत उपभोग का अर्थ बताइये। 1
- प्र. 17. भुगतान शेष खाते की स्वायत्त और समायोजक सौदों के बीच में अन्तर कर। 3
- प्र. 18. विदेशी विनिमय के माँग वक्र की ढलान नीचे की ओर क्यों होती है।

अथवा

- विदेशी विनिमय की पूर्ति के कोई तीन स्रोत बताएं। 3
- प्र. 19. निम्न आंकड़ों से 'साधन लागत पर सकल मूल्य वृद्धि' की गणना करें—
रु (करोड़)

(i) बिक्री	180
(ii) किराया	05
(iii) आर्थिक सहायता	10
(iv) स्टॉक में परिवर्तन	15
(v) कच्चे माल का क्रय	100
(vi) लाभ	25

प्र. 20. सरकारी बजट की कीमतों में स्थिरता के उद्देश्य की व्याख्या करें 4

प्र. 21. निम्न तालिका को पूरा करें:

आय	सीमांतउपभोग प्रवृत्ति	बचत	औसत बचत प्रवृत्ति
0	—	-110	
100	0.6	—	—
200	0.6	—	—
300	0.6	—	—
			4

अथवा

एक संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से निवेश गुणक की कार्य प्रणाली समझाइए।

प्र. 22. केन्द्रीय बैंक साथ नियंत्रक का कार्य कैसे करता है? 6

अथवा

मोदिक नीति के विभिन्न उपकरणों को संक्षेप में बताइए?

प्र. 23. एक रेखाचित्र की सहायता से स्फीतिक अंतराल की अवधारणा की व्याख्या कीजिए?

दृष्टिहीन विद्यार्थियों के लिए प्रश्न 23 के स्थान पर

उन दो राजकोषीय उपायों की व्याख्या कीजिए, जिनके द्वारा अर्थव्यवस्था में अधिमाँग को ठीक किया जा सकता है।

प्र. 24. बाह्य कारणों (बाहरी प्रभावों) से क्या अभिप्राय है? किसी धनात्मक बाहरी प्रभाव का उदाहरण दीजिए और इसका लोगों के कल्याण पर पड़ने वाला प्रभाव समझाइए?

अथवा

कारण बताते हुए समझाइए कि राष्ट्रीय आय का आकलन करते समय, निम्नलिखित के साथ क्या व्यवहार किया जाना चाहिए।

- (i) एक बैंक को एक फर्म द्वारा ब्याज भुगतान।
- (ii) एक व्यक्ति को एक बैंक द्वारा ब्याज भुगतान।
- (iii) एक बैंक को एक व्यक्ति द्वारा ब्याज भुगतान।

अर्थशास्त्र की बोर्ड परीक्षा में विद्यार्थियों द्वारा की गई कुछ मुख्य त्रुटियाँ

(Common errors committed by students in Board Exam)

1. छात्र वक्रों के ढाल को लेकर संशय में रहते हैं जैस PPC, तटस्थता वक्र, MC, MR, AC आदि।
2. MRT तथा MRS को एक दूसरे की जगह प्रयोग करते हैं।
3. आर्थिक समस्या तथा अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं के बीच अन्तर स्पष्ट नहीं होता है।
4. उपभोक्ता संतुलन की शर्तों (उपयोगिता विधि तथा तटस्थता वक्र विधि) को एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग करते हैं जिससे जवाब गलत हो जाता है।
5. तटस्थता वक्र को चित्र द्वारा बताते हैं तथा उसकी शर्तों को स्पष्ट नहीं करते हैं प्रश्न में चित्रबनाने के लिए नहीं कहा गया होता।
6. मांग में परिवर्तन तथा मांग की मात्रा में परिवर्तन के बीच अन्तर नहीं करते तथा इन्हें एक – दूसरे के स्थान पर प्रयोग करते रहते हैं। यही गलती पूर्ति के संबंध में सामान्यतः दिखाई देती है।
7. संबंधित वस्तुओं की कीमत में परिवर्तन का माँग पर प्रभाव एक हीबताते हैं, प्रतिस्थापन वस्तु तथा पूरक वस्तु में वर्गीकृत नहीं करते।
8. आय में परिवर्तन का माँग पर प्रभाव दिखाते समय सामान्य वस्तु व निम्न स्तरीय वस्तु में वर्गीकृत नहीं करते।
9. परिवर्ती अनुपात के नियम की अवधारणा को सीमान्त उत्पाद तथा कुल उत्पाद से नहीं जोड़पाते तथा दोनों के बीच संबंध बताने में गलती करते हैं।
10. MR तथा AR के बीच संबंध सामान्य स्थिति में बताने की बजाय विशेष स्थितियों का बता देते हैं। (i) समान कीमत पर तथा (ii) कीमत घटने पर।
11. उत्पादक संतुलन को $MC = MR$ विधि से स्पष्ट नहीं कर पाते हैं। i. यदि $MC > MR$ है तो ii. यदि $MC < MR$ है तो
12. संतुलन कीमत का निर्धारण करते समय माँग के स्थान पर पूर्ति में परिवर्तित कर देना या पूर्ति के स्थान पर माँग को। दाईं ओर खिसकाने में गलती करते हैं।

13. मध्यवर्ती वस्तु तथा अंतिम वस्तु में अन्तर स्पष्ट नहीं होता। फर्मों द्वारा प्रयोग में ली गई सेवाओं को GDP में शामिल कर लेते हैं, जबकि ये सभी सेवाएँ मध्यवर्ती उपभोग होती हैं।
14. GDP तथा राष्ट्रीय आय गणना में विभिन्न से क्या व्यवहार करना है? उसका कारण स्पष्ट नहीं कर पाते।
15. समग्र आय तथा समग्र पूर्ति के वक्र बनाने में गलती करते हैं तथा आय संतुलन को कीमत संतुलन द्वारा दिखाते हैं। समग्र माँग वक्र को माँग वक्र द्वारा दिखा देते हैं।
16. उपभोग फलन से बचत फलन ज्ञान करना तथा उपभोग रेखा से बचत रेखा ज्ञात करना।
17. मुद्रा का साख सृजन करने की प्रक्रिया को सही व्याख्या ना कर पाना।
18. लागत वक्रों को रेखाचित्र में सही ढंग से नहीं दर्शा पाते तथा लागतों के परस्पर अंतःसंबंध को स्पष्ट करने में गलतियां करते हैं।
19. संख्यात्मक प्रश्नों को हल करते समय अधिकाशं छात्र उनका सूत्र नहीं लिखते। जबकि मार्किंग स्कीम के अनुसार सभी प्रश्नों में सूत्र के अंक होते हैं।
20. उत्तर देते समय छात्रों को यह अभ्यास नहीं होता कि प्रश्न के अंक अनुसार उसका उत्तर कितने शब्दों में अथवा कितने पाईन्ट्स में लिखा जाए।
21. सामान्यतः कुछ होशियार छात्र अधिकांश प्रश्नों का उत्तर देते समय पूछे ना जाने पर भी रेखाचित्र बनाते हैं जिससे वह समय सीमा में प्रश्नपत्र हल नहीं कर पाते। जबकि यह पहचान करना अत्यन्त सरल है कि रेखाचित्र केवल उन्हीं प्रश्नों में बनाना है जिनके स्थान पर दृष्टिबाधित छात्रों के लिए कोई अन्य प्रश्न दिया गया है।